ABOUT THE AUTHOR

प्रतीक शिवालिक
शिक्षक प्रशिक्षण में 10 वर्ष का अनुभव
भूतपूर्व शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, पटियाला

"प्रतीक शिवालिक" दिल्ली के सबसे प्रसिद्ध शिक्षक प्रशिक्षक हैं। वह 2013 से शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। यहां तक कि दक्षिण भारत से भी छात्र उनसे पढ़ने आते हैं। वह अब तक हजारों शिक्षकों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। आप केंद्रीय विद्यालय शिक्षण परीक्षा और साक्षात्कार की तैयारी में इतने सफल हैं कि आपको भारत के प्रत्येक केंद्रीय विद्यालय में कम से कम एक शिक्षक मिल जाएगा जो कभी उनका छात्र था। उनके द्वारा बनाई गई टेस्ट सीरीज़ अपनी गुणवत्ता के लिए जानी जाती है और छात्रों द्वारा भारत में सर्वश्रेष्ठ रेटिंग प्राप्त की जाती है। उनके छात्रों ने केवीएस साक्षात्कार में 60/60 अंक (100% स्कोर) प्राप्त किए हैं। उनके छात्रों को DSSSB परीक्षा में पहली और दूसरी रैंक भी मिली है। उन्होंने स्वयं KVS में ऑल इंडिया रैंक 4, DSSSB में ऑल इंडिया रैंक 3 हासिल की है और 7 बार CTET टॉपर हैं। आप उन्हें Telegram और Youtube पर भी ढूंढ सकते हैं। उन्होंने पटियाला (पंजाब) के केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली सरकार के विद्यालय तथा दिल्ली सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य किया है।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2034

KVS
शिक्षा एवं नेतृत्व दृष्टिकोण
(सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक)
ISBN - 978-93-6890-482-3
9789368904823
₹ 449

KVS शिक्षा एवं नेतृत्व दृष्टिकोण (सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक)
CB2034
AGRAWAL EXAMCART

#1 NATIONAL BESTSELLER

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

KVS
(केंद्रीय विद्यालय संगठन)

KVS 2023 के 33 पेपर्स का समावेश

शिक्षा एवं नेतृत्व दृष्टिकोण
(Perspectives on Education & Leadership)

सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक

"विगत प्रश्नों पर आधारित ऐसे भी कई टॉपिकों का समावेश जो किसी और पुस्तक में उपलब्ध नहीं"

PRT | PRT (music) | TGTs | PGTs
Assistant Commissioner | Principals
Vice Principals के लिए उपयोगी

मुख्य विशेषताएँ

1. **सम्पूर्ण थ्योरी** — NCERT, NIOS एवं IGNOU की पाठ्यपुस्तकों एवं KVS के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित थ्योरी
2. **33 पेपर्स (1800 + प्रश्न)** — KVS 2023 के 33 पेपर्स के सभी प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

– प्रतीक शिवालिक

Code	Price	Pages	ISBN
CB2034	₹ 449	447	978-93-6890-482-3

विषय सूची

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** **xii**
(KVS परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

Unit-I : शिक्षार्थी को समझना (Understanding the Learner)

1. विकास की अवधारणा, आयाम, सिद्धान्त व प्रभावित करने वाले कारक (Concept Dimensions, Principles and Factors Affecting Development) **1-61**

- प्रस्तावना (Introduction)
- वृद्धि और विकास की अवधारणा (Concept of Growth and Development)
- वृद्धि और विकास में अन्तर (Difference Between Growth and Development)
- विकास और वृद्धि का महत्व (Importance of Growth and Development)
- परिपक्वता (Maturity)
- सीखना/अधिगम (Learning)
- परिपक्वता *बनाम* अधिगम (Maturity *vs.* Learning)
- परिपक्वता तथा अधिगम में भेद (Difference Between Maturation and Learning)
- परिपक्वता और अधिगम के बीच अन्तःक्रिया (The Interaction Between Maturity and Learning)
- बाल–विकास की अवस्थाएँ (Stages of Child Development)
- जन्म के पूर्व का समय (गर्भाधान से जन्म तक) [Prenatal Period (From Conception to Birth)]
- जन्म के पश्चात् का समय (Period after Birth)
- अवस्था विशेष के विकासात्मक कार्य (Developmental Tasks of Specific Stages)
- विकास के आयाम और विचलन (Domains of Development and Deviations)
- विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास (Physical Development in Different Stages)
- विभिन्न अवस्थाओं में मानसिक विकास (Mental Development in Different Stages)
- विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Infancy)
- विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक विकास (Social Development in Different Stages)
- विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास (Language Development in Different Stages)
- विभिन्न अवस्थाओं में सृजनात्मक विकास (Development of Creativity in Different Stages)
- विभिन्न अवस्थाओं में बौद्धिक विकास (Intellectual Development in Different Stages)
- किशोरावस्था के विकास का सिद्धांत (Principle of Development of Adolescence)
- वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Growth and Development)
- अधिगम और विकास का अर्थ (The Meaning of Learning and Development)
- वृद्धि व विकास की प्रकृति (Nature of Growth and Development)
- बाल–विकास के सिद्धांत (Principles of Child Development)
- वृद्धि तथा विकास के समन्वित सिद्धांत (Integrated Principles of Growth and Development)
- विकास में मुद्दे (बहस) (Issues/Debates in Development)
- बालक के विकास में पर्यावरण और आनुवंशिकता की भूमिका (Role of Environment and Heredity in the Development of a Child)
- वंशानुक्रम (Heredity)
- वातावरण (Environment)
- पियाजे, कोहलबर्ग, वायगोत्स्की : संरचना और आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Piaget, Kohlberg, Vygotsky's Construction and Critical Approach)
- जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत (Jean Piaget's Theory of Cognitive Development)
- पियाजे के संज्ञानात्मक विकास से संबंधित संज्ञानात्मक अवधारणाएँ (Cognitive Concepts Related to Piaget's Cognitive Development)
- जीन पियाजे का नैतिकता का सिद्धांत/नैतिक विकास पर पियाजे के विचार (Piaget's Views on Moral Development)
- लेव सिमनोविच वायगोत्स्की का सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत (Sociocultural Theory of Lev Semyonovich Vygotsky)
- कोहलबर्ग का सिद्धान्त (Kohlberg's Theory)

- वायगोत्स्की ***बनाम*** पियाजे (Vygotsky *vs.* Piaget)
- लॉरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत (Lawrence Kohlberg's Theory of Moral Development)
- ऐरिक्सन का व्यक्तित्व–विकास का मनो–सामाजिक सिद्धान्त (Erikson's Psycho-Social Theory of Personality Development)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–188)**

2. किशोरावस्था की समझ (Understanding of Adolescence) **62-83**

- किशोरावस्था की अवधारणा (Concept of Adolescence)
- किशोरावस्था की परिभाषाएँ (Definitions of Adolescence)
- किशोरावस्था : जीवन का सबसे कठिन काल (Adolescence : The Most Difficult Period of Life)
- किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएँ (Main Characteristics of Adolescence)
- किशोरावस्था की विशेषताएँ (Characteristics of Adolescence)
- किशोरावस्था एवं यौवनारम्भ में होने वाले परिवर्तन (Changes Occurring During Adolescence and Puberty)
- गौण लैंगिक लक्षण (Secondary Sexual Characteristics)
- जनन प्रकार्य प्रारम्भ करने में हॉर्मोन की भूमिका (Role of Hormones in Initiating Reproductive Function)
- मानव में जनन–काल की अवधि (Reproductive Period in Humans)
- संतति का लिंग–निर्धारण (Determination of Sex of Offspring)
- लिंग हॉर्मोन के अतिरिक्त अन्य हॉर्मोन (Hormones other than Sex Hormones)
- किशोरावस्था को प्रभावित करने वाल कारक (Factors Affecting Adolescence)
- किशोरावस्था के विकास पर परिवार, विद्यालय, सहपाठी, सामाजिक वातावरण और सामाजिक मीडिया का प्रभाव (Effect of Family, School, Peer Group, Social Climate and Social Media on Adolescence Development)
- किशोरों की आवश्यकतायें एवं आकांक्षायें (Needs and Aspirations of Adolescents)
- किशोरावस्था में चुनौतियाँ (Challenges in Adolescence)
- किशोरावस्था के दौरान अन्य चुनौतियाँ (Other Challenges During Adolescence)
- किशोरावस्था में अकेलापन का विकास (Development of Adolescent-Loneliness)
- किशोरों में व्यक्तित्व को लेकर संकट (Personality Crisis Among Adolescents)
- किशोरावस्था में सोशल मीडिया की भूमिका (Role of Social Media in Adolescence)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–68)**

3. समाजीकरण (Socialization) **84-91**

- समाजीकरण प्रक्रियाएँ : सामाजिक दुनिया और बच्चे (Socialization Processes : Social World and Children)
- समाजीकरणः अर्थ एवं परिभाषाएँ (Socialization : Meaning and Definitions)
- स्कूल की तैयारी (Preparing for School)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–47)**

Unit-II : शिक्षण–अधिगम को समझना (Understanding Teaching Learning)

4. अधिगम पर सैद्धांतिक दृष्टिकोण-व्यवहारवाद, संज्ञानवाद और रचनावाद (Theoretical Perspectives on Learning-Behaviourism, Cognitivism and Constructivism) **92-136**

- परिचय (Introduction)
- अधिगम सिद्धांतों को समझना (Understanding the Learning Principles)
- व्यवहारवाद (Behaviouralism)
- संज्ञानवाद (Cognitivism)
- रचनावाद (Constructivism)
- सीखने पर सैद्धांतिक दृष्टिकोणः व्यवहारवाद, संज्ञानवाद और रचनावाद (Theoretical Perspectives on Learning : Behaviourism, Cognitivism and Constructivism)
- व्यवहारवाद (Behaviourism)
- संज्ञानवाद (Cognitivism)
- रचनावाद (Constructivism)
- थॉर्नडाइक के अधिगम/सीखने सम्बन्धी नियम (Learning Laws of Thorndike)
- थॉर्नडाइक के सीखने के सिद्धांत का मूल्यांकन (Evaluation of Thorndike's Learning Theory)
- सीखने के नियमों का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of Laws of Learning)

- थॉर्नडाइक का प्रयास तथा भूल का सिद्धान्त (Trial and Error Theory of Thorndike)
- संबंध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त या पॉवलॉव का अनुकूलित अनुक्रिया अनुबंधन सिद्धान्त (Theory of Conditioned Response or Pavlov's Conditioned Response Conditioning Theory)
- बी. एफ. स्किनर का क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धांत (B.F . Skinner's Operant Conditioning Theory)
- कोहलर का सूझ या अंतर्दृष्टि का सिद्धांत या अधिगम का समग्र कृति का सिद्धांत (Kohler's Theory of Understanding or Total Work Theory of Learning)
- जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत (Jean Piaget's Theory of Cognitive Development)
- ब्रूनर के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त (Bruner's Theory of Cognitive Development)
- पियाजे और ब्रूनर के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत में समानताएँ एवं असमानताएँ (Bruner's Theory of Cognitive Development)
- हल का सबलीकरण/पुनर्बलन सिद्धान्त (Hull's Reinforcement Theory)
- टॉलमन का चिह्न सिद्धान्त (Tolman's Sign Theory)
- बण्डुरा का सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त (Bandura's Social Learning Theory)
- कार्ल रोजर्स का सूचना समूह सिद्धान्त (Karl Roger's Information Processing Theory)
- ऊसूबेल/आसुबेल का आधुनिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Ausubel's Modern Cognitive Theory)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–318)**

5. अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक और उनके निहितार्थ (Factors Affecting Learning and Their Implications) **137-152**

- प्रस्तावना (Introduction)
- अधिगम का अर्थ (Meaning of Learning)
- अधिगम की परिभाषा (Definition of Learning)
- अधिगम की प्रकृति (Nature of Learning)
- अधिगम/सीखने की विशेषताएँ (Characteristics of Learning)
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Learning)
- अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ (Effective Methods of Learning)
- सीखने की स्थिति का संगठन (Organization of Learning Process)
- अधिगम वक्र (Learning Curve)
- अधिगम पठार (Learning Plateaus)
- सीखने का अंतरण/अधिगम अंतरण/अधिगम स्थानान्तरण (Transfer of Learning)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–68)**

6. शिक्षण–अधिगम की योजना और संगठन (Planning and Organization of Teaching-Learning) **153-184**

- प्रस्तावना (Introduction)
- शिक्षण (Teaching)
- शिक्षण का व्यापक व संकुचित अर्थ (Wider Meaning and Narrower Meaning of Teaching)
- शिक्षण की परिभाषाएँ (Definitions of Teaching)
- शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching)
- उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ (Characteristics of Good Teaching)
- शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य (Main Objectives of Teaching)
- शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Teaching)
- शिक्षण के लक्ष्य (Objectives of Learning)
- शिक्षण तथा प्रशिक्षण में अन्तर (Distinction Between Teaching and Training)
- शिक्षण के स्तर (Levels of Teaching)
- शिक्षण के विभिन्न मूलभूत सिद्धान्त (Various Fundamental Principles of Teaching)
- शिक्षण के विभिन्न सूत्र (Various Maxims of Teaching)
- प्रमुख शिक्षण प्रविधियाँ (Main Teaching Techniques)
- शिक्षण के कुछ नवीन उपागम (Some New Approach of Education)
- बालकेन्द्रित शिक्षण उपागम (Child-Centred Approach Teaching)
- क्रिया/गतिविधि आधारित शिक्षण (Activity Based Teaching)
- रुचिपूर्ण/आनन्ददायी शिक्षण (Interested Based Teaching)
- अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)
- दक्षता आधारित शिक्षण (Competency Based Teaching)
- निदानात्मक शिक्षण (Diagnostic Teaching)
- उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)
- बहुस्तरीय (बहुक्षेत्रीय) शिक्षण विधि [Multilevel (Multi-Sector) Teaching Method]
- सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching)
- शिक्षण और अधिगम के बीच में संबंध (Relation between Teaching and Learning)
- शिक्षक–छात्र संबंध (Teacher-Student Relation)
- एक शिक्षार्थी की भूमिका (Role of a Student)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–18)**

7. निर्देशात्मक योजनाएँ: वर्ष योजना, इकाई योजना, पाठ योजना (Instructional Plans: Year Plan, Unit Plan, Lesson Plan) **185-190**

- प्रस्तावना (Introduction)
- निर्देशात्मक योजनाएँ (Instructional Plans)
- वार्षिक योजना (Annual Plan)
- इकाई योजना (Unit Plan)
- पाठ का नियोजन/योजना (Lesson Planning/Plan)
- रचनावादी पाठ योजना (5-E दृष्टिकोण) [Constructivist Lesson Planning (S-E Perspective)]

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–26)**

8. निर्देशात्मक सामग्री और संसाधन (Instructional Materials and Resources) **191-207**

- प्रस्तावना (Introduction)
- अध्यापन–अधिगम सामग्रियाँ/टीचिंग लर्निंग मटीरियल (Teaching Learning Material)
- शिक्षण सामग्री की भूमिका (Role of Teaching Material)
- शिक्षण–अधिगम सामग्री की परिभाषा (Definition of Teaching-Learning Materials)
- अध्ययन–अधिगम सामग्री को प्रयोग करने का प्रयोजन (Purpose of Using Teaching-Learning Materials)
- शिक्षण–अधिगम सामग्री के उद्देश्य (Objectives of Teaching-Learning Materials)
- शिक्षण सहायक सामग्री की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Teaching Aids)
- उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री की विशेषताएँ (Features of Good Teaching Learning Material)
- शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार (Types of Teaching Learning Materials)
- कुछ प्रमुख शिक्षण अधिगम सामग्रियाँ (Some Major Teaching Learning Materials)
- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (vkbZlhVh) (Information and Communication Technology-ICT)
- शिक्षण सामग्री के विकास के लिए आईसीटी (ICT for Developing Instructional Materials)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–42)**

9. आकलन एवं मूल्यांकन (Educational Measurement and Evaluation) **208-234**

- प्रस्तावना (Introduction)
- शैक्षिक मापन की परिभाषा (Definition of Educational Measurement)
- मापन के उद्देश्य (Objectives of Measurement)
- मापन की विशेषताएँ (Measurement Characteristics)
- मापन के आवश्यक तत्व (Essential Elements of Measurement)
- मापन के कार्य (Functions of Measurement)
- मापन के प्रकार (Types of Measurement)
- मानसिक मापन एवं भौतिक मापन में अंतर (Difference between Mental Measurement and Physical Measurement)
- मापन की प्रणाली (System of Measurement)
- मापन के स्तर (Levels of Measurement)
- मापन की त्रुटियाँ (Errors of Measurement)
- मापन के चर एवं उनके प्रकार (Measuring Variables and Their Types)
- मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)
- मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of Evaluation)
- मूल्यांकन के उद्देश्य (Objectives of Evaluation)
- मूल्यांकन की आवश्यकताएँ (Needs of Evaluation)
- मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Evaluation)
- मूल्यांकन के पक्ष (Aspects of Evaluation)
- मूल्यांकन का महत्व (Importance of Evaluation)
- मूल्यांकन के सिद्धान्त (Principles of Evaluation)
- शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का महत्व (Importance of Evaluation in the Field of Education)
- मापन तथा मूल्यांकन में संबंध (Relation Between Evaluation and Measurement)
- मापन तथा मूल्यांकन में अन्तर (Difference Between Measurement and Evaluation)
- मापन तथा मूल्यांकन में समानताएँ (Similarities Between Measurement and Evaluation)
- सीखने में मूल्यांकन की भूमिका (Role of Assessment in Learning)
- मूल्यांकन के प्रकार (Types of Evaluation)
- निर्माणात्मक/रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)
- योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)
- रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के बीच अंतर (Difference between Formative and Summative Evaluation)
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–135)**

Unit-III : अनुकूल शिक्षण वातावरण का निर्माण
(Creating Conducive Learning Environment)

10. विविधता, अक्षमता और समावेश की अवधारणाएँ (Concepts of Diversity, Disability and Inclusion) 235-281

- प्रस्तावना (Introduction)
- विविधताओं की समझ : भाषायी, धार्मिक, जातिगत, जनजातिगत, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, जेंडर तथा निःशक्तता (Understanding Diversities : Linguistic, Religion, Caste, Tribe, Socio-Cultural, Economic, Gender and Disability)
- अक्षमता और समावेशन (Disability and Inclusion)
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definition of Children with Special Needs)
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विशेषताएँ (Characteristics of Children with Special Needs)
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान या लक्षण (Identification or Characteristics of Children with Special Needs)
- विशिष्ट एवं सामान्य बालकों में अन्तर (Difference Between Special and Normal Children)
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के प्रकार (Types of Children with Special Needs)
- प्रतिभाशाली बच्चे (Gifted Children)
- धीमी गति से सीखने वाले बच्चे (Slow Learning Children)
- शैक्षिक रूप से पिछड़े (कमजोर) (Backward Children)
- आंशिक रूप से शारीरिक अक्षम बच्चे (दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित, वाक्‌दोष, अस्थि बाधित) [Partially Physically Disabled Children (Visually Impaired, Hearing Impaired, Speech Impaired, Orthopedically Impaired)]
- समस्यात्मक बच्चे (Problematic Children)
- अधिगम अक्षमता वाले बच्चे (Children with Learning Disabilities)
- हड्डी रोग विकलांगता (Orthopedic Disability)
- ऑटिज्म (Autism)
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक चुनौतियाँ (Educational Challenges of Children with Special Needs)
- विशेष आवश्यकता वाले बालकों की सहायता में शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher in Helping Children with Special Needs)
- विशिष्ट शिक्षा की अवधारणा (Concept of Special Education)
- विशिष्ट शिक्षा का अर्थ (Meaning of Special Education)
- विशिष्ट शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Special Education)
- विशेष शिक्षा की विशेषताएँ और प्रकृति (Characteristics and Nature of Special Education)
- विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता (Needs of Special Education)
- विशिष्ट शिक्षा के सिद्धान्त (Principles of Special Education)
- एकीकृत शिक्षा की अवधारणा (Concept of Integrated Education)
- एकीकृत शिक्षा का अर्थ (Meaning of Integrated Education)
- एकीकृत शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Integrated Education)
- एकीकृत शिक्षा की समस्याएँ (Problems of Integrated Education)
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा (The Concept of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा का अर्थ (Meaning of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा की परिभाषा (Definition of Inclusive Education)
- NCF–2005 के अनुसार समेकित या समावेशी शिक्षा (Integrated or Inclusive Education According to NCF-2005)
- समावेशी शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा के मूलतत्व/आधार (Basics of Inclusive Education)
- समेकित या समावेशी शिक्षा का महत्व (Importance of Integrated or Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता (Need for Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा का क्षेत्र (Scope of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा के मुख्य सिद्धांत (Main Principles of Inclusive Education)
- विद्यालय स्तर पर समावेशी शिक्षा की आवश्यकता (Need for Inclusive Education at School Level)
- विशिष्ट शिक्षा, समावेशी/समन्वित शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा में अंतर (Difference between Special Education, Inclusive/Integrated Education and Inclusive Education)

- समावेशन के बारे में सामान्य मिथक और तथ्य (Common Myths and Facts about Inclusion)
- विशिष्ट सहायक तकनीकी (Specific Assistive Technology)
- बालक/बालिकाओं की विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं के संदर्भ में नीतिगत स्तरीय हस्तक्षेप (राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य) [Policy Level Intervention in Addressing Special Educational Need of Children (National Perspective)]

➢ वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–142)

11. विद्यालय मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा (Concept of School Mental Health) **282-294**

- प्रस्तावना (Introduction)
- मानसिक स्वास्थ्य अर्थ, स्वरूप तथा बाधक तत्व (Mental Health Meaning, Nature and Obstacles)
- मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकार (Mental Health Disorders)
- मानसिक स्वास्थ्य विकारों के विषय में मिथक एवं भ्रांतियाँ (Myths and Misconceptions about Mental Health Disorders)
- विद्यालय में स्वास्थ्य परामर्शदाता के अनिवार्य गुण (Essential Qualities of a Health Counselor in School)
- राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएचपी)–1982 [National Mental Health Programme (NMHP)-1982]
- निम्हान्स अधिनियम, 2012 (NIMHANS Act, 2012)
- विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी) अधिनियम, 2016 [Rights of Persons with Disabilities (RPWD) Act, 2016]
- राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017 (National Mental Health Care Act, 2017)
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 (National Health Policy, 2017)
- घर, विद्यालय, समाज का मानसिक स्वास्थ्य सुधार में योगदान (Home, School, Society's Contribution to Mental Health Improvement)
- मनोदर्पण (Manodarpan)

➢ वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–105)

12. विद्यालय और समुदाय का एक शिक्षण संसाधन के रूप में विकास (Development of School and Community as a Learning Resource) **295-302**

- प्रस्तावना (Introduction)
- विद्यालय का अर्थ (Meaning of School)
- विद्यालय की परिभाषा (Definition of School)
- समुदाय का अर्थ (Meaning of Community)
- समुदाय की परिभाषा (Definition of Community)
- समुदाय की विशेषताएँ (Characteristics of Community)
- समुदाय का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of Community)
- समुदाय के शैक्षिक कार्य (Educational Work of the Community)
- विद्यालय व समुदाय का पारस्परिक सम्बन्ध (Mutual Relationship Between School and Community)
- विद्यालय : सामुदायिक केन्द्र के रूप में (School : As a Community Center)

➢ वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–66)

Unit-IV : स्कूल संगठन और नेतृत्व (School Organization and Leadership)

13. चिंतनशील व्यवसायी, टीम निर्माता, आरम्भकर्ता, प्रशिक्षक और संरक्षक के रूप में नेता (Leader As Reflective Practitioner, Team Builder, Initiator, Coach and Mentor) **303-311**

- प्रस्तावना (Introduction)
- नेतृत्व (Leadership)
- नेतृत्व के सिद्धान्त (Principle of Leadership)
- नेतृत्व की शैलियाँ (Leadership Styles)
- एक चिंतनशील अभ्यासकर्ता, टीम निर्माता, आरम्भकर्ता, कोच और संरक्षक के रूप में नेता (The Leader as a Reflective Practitioner, Team Builder, Initiator, Coach and Mentor)

➢ वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–46)

14. स्कूल नेतृत्व पर दृष्टिकोण (Perspectives on School Leadership) **312-337**

- प्रस्तावना (Introduction)
- विद्यालय नेतृत्व (School Leadership)
- अध्यापक नेतृत्व (Teacher Leadership)
- पर्यवेक्षक की भूमिका, कार्य एवं जिम्मेदारियाँ (Role, Functions and Responsibilities of Supervisor)
- प्रबंधन में शिक्षक की भूमिका, कार्य एवं जिम्मेदारियाँ (Role, Functions and Responsibilities of Teacher in Management)
- प्रबंधन में शिक्षकेतर कर्मचारियों की भूमिका, कार्य एवं जिम्मेदारियाँ (Role, Functions and Responsibilities of Non-Teaching Staff in Management)
- शिक्षक: एक विद्यालय नेता (The Teacher : A School Leader)
- विद्यालय नेतृत्व के विभिन्न प्रतिमानों पर समझ का निर्माण (Building an Understanding of Different Models of School Leadership)
- संदर्भ आधारित विद्यालय विकास योजना (Planning a Context-Specific School Development)
- शैक्षिक वार्षिक कैलेंडर (Academic Annual Calendar)
- विद्यालय सभा (School Assembly)
- शिक्षक विकास मंच (Teacher Development Forums)
- समय–सारणी (Time-Table)
- शिक्षक–अभिभावक संघ (Teacher-Parents Association)
- उपलब्धि डेटा (Achievement Data)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–184)**

15. समुदाय, उद्योग और अन्य पड़ोसी विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ साझेदारी बनाना (Building Partnerships with the Community, Industry and Other Neighbouring Schools and Higher Education Institutions) **238-343**

- प्रस्तावना (Introduction)
- समुदाय के साथ साझेदारी बनाना (Creating Partnership with Community)
- विद्यालय–समुदाय संबंध की अवधारणा (Concept of School Community Relationship)
- विद्यालय–सामुदायिक संबंध और विद्यालय विकास (School Community Relationship and School Development)
- विद्यालय–समुदाय संबंध और विद्यालय विकास संस्थाएँ (Agencies of School Community Relationship and School Development)
- उद्योग और आस–पास के स्कूलों के साथ साझेदारी स्थापित करना (Establishing Partnerships with Industry and Nearby Schools)
- उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ साझेदारी (Partnerships with Higher Education Institutions)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–43)**

Unit-V : शिक्षा में दृष्टिकोण (Perspectives in Education)

16. शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में विद्यालय की भूमिका (Role of School in Achieving the Aims of Education) **344-357**

- प्रस्तावना (Introduction)
- शिक्षा का अर्थ (Meaning of Education)
- शिक्षा की परिभाषाएँ तथा उनका विश्लेषण (Definitions of Education and Their Analysis)
- शिक्षा का महत्व (Importance of Education)
- शिक्षा की प्रकृति (Nature of Education)
- प्रक्रिया के रूप में शिक्षा (Education As A Process)
- शिक्षा के रूप (Forms of Education)
- शैक्षिक विचारधाराएँ: एक संक्षिप्त विवरण (Educational Ideologies : A Brief Description)
- आदर्शवाद (Idealism)
- प्रकृतिवाद (Naturalism)
- प्रयोजनवाद (Pragmatism)
- आदर्शवाद व प्रयोजनवाद के मध्य अंतर (Difference Between Idealism and Pragmatism)
- प्रकृतिवाद व प्रयोजनवाद में अंतर (Difference Between Naturalism and Pragmatism)
- शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में विद्यालय की भूमिका (Role of School in Achieving the Aims of Education)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–41)**

17. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (National Education Policy, 2020) 358-374

- प्रस्तावना (Introduction)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (National Education Policy, 2020)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (मूल्यांकन सुधार) [National Education Policy, 2020 (Assessment Reforms)]

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–92)**

18. निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (Right to Free and Compulsory Education Act, 2009) 375-382

- शिक्षा का अधिकार अधिनियम (Right to Education Act)
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (Right to Education Act, 2009)
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अन्तर्गत मुख्य उद्देश्य (Main Objectives Under the Right to Education Act, 2009)
- शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 की विशेषताएँ (Features of Right to Education (RTE) Act, 2009)
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की सीमाएँ (Limitations of Right to Education Act, 2009)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–50)**

19. विद्यालयी शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में शिक्षा में राष्ट्रीय नीतियों का ऐतिहासिक अध्ययन (Historical Study of National Policies in Education with Special Reference to School Education) 383-422

- प्रस्तावना (Introduction)
- स्वतंत्रता पूर्व शैक्षिक नीतियाँ (Pre-Independence Educational Policies)
- मैकाले का विवरण–पत्र, 1835 (Macaulay's Minutes, 1835)
- भारतीय शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन), 1882 (Indian Education Commission, 1882)
- लॉर्ड कर्जन (Lord Curzon)
- कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (सैडलर आयोग) 1917-19 [Calcutta University Commission (Sadler Commission), 1917-19]
- हार्टोग कमीशन, 1928-29 (Hartog Commission, 1928-29)
- वर्धा–शिक्षा–सम्मेलन (Wardha Educational Conference)
- जाकिर हुसैन समिति (Zakir Hussain Committee)
- सार्जेन्ट रिपोर्ट–1944 (Sargent Report-1944)
- विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग–1948-49 (University Education Commission- 1948-49)
- भारत में स्वतंत्रता–पश्चात् शिक्षा (Post-Independence Education in India)
- राज्य के नीति–निदेशक सिद्धान्त तथा शिक्षा (Directive Principles of State Policy and Education)
- ताराचन्द समिति, 1948 (Tarachand Committee, 1948)
- माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952-53 [Secondary Education Commission (1952-53)]
- शिक्षा आयोग, 1964-66 (Education Commission, 1964-66)
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (National Council of Teacher Education N.C.T.E.)
- भारत में शैक्षिक नीतियाँ (Educational Policies in India)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 (National Education Policy, 1968)
- संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (1992) [Modified National Education Policy, 1986 (1992)]
- ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड (Operation Black Board)
- प्रो. यशपाल समिति, 1992-93 (Prof. Yashpal Committee, 1992-93)
- संपूर्णानंद समिति, 1961 (Sampurnanand Committee, 1961)
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1961 (NCERT, 1961)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (National Curriculum Framework-2005)
- शिक्षक–शिक्षा हेतु 'राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क–2009' ('National Teacher Education Curriculum Framework-2009' for Teacher Education)
- बाल अधिकार (Child Rights)
- मंडल आयोग (Mandal Commission)
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) [District Institute of Education and Training (DIET)]
- राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय [Institute of Educational Planning and Administration (NUEPA)]
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (I.G.N.O.U.) (इग्नू) [Indira Gandhi National Open University (I.G.N.O.U.)]
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान [National Institute of Open Schooling (NIOS)]
- जिला प्राथमिक शिक्षा परियोजना (District Primary Education Programme)
- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)
- राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhiyan)
- राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (National Testing Agency)

- मूलभूत साक्षरता को समझना (Understanding Foundational Literacy)
- मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान कार्यान्वयन संबंधी दिशा–निर्देश के मुख्य पहलू (Key Aspects of Foundational Literacy and Numeracy Implementation Guidelines)
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (Early Childhood Care and Education : ECCE)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–70)**

20. विद्यालयी पाठ्यचर्या सिद्धान्त (School Curriculum Principles) **423-435**

- प्रस्तावना (Introduction)
- पाठ्यचर्या (Curriculum)
- पाठ्यक्रम (Syllabus)
- पाठ्यचर्या के सिद्धान्त (Principles of Curriculum)
- पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Curriculum)
- पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम (Curriculum and Syllabus)
- पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में अन्तर (Difference between Curriculum and Syllabus)
- पाठ्यचर्या के प्रकार (Types of Curriculum)
- पाठ्यचर्या की श्रेणियाँ (Categories of Curriculum)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 (National Curriculum Framework, 2005)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2023 (National Curriculum Framework NCF, 2023)

➢ **वर्ष 2023 में आए हुए सभी प्रश्नों का समावेश (कुल प्रश्न संख्या–80)**

अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
(Extra Study Material E-Book)

Extra Study Material ई-बुक का Content

➔ विगत वर्षों के 5 सॉल्व्ड पेपर्स की ई-बुक

➔ डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

नोट : Link Expire होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को **Download** कर लें।

ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

नोट

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

KVS (Guidebook)

KVS PRT (Practice Sets)

KVS PRT (Textbook)

अध्याय 1

विकास की अवधारणा, आयाम, सिद्धान्त व प्रभावित करने वाले कारक (Concept Dimensions, Principles and Factors Affecting Development)

1. प्रस्तावना (Introduction)

- विकास प्राणी की एक ऐसी विशेषता है जिसका प्रारंभ गर्भाधान से ही हो जाता है तथा यह जीवन पर्यन्त चलता रहता है। कुछ विकास अवस्था विशेष में जाकर बन्द हो जाता है जिसे वृद्धि कहते हैं, जबकि कुछ विकास प्रकार्यात्मक स्वरूप का होता है जो अनवरत चलता रहता है।
- प्रस्तुत अध्याय में आप वृद्धि एवं विकास के अर्थ एवं महत्व को समझ पायेंगे तथा विकास की विभिन्न विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- इसके अतिरिक्त, इस अध्याय के अन्तर्गत आप विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्वों का अध्ययन करेंगे तथा विकास के निर्धारण के रूप में परिपक्वता *बनाम* अधिगम को जान पायेंगे।

2. वृद्धि और विकास की अवधारणा (Concept of Growth and Development)

- बच्चे की वृद्धि और विकास जटिल प्रक्रियाएँ हैं जो कई कारकों और स्रोतों से प्रभावित होती हैं।
- विकासात्मक मनोविज्ञान में **'वृद्धि' और 'विकास'** दो ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग प्रायः पर्यायवाची सम्प्रत्यय के रूप में होता है, परन्तु वास्तव में दोनों में कुछ भिन्नता है। इसलिए, प्रारम्भ में ही इन दोनों शब्दों के मध्य के अंतर को समझना जरूरी है।

वृद्धि का अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definition of Growth)

- शरीर व शारीरिक अंगों के **भार एवं आकार** (**लम्बाई एवं वजन**) में होने वाली बढ़ोतरी को **वृद्धि** कहते हैं।
- वृद्धि एक संकुचित संप्रत्यय है जो केवल शारीरिक विकास से सम्बन्धित होते हैं।
- वृद्धि **मात्रात्मक/संख्यात्मक** होती है अर्थात् वृद्धि के अंतर्गत होने वाले परिवर्तनों को मापा जा सकता है, अतः वृद्धि मापनीय होती है।
- वृद्धि एक निश्चित समय तक चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात् वृद्धि जीवन भर जारी नहीं रहती है, अपितु यह परिपक्वता प्राप्त करने के साथ ही रुक जाती है।
- वृद्धि केवल शारीरिक पक्ष में ही होती है।
- सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि वृद्धि का अर्थ समय के साथ कुछ मात्रा में शारीरिक वृद्धि है। इसमें ऊँचाई, वजन, शारीरिक अनुपात और सामान्य शारीरिक बनावट के संदर्भ में परिवर्तन शामिल हैं।

वृद्धि की विशेषताएँ (Characteristics of Growth)

- वृद्धि में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं। वृद्धि किसी मूल ऊतक के समान संरचना वाले ऊतकों की अभिवृद्धि के परिणामस्वरूप होने वाले भौतिक परिवर्तन और आकार में वृद्धि को इंगित करती है और इसके तीन अलग-अलग घटक होते हैं–
  - कोशिका विभाजन
  - स्वांगीकरण और
  - कोशिका विस्तार
- वृद्धि को मात्रात्मक रूप से मापा जा सकता है।
- वृद्धि के विभिन्न चरणों के दौरान वृद्धि की दर भिन्न-भिन्न होती है। जन्म पूर्व, नवजात अवस्था, शैशवावस्था और किशोरावस्था के दौरान वृद्धि दर तीव्र होती है, परंतु बाल्यावस्था के दौरान यह धीमी हो जाती है।
- वयस्कता के दौरान शारीरिक वृद्धि न्यूनतम होती है।
- वृद्धि एक शारीरिक/भौतिक परिवर्तन है। जिसमें आनुवंशिकता एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है।
- वृद्धि जीवन भर नहीं चलती, यह परिपक्वता की प्राप्ति के साथ रुक जाती है।

विकास का अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definition of Development)

- अभी तक हम लोग वृद्धि के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे थे। गर्भाधान के पश्चात् व्यक्ति के आकार और भार में होने वाले मात्रात्मक परिवर्तन की बात कर रहे थे, परन्तु यदि हम गौर करें तो पाते हैं कि मानव जीवन के प्रारंभ से ही विभिन्न प्रकार के गुणात्मक परिवर्तन भी घटित होते हैं और इन परिवर्तनों का सिलसिला जीवन पर्यन्त चलता रहता है। इन्हीं अनवरत परिवर्तनों का नाम विकास है।
- जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के अन्तर्गत आने वाले सभी गुणात्मक परिवर्तन मानव विकास के अन्तर्गत आते हैं। विकास का यह क्रम स्थिर नहीं रहता, अविराम गति से चलता रहता है अर्थात् **विकास गर्भाधान से प्रारम्भ होता है तथा मृत्यु तक जारी रहता है।**
- विकास में वृद्धि भी सम्मिलित होती है, अतः विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों होता है।
- विकास क्रम में नयी विशेषताओं का समावेश होता है तथा पुरानी विशेषताएँ लुप्त होती जाती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने इन्हीं परिवर्तनों, गुणों और विशेषताओं की क्रमिक एवं नियमित उत्पत्ति को विकास कहा है।
- **हरलॉक** (1968) के अनुसार, 'विकास प्रगतिशील परिवर्तनों का एक नियमित, क्रमबद्ध एवं सुसम्बद्ध पैटर्न है।'

- गेसेल ने विकास को एक तरह का परिवर्तन कहा है जिससे बच्चों में नवीन विशेषताओं एवं क्षमताओं का विकास होता है।
- इसी प्रकार, यदि हम स्टैट (1974) के विचारों पर नजर डालें तो स्पष्ट होता है कि विकास समय के साथ होने वाला परिवर्तन है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका प्रेक्षण प्रतिफलों के अध्ययन द्वारा किया जा सकता है।,
- कुल मिलाकर विकास प्रगतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया ही कहा जायेगा जो नियमित होती है तथा इसकी दिशा अग्रगामी होती है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के अभियोजन की क्रियाओं में उन्नतिशील परिवर्तनों के घटित होने से है। यानी, विकास द्वारा जो परिवर्तन लक्षित होता है वह व्यक्ति की पिछली अवस्था से आगे आने वाली अवस्था की ओर अग्रसर होता है। जन्म के समय जहाँ शिशु निःसहाय होता है, वहीं विकास क्रम में वह हर प्रकार की क्रियाओं, जैसे–उठने-बैठने, चलने-फिरने, दौड़ने-भागने आदि में सक्षम हो जाता है।
- विकास शब्द का तात्पर्य मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों ही पहलुओं में होने वाले समग्र परिवर्तनों से है। इसे व्यवस्थित, सुसंगत परिवर्तनों की प्रगतिशील शृंखला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है
- विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक परिवर्तन संपन्न होते हैं। यह वृद्धि की तुलना में अधिक व्यापक शब्द है। **यह वृद्धि के बिना भी संभव है।**
- **विकास परिवर्तनीय है।** गर्भाधान के क्षण से लेकर मृत्यु तक, व्यक्ति में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं।
- **विकास में कोई रुकावट/असततता नहीं है, कुछ चरणों में विकास तेज होता है और कुछ में धीमा अर्थात् विकास की गति अलग-अलग आयु में अलग-अलग हो सकती है।**
- शारीरिक विकास कभी-कभी पूर्वानुमेय होता है, क्योंकि यह मस्तकोधमुख और समीपदूराभिमुख के रूप में विकास के समान स्वरूप का अनुसरण करता है।
- विकास के सभी पक्ष जैसे संज्ञानात्मक पक्ष, भावात्मक पक्ष और मनोगत्यात्मक पक्ष परस्पर संबंधित हैं।
- **विकास आकार में रैखिक नहीं है, यह सर्पिल है और यह जीवन भर आगे-पीछे हो सकता है।**
- **विकास आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों पर निर्भर करता है, वुडवर्थ के अनुसार विकास आनुवंशिकता और पर्यावरण का एक उत्पाद है।**
- **बोरिंग** के अनुसार, 'विकास से हमारा तात्पर्य शरीर के अंगों के आकार में होने वाले परिवर्तन और विकास के साथ-साथ विभिन्न अंगों का कार्यात्मक इकाइयों में एकीकरण है।'
- बेयर ने विकास को इस प्रकार परिभाषित किया है, 'व्यावहारिक परिवर्तन जिसके लिए प्रोग्रामिंग की आवश्यकता होती है और प्रोग्रामिंग के लिए समय की आवश्यकता होती है, लेकिन इतना नहीं कि इसे उम्र कहा जाए।'इस दृष्टिकोण के अनुसार, विकास सीखने के अनुभवों का संग्रह है, जिसे बच्चा पर्यावरण के साथ बातचीत की प्रक्रिया में प्राप्त करता है।
- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में विकास शब्द को 'जीव के जीवन के दौरान आकार, आकृति और कार्य में होने वाले प्रगतिशील परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके द्वारा इसकी आनुवंशिक क्षमता एक कार्यशील वयस्क प्रणाली में परिवर्तित हो जाती है।' इसलिए, विकास में वे सभी मनोवैज्ञानिक परिवर्तन शामिल हैं जो किसी जीव के विभिन्न अंगों के कार्यों और गतिविधियों को शामिल करते हैं।
- **स्किनर** के अनुसार, विकास एक सतत और क्रमिक प्रक्रिया है।
- **क्रो और क्रो** के अनुसार, विकास, विकास के साथ-साथ व्यवहार में उन परिवर्तनों से संबंधित है जो पर्यावरणीय स्थितियों के परिणामस्वरूप होते हैं। इस प्रकार, विकास परिपक्वता और पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया के कारण समय के साथ वृद्धि और क्षमता में परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

विकास की विशेषताएँ (Characteristics of Development)

- **विकास व्यक्ति और पर्यावरण के बीच की अंतःक्रिया का परिणाम है।** विकास एक सतत और आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।
- विकास क्रमिक और व्यवस्थित होता है। यह एक पूर्वानुमानित पैटर्न का अनुसरण करता है।
- **विकास बहुआयामी, बहुमुखी और बहुदिशात्मक होता है।**
- विकास के विभिन्न पहलू/क्षेत्र आपस में जुड़े हुए हैं और एक–दूसरे पर निर्भर हैं।
- **विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है** और सामूहिक विभेदन और एकीकरण पर आधारित होता है।
- विकास कार्यात्मक होता है। इसका तात्पर्य आकार, रूप या संरचना में समग्र परिवर्तन से है जिसके परिणामस्वरूप बेहतर कामकाज और कार्यप्रणाली होती है।
- विकास मात्रात्मक पहलुओं के बजाय गुणवत्ता या चरित्र में परिवर्तन को दर्शाता है।
- विकास का तात्पर्य कार्यप्रणाली और व्यवहार में सुधार से है और इसलिए गुणात्मक परिवर्तन लाता है जिसे मापना मुश्किल है।
- विकास व्यापक है, इसमें वृद्धि शामिल है और जीव में होने वाले सभी परिवर्तन शामिल हैं।
- **विकास को वृद्धि की प्रक्रिया की तुलना में एक जटिल प्रक्रिया कहा जाता है।**
- सामान्यतः वृद्धि विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती है, लेकिन हमेशा नहीं, जैसा कि उन बच्चों के मामलों से स्पष्ट होता है, जिनकी ऊँचाई, वजन और आकार में वृद्धि नहीं होती, लेकिन वे शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक पहलुओं में कार्यात्मक सुधार या विकास का अनुभव करते हैं।

3. वृद्धि और विकास में अन्तर (Difference Between Growth and Development)

- वृद्धि और विकास कभी-कभी तो बिल्कुल एक-दूसरे के पर्याय लगते हैं, परन्तु मनोवैज्ञानिकों ने कुछ खास-खास आधार पर दोनों में अन्तर स्पष्ट किया है–
  - विकास एक व्यापक संप्रत्यय है, जबकि वृद्धि एक विशेष प्रकार के विकास का सूचक है।

- विकास अनवरत चलता रहता है, जबकि वृद्धि की सीमा तय है जहाँ आकर वह रुक जाती है।
- विकास का सम्बन्ध मूलतः व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं से है जबकि वृद्धि के द्वारा मूलतः दैहिक या भौतिक परिवर्तन घटित होते हैं।
- प्राणी में विकास वृद्धि से पहले प्रारंभ होता है और जीवन-पर्यन्त चलता रहता है, जबकि वृद्धि एक खास अवस्था में प्रारंभ होती है और फिर समाप्त हो जाती है।
- वृद्धि एक धनात्मक विकास है जिसमें शरीर के आकार, भार आदि में बढ़ोतरी नजर आती है, जबकि विकास धनात्मक और ऋणात्मक दोनों ही प्रकार का हो सकता है। यही कारण है कि विकास का स्वरूप गुणात्मक होता है, जबकि वृद्धि का स्वरूप मात्रात्मक। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है–वृद्धावस्था, जिसमें घटित परिवर्तन का स्वरूप ऋणात्मक होता है क्योंकि व्यक्ति की दृष्टि-क्षमता, श्रवण-क्षमता, जनन-क्षमता आदि में भारी गिरावट देखी जाती है।
- विकास का सम्बन्ध प्रकार्यात्मक परिवर्तनों से है, जबकि वृद्धि संरचनात्मक परिवर्तनों तक ही सीमित है।
- वृद्धि की प्रक्रिया में समन्वय का होना आवश्यक नहीं है, जबकि प्रत्येक प्रकार का विकास समन्वित और समाकलित होता है।
- विकास का एक निश्चित पैटर्न होता है, जबकि वृद्धि के पैटर्न में घोर वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। उदाहरणस्वरूप, प्रत्येक बच्चा पहले बैठना प्रारंभ करता है, फिर चलना, यदि उसने बैठना नहीं सीखा तो वह चलना भी नहीं सीखेगा, परन्तु यदि चार साल का कोई बच्चा ढाई फीट लम्बा है तो उसका वजन 10 किलो हो सकता है जबकि इसी उम्र का दूसरा बच्चा सवा दो फीट का होकर भी 12 किलो का हो सकता है।
- वृद्धि मूलतः परिपक्वता का परिणाम होती है जबकि विकास परिपक्वता और अधिगम दोनों का प्रतिफल होता है। वास्तव में विकास परिपक्वता और अधिगम की अन्तःक्रिया का परिणाम है।

- वृद्धि और विकास के मध्य अंतर को हम इस सारणी के माध्यम से और बेहतर समझ सकते हैं–

	वृद्धि	विकास
1.	वृद्धि विशेष रूप से परिवर्तन को संदर्भित करती है।	विकास, पूर्ण रूप से परिवर्तन को संदर्भित करता है।
2.	वृद्धि से तात्पर्य कोशिकाओं के गुणन या संरचना और कार्य में वृद्धि के परिणामस्वरूप आकार में परिवर्तन से है।	विकास परिपक्वता को संदर्भित करता है।
3.	वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तनों को संदर्भित करती है। उदाहरण–ऊँचाई, वजन में वृद्धि।	विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों तरह के परिवर्तनों को संदर्भित करता है, जैसे–शब्दावली, याद रखने में कौशल व रणनीतियों में सुधार
4.	वृद्धि हमेशा प्रगतिशील नहीं हो सकती है।	विकास व्यवस्थित और सुसंगत प्रगतिशील श्रृंखला में अग्रसर रहता है।
5.	वृद्धि दीर्घकालीन समय तक जारी नहीं रहती है।	विकास एक सतत प्रक्रिया है जो गर्भ से मृत्यु तक जारी रहता है।
6.	वृद्धि के कारण होने वाले परिवर्तन इकाइयों में मापने योग्य होते हैं, जैसे–ऊँचाई, वजन में वृद्धि आदि को मापा जा सकता है।	विकास में गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन है, जो प्रत्यक्ष रूप से नहीं मापा जा सकता, लेकिन यह व्यवहार प्रदर्शन में देखा जा सकता है।
7.	वृद्धि विकास हो सकती है और नहीं भी। उदाहरण–एक बच्चा वजन में बढ़ रहा है, लेकिन उसमें कोई व्यावहारिक सुधार नहीं दिखा सकता है।	वृद्धि के बिना भी विकास संभव है। जैसे–एक बच्चा ऊँचाई और वजन में वृद्धि नहीं दिखा सकता है, लेकिन व्यवहार और अपने संज्ञानात्मक कौशल से विकास को प्रदर्शित कर सकता है।

4. विकास और वृद्धि का महत्व (Importance of Growth and Development)

- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को वांछित परिवर्तन करने और सोचने के नए तरीके खोजने में मदद करना है। इस तरह के बदलाव लाने के लिए बच्चों की उम्र के अनुसार उनके विकास और वृद्धि के बारे में जानना आवश्यक है।
- विकास मानव जीवन की सभी अवधियों और चरणों में एक सतत और बिना रुके चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए, हमें अपने व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में विकास के मामले में पूर्णता प्राप्त करने के अपने प्रयासों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।
- विकास और वृद्धि से संबंधित सिद्धांत विकास के पथ पर बच्चों की उन्नति के लिए एक पैटर्न या प्रवृत्ति का सुझाव देते हैं। सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर बढ़ना और एकीकरण जैसे विकास के सिद्धांत हमें सीखने की प्रक्रियाओं की योजना बनाने तथा विकास और वृद्धि में अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सीखने के अनुभवों की व्यवस्था करने में मदद करते हैं।

5. परिपक्वता (Maturity)

- परिपक्वता का तात्पर्य किसी व्यक्ति के निहित लक्षणों या क्षमता को प्रकट करने से है। यह आनुवंशिकता और पर्यावरण के पारस्परिक प्रभाव से भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक रूप से परिपक्व होने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।
- परिपक्वता के दो मुख्य प्रकार हैं–
  - **शारीरिक परिपक्वता–**शारीरिक परिपक्वता तब होती है जब हमारे शरीर में मात्रात्मक परिवर्तन होते हैं तथा उम्र बढ़ने के साथ बदलाव आते हैं।

- **संज्ञानात्मक परिपक्वता–**संज्ञानात्मक परिपक्वता हमारे सोचने के तरीके में विकास की प्रक्रिया है। यह जन्म से वयस्कता तक बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को संदर्भित करती है। यह संदर्भित करती है कि बच्चे कैसे सोचते हैं, सीखते हैं, अपने पर्यावरण के साथ बातचीत करते हैं, आदि। संज्ञानात्मक विकास के कुछ महत्वपूर्ण पहलू सूचना का प्रसंस्करण, भाषा विकास, तर्क कौशल, बुद्धि और स्मृति का विकास हैं। संज्ञानात्मक विकास की यह प्रक्रिया शिशु अवस्था में ही शुरू हो जाती है।

6. सीखना/अधिगम (Learning)

- बाल विकास से तात्पर्य उन परिवर्तनों से है जो बच्चे के बड़े होने और विकसित होने के साथ-साथ शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क, भावनात्मक रूप से स्वस्थ, सामाजिक रूप से सक्षम और सीखने के लिए तैयार होने के संबंध में होते हैं।
- बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब वे सार्थक गतिविधियों में भाग लेते हैं।
- सीखने/अधिगम को 'व्यवहार में कोई भी अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन जो अभ्यास और अनुभव के परिणामस्वरूप होता है' के रूप में परिभाषित किया गया है। इस परिभाषा के तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं–
  - सीखना/अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है–बेहतर या बदतर।
  - यह एक ऐसा बदलाव है जो अभ्यास या अनुभव के माध्यम से होता है, लेकिन विकास या परिपक्वता के कारण होने वाला बदलाव सीखना/अधिगम नहीं है।
  - व्यवहार में यह बदलाव अपेक्षाकृत स्थायी होना चाहिए और यह काफी लंबे समय तक चलना चाहिए।

7. परिपक्वता *बनाम* अधिगम (Maturity *vs.* Learning)

- विकासात्मक, मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में दो कारक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं–
  - परिपक्वता
  - अधिगम या सीखना
- परिपक्वता का सम्बन्ध बच्चों की आनुवंशिकता से है और सीखने का सम्बन्ध उनके वातावरण से है। विकास में आनुवंशिकता का महत्व कितना है और किस हद तक विकास वातावरण पर निर्भर करता है, यह एक बड़े विवाद का विषय रहा है। आज तक इस विवाद का संतोषजनक समाधान नहीं हो सका है। ऐसा लगता है कि शारीरिक और मानसिक विशेषताएँ कुछ अंशों में परिपक्वता पर निर्भर करती हैं।
- प्राणी में जो विशेषताएँ आनुवंशिकता द्वारा जीन के माध्यम से प्राप्त होती हैं वे कालक्रम में स्वतः एक विशेषक्रम में और एक विशेष गति से प्रकट होती जाती हैं। आनुवंशिक गुणों की इसी क्रमिक और स्वतः विकसित होने की प्रक्रिया को परिपक्वता कहते हैं। बच्चों की जातिगत विशेषताएँ जैसे—रेंगना, खिसकना, बैठना, चलना इत्यादि परिपक्वता द्वारा ही विकसित होती हैं। परिपक्वता द्वारा विकसित होने वाले गुणों की विकास गति को प्रशिक्षण से बढ़ाया नहीं जा सकता है। यदि बच्चों की स्वाभाविक गतियों, हाथ-पाँव चलाने, रेंगने खिसकने, आदि को रोक दें तो परिपक्वन से प्राप्त होने वाले ये गुण कुछ देर से विकसित होंगे।
- कुछ विशेषताएँ किसी-किसी व्यक्ति में होती हैं, सम्पूर्ण जाति में नहीं। ऐसी व्यक्तिगत विशेषताएँ जो व्यक्ति के प्रयास से उत्पन्न होती हैं सीखने या अधिगम का परिणाम मानी जाती हैं। अभ्यास करके व्यवहारों में कुछ परिवर्तन लाने या नये व्यवहार प्राप्त करने को सीखना या अधिगम कहते हैं। लिखना-पढ़ना, साइकिल चलाना, अंग्रेजी बोलना इत्यादि सीखने के दृष्टांत हैं। बच्चों के सीखने में परिपक्व व्यक्तियों द्वारा मार्गदर्शन की जरूरत होती है। किसी कार्य को स्वयं बार-बार दोहराकर या दूसरों का अनुकरण करके या दूसरों के विचारों, विश्वासों, मान्यताओं या अभिप्रेरकों को अपना कर भी सीखा जाता है।

8. परिपक्वता तथा अधिगम में भेद (Difference Between Maturation and Learning)

- परिपक्वता और अधिगम, दोनों ही बाल–विकास के आधार हैं। इन दोनों प्रक्रियाओं से बच्चों में नई-नई विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं और बच्चा विकसित होता जाता है, परन्तु इन दोनों सूत्रों से होने वाले विकास में कुछ भेद होते हैं जिन्हें नीचे स्पष्ट किया गया है–
  - परिपक्वता से होने वाले विकासात्मक परिवर्तनों के लिए बच्चे को किसी प्रकार के अभ्यास या प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है। ये परिवर्तन स्वतः होते रहते हैं। इसके विपरीत सीखने के फलस्वरूप जो परिवर्तन होते हैं उनके लिए बच्चे को प्रयास करना पड़ता है। यदि बच्चे स्वयं प्रयास नहीं करें तो अधिगम से होने वाले विकासात्मक परिवर्तन नहीं होंगे।
  - परिपक्वता से बच्चों की शारीरिक विशेषताओं में परिवर्तन आते हैं; जैसे—शरीर का आकार बड़ा होना, दाढ़ी-मूँछ का निकलना, इत्यादि। इसके विपरीत सीखने के कारण बच्चों में व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तन उत्पन्न होते हैं; जैसे—लम्बे वाक्य बोलना, नई भाषा सीखना, अधिक बच्चों से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करना इत्यादि।
  - परिपक्वता से होने वाले विकास का एक निश्चित समय होता है और उसकी एक निश्चित गति होती है। समय से पहले हमारी आपकी कोशिश से बच्चा खड़ा नहीं होगा और जब परिपक्वता एक निश्रित मात्रा में हो जाएगी तो बिना हमारे प्रयास के ही बच्चा स्वयं खड़ा होने लगेगा। दूसरे शब्दों में, परिपक्वन की गति को हम अपनी इच्छा से घटा-बढ़ा नहीं सकते। इसके विपरीत सीखने की गति घटाई-बढ़ाई जा सकती है। यदि 1 घंटा रोजाना प्रयास करने पर बच्चा 10 दिनों में साइकिल चढ़ना सीखता है तो 2 घंटा प्रयास करने पर कुछ कम ही दिनों में सीख जायेगा।
  - परिपक्वता से होने वाले परिवर्तनों से सम्पूर्ण जाति के सभी सदस्यों में समानताएँ उत्पन्न होती हैं। सभी बच्चे एक विशेष आयु में बैठने लगते हैं, लगभग एक ही आयु में खड़े होते हैं, इत्यादि। इसके विपरीत सीखने के कारण बच्चों में भेद उत्पन्न होते हैं। किसी ने चार वर्ष की आयु में लिखना सीखा और किसी को उम्र भर लिखना

नहीं आया, चूंकि उसने नहीं सीखा। यदि बच्चों पर से सीखने के प्रभाव समाप्त कर दें तो बच्चों में केवल समानताएँ ही होंगी, वैयक्तिक भिन्नताएँ बहुत कम रह जाएँगी।

- परिपक्वता का सम्बन्ध बच्चे की आनुवंशिकता से है। आनुवंशिक विशेषताएँ परिपक्वन से प्रकट होती हैं। इसके विपरीत अधिगम से वातावरण का परिचय मिलता है। वातावरण के उद्दीपनों के अनुरूप ही बच्चा सीखता है। अधिक उद्दीपनों वाले वातावरण में बच्चा अधिक सीखता है।
- परिपक्वता सीखने की सीमाएँ निर्धारित करता है और उन्हीं सीमाओं के अन्दर सीखने के कार्य हो सकते हैं। प्रत्येक अधिगम के लिए परिपक्वन की एक निश्रित मात्रा का होना आवश्यक है। जब तक उँगलियाँ परिपक्व नहीं होंगी बच्चा कलम नहीं पकड़ सकेगा। अतः स्पष्ट है कि परिपक्वन पर ध्यान रखते हुए बच्चों को सिखाने का प्रयास होना चाहिए, अन्यथा असफलता होगी।
- बच्चा ही नहीं, सभी प्राणी अपनी सम्पूर्ण योग्यता का इस्तेमाल नहीं करते हैं बल्कि उसका कुछ भाग बचा रखते हैं। यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिससे प्राण-रक्षा भी होती है। इस प्रवृत्ति का परिणाम यह होता है कि बच्चे अपनी परिपक्वता सीमा तक पहुँचने से पहले ही सीखने का कार्य छोड़ देते हैं। अतः बच्चा जितना वास्तव में सीखता है उससे अधिक सीखने की योग्यता अथवा परिपक्वता उसमें रहती है।
- परिपक्वता से विकसित योग्यताएँ विभिन्न प्रकार के व्यवहार, कलाकौशल, इत्यादि के रूप में प्रकट हो सकें, इसके लिए आवश्यक है कि बच्चे को वातावरण के उद्दीपनों से प्रभावित किया जाए, अर्थात् बच्चों को सीखने के अवसर दिए जाएँ या उन्हें सिखाया जाए अन्यथा उनमें योग्यताओं के बावजूद कुशल व्यवहार विकसित नहीं हो सकेंगे। इस अर्थ में परिपक्वन और सीखना एक-दूसरे से बहुत अधिक सम्बन्धित हैं।

9. परिपक्वता और अधिगम के बीच अन्तःक्रिया (The Interaction Between Maturity and Learning)

- विकास के लिए परिपक्वन और अधिगम एक गाड़ी के दो पहियों के समान हैं। बच्चों का पूरा विकास दोनों के तालमेल से ही संभव है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है परिपक्वन का महत्व क्रमशः कम होता जाता है।
- जन्म से पहले की अवस्था में विकास के लिए परिपक्वन का महत्व अधिक होता है यद्यपि, सौन्टैग (1966) के अनुसार, गर्भस्थ शिशु यदि अधिक क्रियाशील रहा तो जन्म के बाद भी वह अधिक सक्रिय रहता है और अपेक्षाकृत कम आयु में ही कौशल विकसित करने लगता है। अधिक सक्रिय होने का अर्थ है अधिक अभ्यास करना अथवा सीखना।
- जन्म के बाद की अवस्था में परिपक्वन और अधिगम के बीच और अधिक गहरा सम्बन्ध दिखाई देता है। **बुहलर** (1971) के अनुसार आनुवंशिक योग्यताओं और वातावरण की सामाजिक तथा सांस्कृतिक शक्तियों के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही विकास होता है।
- स्किनर (1975) का विचार है कि विकास में परिपक्वन-अधिगम भेद करना ही गलत है। यदि यह कहा जाए कि अमुक विशेषता सीखने से विकसित हुई तो इसका यह अर्थ नहीं होता कि उस अवधि में परिपक्वन की प्रक्रिया रुकी हुई थी। जातिगत विशेषताएँ तो बिना सीखे ही विकसित होती हैं, व्यक्तिगत गुण सीखे जाते हैं और यह सीखना परिपक्वन पर ही आधारित होता है।

10. बाल-विकास की अवस्थाएँ (Stages of Child Development)

- मनुष्य के सम्पूर्ण विकास काल को कई अवस्थाओं में बाँटा गया है। विकास की प्रत्येक अवस्था की भिन्न-भिन्न विशेषताएँ होती हैं।
- मनोवैज्ञानिकों ने अपनी सुविधानुसार विकास को विभिन्न अवस्थाओं में बाँटकर उनमें होने वाले परिवर्तनों और विशेषताओं को पहचानकर यह स्पष्ट कर दिया कि बालक का विकास एक अवस्था से दूसरी अवस्था में अचानक नहीं होता, बल्कि विकास की गति स्वाभाविक रूप से क्रमशः होती रहती है। विकासात्मक अवस्थाओं को लेकर मनोवैज्ञानिकों के बीच मतभेद हैं।
- एक मनुष्य के विकास को दो अवस्थाओं में बाँटा गया है और प्रत्येक अवस्था में विकास को आयाम में विभाजित किया जाता है। निम्नलिखित चार्ट विकास की विभिन्न अवस्थाओं और आयाम को समझने के लिए आपकी सहायता करेगा—

बाल विकास की अवस्था

जन्म से पूर्व

1. डिम्बावस्था (गर्भावस्था 0 से 2 सप्ताह)
2. पिण्डावस्था (2 से 5 सप्ताह)
3. भ्रूणावस्था (9 सप्ताह से जन्म तक)

जन्म के पश्चात्

1. शैशवावस्था (जन्म से 2 वर्ष)
2. बाल्यावस्था (2 से 12 वर्ष)
   (अ) पूर्व बाल्यावस्था (2 से 6 वर्ष)
   (ब) उत्तर बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष)
3. किशोरावस्था (13 से 21 वर्ष)
   (अ) पूर्व किशोरावस्था (ब) उत्तर किशोरावस्था

11. जन्म के पूर्व का समय (गर्भाधान से जन्म तक) [Prenatal Period (From Conception to Birth)]

- गर्भकालीन विकास माँ के गर्भाशय में एक निश्चित समय के लिए होता है, जिसे गर्भावस्था या गर्भ का समय कहते हैं।
- यह गर्भ का समय गर्भाधान से शुरू होता है तथा शिशु के जन्म पर खत्म होता है। यह समय आमतौर पर 266 दिन या 38 हफ्ते या 9 माह का होता है।

गर्भकालीन विकास के चरण (Stages of Gestational Development)

- गर्भकालीन विकास को पुनः तीन अवस्थाओं में; यथा– डिम्बावस्था (बीजावस्था), पिण्डावस्था तथा भ्रूणावस्था में बाँटा गया। इन अवस्थाओं का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है—
    - **बीजावस्था**—यह काल गर्भाधान से लेकर दो सप्ताह तक का होता है। इस काल में जीव एक फलित रजाणु के रूप में रहता है इसका रूप एक अण्डे के समान होता है और उसमें कोशों का लगातार विभाजन होता रहता है। उत्पत्तिकाल के दस दिन बाद यह अपनी माँ के गर्भाशय की दीवारों से सट जाता है और माँ से पोषाहार ग्रहण करता है।
    - **पिण्डावस्था**—यह अवस्था गर्भावस्था के दो सप्ताह बाद से दो मास तक की होती है। इसकी अवधि 6 सप्ताह की है। इस अवस्था में विकास की गति बहुत तीव्र होती है। इस समय कोष समूह में तीनों परतों का विकास होता है, जिनके अनुसार शरीर के विभिन्न अंगों का विकास होता है। ये तीनों परत निम्न हैं—बहिःस्तर, मध्य स्तर तथा अन्तःस्तर
        - **बहिःस्तर**—बहिःस्तर पर बाहरी त्वचा, बाल, नाखून, दाँतों के विभिन्न भाग, ज्ञानात्मक कोष तथा सम्पूर्ण स्नायु मण्डल का विकास निर्भर करता है।
        - **मध्य स्तर**—मध्य स्तर परत पर त्वचा की भीतरी सतह, माँसपेशियाँ परिसंचरण तन्त्र, उत्सर्जी तन्त्र का विकास आधारित है।
        - **अन्तःस्तर**—अन्तःस्तर पर सम्पूर्ण पाचन तंत्र फेफड़े, यकृत, प्लीहा, अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ आदि का विकास निर्भर करता है। दूसरे माह के अन्त तक पिण्ड की लम्बाई दो इंच तक और वजन लगभग दो सौ ग्राम तक हो जाता है। इस अवस्था में सबसे पहले सिर का विकास होता है फिर शेष अंगों का, शेष सभी अवयव सिर के अनुपात में छोटे होते हैं। इस अवस्था में लगभग सभी बाह्य तथा आन्तरिक अंगों का निर्माण हो जाता है। इसके बाद की अवस्था में उन अंगों के आकार में विकास होता है।
    - **भ्रूणावस्था**—जीव के विकास में यह अवस्था आठवें सप्ताह के बाद आरंभ होती है। इस काल में परिवर्तन बहुत तेजी से होते हैं। इस काल में पहले जिन अवयवों का निर्माण हो चुका है, उन्हीं अंगों का विकास होता है। तीसरे से चौथे महीने में गर्भस्थ शिशु की लम्बाई दोगुनी हो जाती है इस अवस्था में आन्तरिक अंगों का कार्य आरंभ हो जाता है। चौदहवें से सोलहवें सप्ताह के मध्य स्ट्रेथोस्कोप द्वारा इनके हृदय की गति का पता लगाया जा सकता है। तीसरे महीने के अन्त में स्नायु संरचना का विकास हो जाता है। सातवें मास के अन्त में ये पूर्ण जीव का रूप ग्रहण कर लेते हैं तथा जीने योग्य हो जाते हैं। कहने का आशय कि इस समय जन्म लेने पर ये जीवित रह सकते हैं। गर्भस्थ शिशु के विकास को प्रभावित करने वाले तत्व—
        - माँ का आहार
        - माँ का स्वास्थ्य
        - मादक पदार्थ

गर्भकालीन विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Gestational Development)

- शिशु के जन्म से पहले के विकास अर्थात् माँ के गर्भाशय में विकास को कई तत्व प्रभावित करते हैं। माँ का शरीर शिशु के लिए गर्भावस्था से पहले का वातावरण है जहाँ वो जन्म से पहले तक रहता है। वस्तुतः वह प्रत्येक वस्तु जो माँ को प्रभावित करती है फिर चाहे वह उसका भोजन हो या फिर उसकी मनोदशा सभी अजन्मे शिशु के वातावरण को प्रभावित करते हैं और ये सब शिशु के विकास एवं वृद्धि को प्रभावित करते हैं।
- सामान्यतया गर्भाशय के भीतर की परिस्थिति एक स्वस्थ शिशु के लिए आदर्श होती है, लेकिन कभी-कभी कोई नुकसानदायक कारक विकास के किसी महत्वपूर्ण समय में प्रवेश कर गर्भकालीन विकास को कुछ समय के लिए या फिर हमेशा के लिए प्रभावित कर देता है। माँ जो खाना खाती है, दवा लेती है, बीमार होती है, जो विकिरण प्राप्त करती है तथा जो भाव महसूस करती है ये सभी पेट के भीतर शिशु को प्रभावित करते हैं।
- इन सभी कारकों के बारे में विस्तृत चर्चा आगे तालिका में की गयी है। इन कारकों को मातृक कारक, बाह्य वातावारणीय नुकसानदायक कारक तथा पैतृक कारकों में बाँटा जा सकता है।

1.	**मातृ कारक** • माँ का पोषण • शारीरिक कार्य • माँ का स्वास्थ्य • विटामिन की कमी • आर एच तत्व • दवाओं का सेवन • माँ की आयु • शराब का सेवन • तम्बाकू का उपयोग • यूटेराइन क्राउडिंग
2.	**बाह्य वातावरणीय नुकसानदायक कारक** • एक्स-रे तथा रेडियम • रसायन • अत्यधिक तापमान

3.	**पैतृक कारक** ● धूम्रपान, शराब पीना या नशीली दवाओं का सेवन ● पिता की आयु

मातृक कारक (Maternal Factor)

- विभिन्न मातृक कारक हैं, जो माँ के गर्भ में पल रहे शिशु के विकास को प्रभावित करते हैं। माँ के शरीर में कोई भी परिवर्तन या प्रभाव अजन्मे शिशु के विकास को प्रभावित करता है। इन कारकों का विस्तृत वर्णन निम्न प्रकार है—
  - **माँ का पोषण**—अजन्मे शिशु को आहार माँ के रक्त से प्लेसेंटा द्वारा पहुँचता है। शिशु को स्वस्थ रखने के लिए माँ के आहार में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, वसा तथा कार्बोहाइड्रेट होने चाहिए। जो स्त्री गर्भावस्था के समय पर्याप्त वजन प्राप्त कर लेती है ऐसी स्त्री से कम वजनी शिशु होने की संभावना बहुत कम होती है। जो महिलाएँ पर्याप्त आहार नहीं लेती हैं उनका समय से पूर्व प्रसव होने तथा उनके शिशु का वजन कम होने की संभावना अधिक होती है जिनकी या तो जन्म के समय या फिर जन्म के कुछ समय बाद मृत्यु होने की संभावना होती है। कुपोषित महिलाओं में संक्रमण होने का खतरा अधिक होता है जोकि शिशु के लिए हानिकारक होता है। इस सब के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गर्भावस्था के दौरान माँ का पोषण बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिशु का विकास एवं स्वास्थ्य इससे सीधा सम्बन्धित है।
  - **विटामिन एवं लवण की कमी**—विटामिन B_6, B_{12}, C, D तथा E की कमी शिशु के सामान्य गर्भकालीन विकास में हस्तक्षेप करती है। वह गर्भवती स्त्री जिसके आहार में विटामिन B, C, D कैल्सियम, फॉस्फोरस, आयरन या आयोडीन की कमी होगी उसके बच्चे के कुपोषित होने की संभावना होती है। गर्भावस्था के दौरान आयोडीन की कमी से क्रिटीनिज्म, तंत्रिका तंत्र सम्बन्धित परेशानियाँ तथा थायरॉइड संबंधी परेशानी होने का खतरा रहता है।
  - **शारीरिक गतिविधि**—गर्भवती स्त्री द्वारा नियमित व्यायाम उसे कब्ज से बचाता है तथा श्वसन तंत्र, परिसंचरण तंत्र तथा त्वचीय लोचमयता को बेहतर बनाता है जिससे आरामदायक गर्भावस्था तथा आसान एवं सुरक्षित प्रसव होता है।
  - **माँ का स्वास्थ्य**—माँ के स्वास्थ्य का अजन्मे शिशु पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। माँ की बीमारी जैसे—अंतःस्रावी विकार, संक्रामक रोग, लंबी बीमारियाँ तथा माँ का वजन कम या ज्यादा होना ये सभी गर्भकालीन विकास को प्रभावित करती हैं। अतः गर्भवती स्त्री को इन सभी से बचने का प्रयास करना चाहिए।
  - **आर. एच. तत्व**—माँ के रक्त में निर्मित एंटीबॉडी सामान्यतया लाभदायक होते हैं जोकि हमारे शरीर को विभिन्न बीमारियों के संक्रमण से बचाते हैं, जबकि यदि माँ के रक्त में आर एच निगेटिव तत्व हैं तो वो अजन्मे बच्चे को नुकसान पहुँचा सकते हैं। ऐसी स्थिति में माँ का रक्त आर. एच. पॉजिटिव के लिए संवेदनशील होता है तथा उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली आर. एच. पॉजिटिव के लिए एंटीबॉडी बना लेती है। ये एंटीबाडी प्लेसेंटा को पार कर शिशु के आर. एच. पॉजिटिव-युक्त रक्त कोशिकाओं पर आक्रमण कर देती हैं। इसकी ज्यादा गंभीर परिस्थिति में शिशु की मृत्यु भी हो सकती है।
  - **दवाओं का सेवन**—माँ जिस भी चीज का सेवन करती है वह बच्चे पर सीधा प्रभाव डालती है। दवाएँ ऑक्सीजन तथा कार्बन डाइऑक्साइड की भाँति प्लेसेंटा को पार करके गर्भ में पल रहे भ्रूण को नुकसान पहुँचा सकती हैं।
  - **माँ की आयु**—सामान्यतया 21 वर्ष की उम्र के पश्चात् हार्मोन्स की सक्रियता कम हो जाती है अतः इस उम्र में गर्भावस्था के दौरान उच्च रक्त शर्करा, उच्च रक्त चाप तथा गंभीर रक्तस्राव होने की संभावना होती है।
  - **यूटेराइन क्राउंडिंग**—गर्भाशय में दो या दो से अधिक शिशु होने पर गर्भाशय क्षेत्र में क्राउंडिंग हो जाती है जिससे शिशु की गतिविधि सीमित हो जाती है। अतः शिशु का उचित विकास नहीं हो पाता।
  - **शराब का सेवन**—गर्भवती महिला द्वारा अत्यधिक एवं रोजाना शराब का सेवन बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक विकास को क्षति पहुँचाता है। अत्यधिक शराब के सेवन से फीटल एल्कोहोल सिंड्रोम हो जाता है जोकि गर्भकालीन तथा जन्म के बाद के विकास के दौरान मानसिक तथा क्रियात्मक विकास में विकृति का मिश्रण है।
  - **तम्बाकू का सेवन**—गर्भावस्था के दौरान सिगरेट का सेवन गर्भकालीन विकास को सर्वाधिक प्रभावित करता है। इससे गर्भपात होने, कम वजन के शिशु के पैदा होने, गर्भकालीन विकास में अवरोध आने तथा शिशु की मृत्यु होने जैसे परिणाम सामने आ सकते हैं।

बाह्य वातावरणीय हानिकारक तत्व (External Environmental Harmful Elements)

- बाह्य वातावरणीय हानिकारक तत्वों के सम्बन्ध में चर्चा इस प्रकार है जो गर्भकालीन विकास को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इनमें से प्रमुख निम्न हैं—
  - एक्स-रे एवं विकिरण से संपर्क
  - रसायन
  - अत्यधिक तापमान
- इन सभी कारकों से शिशु का शारीरिक एवं मानसिक विकास रुक जाता है तथा गर्भ में ही शिशु की मृत्यु भी हो सकती है।

पैतृक कारक (Ancestral Factor)

- पैतृक कारक अर्थात् पिता से सम्बन्धित कारक, ये कारक भी गर्भकालीन विकास को प्रभावित करते हैं। ये कारक निम्न हैं—
  - शराब का सेवन
  - धूम्रपान
  - विकिरण से संपर्क
  - सीसे से संपर्क
- ये सभी कारक शुक्राणुओं में विकृति पैदा करते हैं, कम वजनी शिशु होने की संभावना बढ़ा देते हैं तथा शिशु में कैंसर होने की संभावना भी हो जाती है।

12. जन्म के पश्चात् का समय (Period after Birth)

- जन्म के पश्चात् विकास की विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

शैशवावस्था–(जन्म से 2 वर्ष) (Infancy Birth to 2 Years)

- इस अवस्था के दौरान विकास बहुत तेज होता है।
- शिशु बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने परिवार पर निर्भर होता है।
- परिवार के सदस्यों को पहचानने में सक्षम, स्वयं को पहचानता है और तत्काल संपर्क में रहने वाले लोगों के साथ लगाव स्थापित करता है।
- अपनी आवश्यकताओं को बता सकता है, थोड़े-थोड़े और छोटे-छोटे संवाद बोलने लगता है।
- अवधि के अंत तक चलने और दौड़ने में सक्षम होगा।

शैशवावस्था (जन्म से 2 वर्ष) की विशेषताएँ (Characteristics of Infancy Birth to 2 Years)

- दूसरों पर निर्भरता
- मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार
- अतार्किक चिंतन की आयु
- दूसरे शिशुओं के प्रति रुचि जिज्ञासा व दोहराने की प्रवृत्ति
- भावी जीवन की आधारशिला
- सीखने का आदर्श काल (वेलेंटाइन)
- कल्पना जगत (Fantasy) में विचरण
- स्वयं-केंद्रित या आत्मप्रेम की भावना
- तीव्रता से शारीरिक विकास की अवस्था
- अपीली काल (Appealing age) (हरलॉक)
- खतरनाक काल (Dangerous age) (हरलॉक)
- सांवेगिक विकास की दृष्टि से स्वर्णिम काल
- बालक के निर्माण काल की अवस्था (फ्रायड)
- काम-प्रवृत्ति (फ्रायड के अनुसार) जाग्रत होना
- शारीरिक परिवर्तनों की बाहुल्यता की अवस्था
- शारीरिक एवं मानसिक रूप से अपरिपक्व होना
- भाषा विकास की प्रक्रिया में अत्यधिक तीव्रता
- लज्जा व गर्व (Shame & Pride) की भावना का विकास
- संवेगों की प्रधानता व उनका प्रदर्शन (Showing Emotions)
- अपनी संवेदनाओं व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखना
- अनुकरण द्वारा सीखने (Learning by Imitation) की अवस्था
- शरीर के समस्त अंगों की रचना और आकृतियों का निर्माण काल
- नैतिक व सामाजिक भावना (Moral & Social Sentiment) का अभाव
- शारीरिक व मानसिक विकास (Physical and Mental Development) में तीव्रता।
- सामाजिक मुस्कान (Social Smile) विकसित करने की आयु।

बाल्यावस्था (2-12 वर्ष) (Childhood 2-12 Years)

स्कूल पूर्व के वर्ष/प्रारंभिक बाल्यावस्था (2-6 वर्ष) (Early Childhood 2-6 Years)

- शारीरिक विकास की दर प्रारंभिक अवस्था की तुलना में धीमी हो जाती है।
- दौड़ने, चढ़ने, कूदने में सक्रिय रूप से भाग लेता है और मांसपेशियों व गति कौशल के उपयोग में काफी प्रगति दिखाता है।
- इस अवस्था में बच्चों की सामाजिक दुनिया का विस्तार होता है और वे परिवार के बाहर दोस्ती करते हैं।
- वे इस स्तर पर बेहद उत्सुक और साहसी हो जाते हैं और नई सामग्री और विचारों के साथ प्रयोग करते हैं।
- संचार क्षमता तेजी से बढ़ती है।
- भाषा तेजी से विकसित होती है।
- कम समय के लिए घर से दूर रहने के लिए तैयार होते हैं और आँगनवाड़ी व प्ले स्कूल में जा सकते हैं।
- इसे समस्या आयु, खिलौना आयु, रचनात्मक आयु, समस्या आयु, प्रश्न करने की आयु, अनुकरणीय आयु तथा पूर्व विद्यालयी आयु के नाम से जाना जाता है।

उत्तर बाल्यावस्था–(6–12 वर्ष) (Late Childhood 6-12 Years)

- शारीरिक विकास धीमा हो जाता है।
- बच्चे औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शामिल हो सकते हैं।
- वे नए कौशल सीखने का प्रयास करते हैं।
- शैक्षिक और खेलों के लक्ष्यों को सक्रियता से पाते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कौशल प्राप्त करते हैं।
- मजबूत और स्थाई दोस्ती करते हैं।
- इस अवस्था का मुख्य जोर कौशल के अधिग्रहण और नए कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने पर होता है।
- इस अवस्था को गिरोह आयु या टोली आयु के नाम से भी जाना जाता है।
- प्रतीकात्मक/कल्पनाशील खेल में सक्रिय रूप से भाग लेने की आयु।

बाल्यावस्था (2-12 वर्ष) की विशेषताएँ (Characteristics of Childhood 2-12 Years)

- वैचारिक क्रिया अवस्था
- स्थूल संक्रियात्मक अवस्था
- जीवन का निर्माणकारी काल
- चुस्ती व स्फूर्ति का आयु काल
- गंदी आयु (Dirty age) की अवस्था
- अनोखा काल
- भावी जीवन निर्माण की नींव का काल

- टोली/गिरोह की आयु
- अधिकतम सामाजिकता के विकास का काल
- बच्चों में मित्र बनाने की प्रबल इच्छा होना
- 'समूह प्रवृत्ति' (Gregariousness) की अवस्था
- बच्चों में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति का विकास होना
- काम की प्रसुप्तावस्था
- शारीरिक एवं मानसिक विकास में स्थिरता होना
- प्रारंभिक विद्यालय की आयु
- कल्पना शक्ति एवं अमूर्त चिंतन के प्रारंभ का काल
- मूर्त चिंतन की अवस्था
- नये कौशलों एवं क्षमताओं के विकास का स्वर्णिम काल
- मिथ्या परिपक्वता की अवस्था
- बच्चों की जिज्ञासु प्रवृत्ति होने से उनमें जानने की प्रबल इच्छा होना
- खिलौनों की आयु (Toy age) (पूर्व बाल्यावस्था—लगभग 3 से 7 वर्ष)
- खेल की आयु (Play age) (प्रारंभिक विद्यालय आयु—लगभग 6 से 11 वर्ष)
- प्रतिद्वंद्वात्मक समाजीकरण (Competitive Socialization) का काल (किलपैट्रिक)।
- वयः सन्धिः—वय सन्धि वस्तुतः 'वाल्यावस्था' और किशोरावस्था को मिलाने की अवस्था मानी गई है। इसे पूर्व किशोरावस्था भी कहा जाता है।

किशोरावस्था—(13-21 वर्ष) (Adolescence 13-21 Years)

- किशोरावस्था वह समय है जब बालक परिपक्वता प्राप्त करने लगता है। लड़कियों में किशोरावस्था का प्रारम्भ लड़कों की अपेक्षा शीघ्र होता है। किशोरावस्था को हम दो भागों में बाँट कर देख सकते हैं—
  - पूर्व/प्रारम्भिक किशोरावस्था (बालकों के लिए 14-17 वर्ष एवं बालिकाओं के लिए 13-16 वर्ष)
  - उत्तर किशोरावस्था (बालकों के लिए 17-21 वर्ष एवं बालिकाओं के लिए 16-20 वर्ष)
- **स्टेनले हाल**, किशोरावस्था में वैज्ञानिक अनुसंधान के पिता, के अनुसार 'किशोरावस्था' अधिक तनाव और तूफान की अवस्था है।
- **स्टेनले हॉल** के अनुसार, किशोरावस्था एक अशांत समय है जिसमें संघर्ष और मूड की उथल-पुथल देखने को मिलती है।

प्रारम्भिक किशोरावस्था (Early Adolescence)

- यह अवस्था लड़के में 14-17 वर्ष तथा लड़कियों में 13-16 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में उसमें अनेक शारीरिक परिवर्तन होते हैं, क्योंकि इस अवस्था में वह बालक से बड़ा होने लगता है।
- प्रारम्भिक किशोरावस्था की अग्रलिखित विशेषताएँ हैं—
  - **प्रारम्भिक किशोरावस्था बदलाव का समय है**—इस समय बालक के शरीर में कई शारीरिक परिवर्तन आते हैं, जैसे—लड़कों के मुँह पर दाढ़ी—मूँछ उगना प्रारम्भ हो जाता है, लड़कियों में मासिक स्राव प्रारम्भ हो जाता है तथा स्तन उभर आते हैं। लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा ऊँचाई और वजन दोनों के बढ़ने की तेजी पहले आती है और पहले समाप्त होती है। इस समय व्यवहार में भी अंतर आता है। बालक-बालिकाओं में विपरीत लिंग की ओर रुचि बढ़ जाती है। लड़कों की आवाज भारी और लड़कियों की आवाज मधुर हो जाती है।
  - **प्रारम्भिक किशोर का स्तर दुविधाजनक शुरू**—शुरू में किशोर दुविधाजनक स्थिति में होता है, क्योंकि यदि वह बालकों जैसा व्यवहार करता है तो कहा जाता है कि वह बच्चा नहीं है और बड़ों जैसा व्यवहार करता है, तो कहा जाता है वह अभी प्रौढ़ नहीं हुआ है, इसलिए उसका स्तर दुविधाजनक होता है।
  - **यह संवेगों की तीव्रता का समय होता है**—पूर्व किशोरावस्था कठिनाइयों तथा परेशानियों से परिपूर्ण अवस्था होती है। इस अवस्था को अत्यधिक तनाव का समय भी कहा जा सकता है। इस समय उनका तेजी से विकास होता है। शारीरिक व मानसिक परिवर्तन के फलस्वरूप अनेक नवीनताएँ आती हैं। इसमें परिपक्वता का अभाव होता है। अतः वह कल्पना की उड़ान भरता है और इच्छाएँ पूरी न होने पर तनावग्रस्त रहता है। वह काफी भावुक होता है, संवेदनात्मक जीवन व्यतीत करता है, उसमें अत्यधिक उत्साह और गम्भीर निराशा देखी जा सकती है, क्योंकि उसके विचारों को अपरिपक्व तथा अव्यावहारिक माना जाता है। किशोर में अत्यधिक तनाव के निम्नलिखित कारण होते हैं—
    - दुविधाजनक स्तर
    - शारीरिक परिवर्तन
    - संवेगों की तीव्रता
    - माता-पिता द्वारा प्रतिबंध
  - **प्रारम्भिक किशोरावस्था में अस्थिरता पायी जाती है**—आरंभ में किशोर अपने आपको असुरक्षित समझता है, उसकी निजता में विविधता आ जाती है, वह न बालकों के साथ खेल पाता है, न बड़ों के साथ वह अपने आप को असुरक्षित समझता है। इससे उसके व्यवहार में अस्थिरता व्याप्त हो जाती है। यह सब उसके शरीर में अचानक आए परिवर्तनों के कारण होता है।
  - **युवा किशोर नाखुश रहता है**—शारीरिक परिवर्तनों के कारण किशोर को यह ज्ञात नहीं होता कि घर में और बाहर किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। अतः वह या तो बहुत शान्त या बहुत झगड़ालू हो जाता है। अधिकतर किशोर इस अवस्था में नाखुश रहते हैं।
  - **युवा किशोर की अनेक समस्याएँ होती हैं**—अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ है, युवा किशोरों की अनेक समस्याएँ होती हैं जो शारीरिक बनावट तथा स्वास्थ्य सामाजिक व्यवहार भविष्य की योजना जैसे विषयों का चुनाव आदि से सम्बधित होती हैं, क्योंकि उन पर अधिक रोक-टोक होती है।

उत्तर किशोरावस्था (Late Adolescence)

- यह अवस्था लड़कियों में 16 से 20 वर्ष तक होती है तथा लड़कों में 17 से 21 वर्ष तक होती है।
- उत्तर किशोरावस्था में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं—
    - **स्थिरता में वृद्धि**—इस समय किशोरों के व्यवहार करने में बहुत अधिक स्थिरता दिखाई देने लगती है। वे अधिक परिपक्व व्यवहार करने लगते हैं, कहने का आशय यह है कि वे बड़ों के समान व्यवहार करने लगते हैं, उनके कपड़ों, रुचि, मित्रता आदि में स्थिरता आ जाती है।
    - **समस्याओं से जूझने की हिम्मत**—अब किशोर समस्याओं को समझ कर सुलझाने लगता है, जब उसकी समस्याएँ थोड़ी सुलझने लगती हैं तो वह अच्छी तरह से समायोजन कर सकता है और अच्छी तरह से रह सकता है। अब वह परिवार के लिए समस्या नहीं होता।
    - **प्रौढ़ व्यक्तियों की ओर से कम ध्यान**—इस अवस्था में किशोरों की गिनती थोड़े बड़ों में होने लगती है। इस कारण अब बड़े उन पर कम ध्यान देते हैं तथा उन पर पाबन्दियाँ भी थोड़ी कम कर दी जाती हैं। अब किशोर भी परिवार के लिए कम समस्या पैदा करते हैं, इस अवस्था में शिक्षा भी पूरी करने वाले होते हैं।
    - **संवेगात्मक रूप में अधिक शान्त**—उत्तर किशोरावस्था में किशोर का संवेगों पर अधिक नियन्त्रण हो जाता है। शारीरिक परिवर्तन हो चुके होते हैं। इस अवस्था में वे स्वतंत्र रूप में कार्य कर सकते हैं। बड़ों का हस्तक्षेप कम होने लगता है निजता में भी स्थिरता आने लगती है। अतः वे शीघ्र उत्तेजित नहीं होते तथा संवेगों पर नियंत्रण कर सकते हैं।
    - **वास्तविकता की ओर झुकाव**—इस अवस्था में किशोर स्वयं तथा समाज के अनुभवों के आधार पर वास्तविकता की ओर ध्यान देने लगते हैं। इस कारण अब वे अधिक प्रसन्न तथा आशावान दिखाई देते हैं। इस अवस्था में वे किसी भी काम को सही रूप से देखते हैं।
    - **बड़ों का अनुकरण**—इस अवस्था में किशोर युवावस्था की ओर उन्मुख होने लगता है। अतः वह पहनावे, बात करने का ढंग आदि में बड़ों का अनुकरण करता है। बड़ों की आदतें, व्यवहार आदि अब उसमें दिखाई देने लगती हैं। अब वे बच्चा नहीं दिखना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि दूसरे व्यक्ति उन्हें बड़ा समझें।
    - बच्चों में तेज शारीरिक यौन परिवर्तन होते हैं। प्रजनन प्रणाली संरचनात्मक और कार्यात्मक दोनों रूपों में परिपक्व होती है।
    - ऊँचाई और वजन में वृद्धि होती है।
    - विकास की इस अवस्था में मित्र काफी महत्वपूर्ण लगते हैं।
    - बच्चा सक्रिय रूप से अपनी पहचान की खोज करता है और प्रश्न कि 'मैं कौन हूँ?' का उत्तर पाने की कोशिश करता है।
- इस चरण के अंत में, बच्चा परिपक्व वयस्क में विकसित होता है जो जिम्मेदारी लेने, स्थायी संबंध बनाने और एक परिवार आरंभ करने के लिए तैयार होता है।

किशोरावस्था (13 से 21 वर्ष तक) की विशेषताएँ (Characteristics of Adolescence 13 to 21 years)

- बसंत ऋतु काल
- टीन एज (Teen age)
- आदर्शवाद का काल
- बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का संधिकाल
- समस्यात्मक अवस्था
- दल भक्ति की अवस्था
- अटपटी व उलझन की अवस्था
- एज ऑफ ब्यूटी (Age of Beauty)
- विषादमय आयु (An unhappy age)
- प्रबल दबाव एवं तनाव की अवस्था
- दुरुस्त एवं तीव्र विकास की अवस्था
- विचारों की अभिव्यक्ति का विकास
- संवेगों के उथल–पुथल की अवस्था
- जीवन का सबसे कठिन काल (किलपैट्रिक)
- स्वर्ण या सुनहरी अवस्था (Golden age)
- व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ मित्रता की अवस्था
- संक्रमण काल की अवस्था/संक्रांति काल विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण की अवस्था समस्याओं की अवस्था (Age of Problems)
- प्रबल संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था
- सर्वाधिक काम प्रवृत्ति व आकर्षण की अवस्था
- आत्म-सम्मान व आत्म स्वीकृति की अवस्था
- संघर्ष और तूफान की अवस्था (स्टेनले हॉल)
- अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking) की अवस्था
- तार्किक चिंतन (Logical Thinking) की अवस्था
- अवधान या ध्यान केंद्रित करने और स्थाई स्मृति के विकास की अवस्था
- किशोरों में अनुशासन तथा सामाजिक नियंत्रण की भावना का विकास
- तीव्र मानसिक विकास, व्यवहार में विभिन्नता, स्थायित्व एवं समायोजन की समस्या
- समूह को महत्व, समूह के सक्रिय (Active) सदस्य, वीर पूजा, समाज सेवा, धार्मिक चेतना आदि की भावना का विकास
- संवेगों की मंदता की अवस्था (उत्तर किशोरावस्था में व्यवहार में स्थायित्व आने लगता है)
- अत्यधिक कामुकता का जागरण, कल्पना का बाहुल्य, आत्म-सम्मान/गौरव व परमार्थ की भावना का विकास
- बुद्धि का अधिकतम विकास, नेतृत्व की भावना, अपराध प्रवृत्ति का विकास और रुचियों में परिवर्तन।

13. अवस्था विशेष के विकासात्मक कार्य (Developmental Tasks of Specific Stages)

- प्रत्येक समाज में बच्चा एक विशेष उम्र में एक खास तरह के व्यवहार तथा कौशल को तेजी से सीखता है। यही कारण है कि शिक्षक, माता-पिता तथा समाज के अन्य लोग बच्चों से उनकी उम्र के अनुसार विशेष तरह की सामाजिक उम्मीदें बनाकर रखते हैं। वे लोग उम्मीद करते हैं कि बच्चे जिस उम्र के हो गए हैं उस उम्र की सारी अनुक्रियाएँ उन्हें करनी चाहिए। इस तरह की सामाजिक प्रत्याशा को हेबिगहर्स्ट (1972) ने विकासात्मक कार्य कहा है।
- हेबिगहर्स्ट (1972) के अनुसार, विकासात्मक कार्य को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है, "विकासात्मक कार्य वह कार्य है जो व्यक्ति के जीवन की किसी खास अवधि में या अवधि के बारे में संबंधित होता है तथा जिसकी सफल उपलब्धि से व्यक्ति में खुशी होती है और परवर्ती कार्यों को करने में उसे आनंद आता है, परंतु असफल होने से व्यक्ति में दु:ख होता है, समाज से तिरस्कार मिलता है और परवर्ती कार्यों को करने में उसे कठिनाई भी होती है।" शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार विकासात्मक कार्य से निम्नांकित तीन तरह के उद्देश्यों की पूर्ति होती है–
    - विकासात्मक कार्य से शिक्षकों तथा अभिभावकों को यह जानने में सुविधा होती है कि एक खास उम्र पर बालक क्या सीख सकते हैं और क्या नहीं।
    - विकासात्मक कार्य बालकों को उन व्यवहारों को सीखने में एक प्रेरणा का काम करता है जिसे सामाजिक समूह उसे सीखने के लिए उम्मीद करता है।
    - विकासात्मक कार्य शिक्षकों तथा माता-पिता को यह बताता है कि उन्हें अपने बच्चों से निकट भविष्य तथा सुदूर भविष्य में क्या उम्मीद करनी चाहिए। अत:, विकासात्मक कार्य शिक्षकों तथा अभिभावकों को अपने बच्चों को इस ढंग से तैयार करने की प्रेरणा देते हैं ताकि वे भविष्य की नई चुनौतियों का सामना कर सके।
- हेबिगहर्स्ट (1972) ने पूर्व बाल्यावस्था उत्तर बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा वयस्कावस्था के लिए विकासात्मक कार्य तैयार कर रखा है जिससे शिक्षकों तथा अभिभावकों को बालकों के मार्गदर्शन में काफी सहायता मिली है तथा शिक्षा जगत में इसके परिणाम काफी अच्छे देखने को मिले हैं। इन विकासात्मक कार्यो का वर्णन अवस्था विशेष हेतु निम्नांकित है–

पूर्व बाल्यावस्था के लिए विकासात्मक कार्य (Developmental Task for Early Childhood)

- विद्यालय जाने से पूर्व की अवस्था यानी 10 वर्ष से पहले की अवस्था के विकासात्मक कार्य निम्नलिखित हैं–
    - चलना सीखना
    - ठोस आहार लेना सीखना
    - बोलना सीखना
    - मल-मूत्र त्याग करना सीखना
    - यौन अंतरों तथा यौन शालीनता को सीखना
    - शारीरिक संतुलन बनाए रखना सीखना
    - सामाजिक एवं भौतिक वास्तविकता के सरलतम संप्रत्यय को सीखना
    - अपने-आपको माता-पिता, भाई-बहनों तथा अन्य लोगों के साथ सांवेगिक रूप से संबंधित करना सीखना
    - सही तथा गलत के बीच विभेद करना सीखना तथा अपने में एक विवेक विकसित करना।

उत्तर बाल्यावस्था के लिए विकासात्मक कार्य (Developmental Tasks for Late Childhood)

- विद्यालय जाने की अवस्था, यानी 5-6 साल की अवस्था से लेकर प्राक्-किशोरावस्था, यानी, 11-12 साल की अवस्था तक के विकासात्मक कार्य निम्नलिखित हैं–
    - साधारण खेलों के लिए आवश्यक शारीरिक कौशल को सीखना।
    - अपने-आपके प्रति एक हितकर मनोवृत्ति विकसित करना।
    - अपनी ही उम्र के साथियों के साथ मिलना–जुलना सीखना।
    - उपयुक्त पुरुषोचित तथा स्त्रियोचित यौन भूमिकाओं को सीखना।
    - पढ़ना-लिखना तथा गिनती करना से संबंधित मौलिक कौशल विकसित करना।
    - दिन-प्रतिदिन की सुचारु जिंदगी के लिए आवश्यक संप्रत्ययों को सीखना।
    - नैतिकता, मूल्य तथा विवेक को सीखना।
    - व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त करने की कोशिश करना।
    - सामाजिक समूहों एवं संस्थानों के प्रति मनोवृत्ति विकसित करना।

किशोरावस्था के लिए विकासात्मक कार्य (Developmental Task for Adolescence)

- जहाँ तक किशारों का प्रश्न है, विकासात्मक कार्य, जीवन्त समस्याएँ प्रस्तुत करते हैं जिनका बाल्यकाल से प्रौढ़ावस्था के रूपान्तरण की अवधि में समाधान मिलना अति आवश्यक है। किशोरावस्था में समस्याएँ पूर्ण रूप से विचित्र होती हैं, किन्तु वे एक बार ही होती हैं यदि अन्ततः वे सफल प्रौढ़ की भूमिका निभाने की आशा करते हैं तो किशोरों को इन पर अवश्य ही कार्य करना चाहिए।
- किशोरावस्था की तीनों अवस्थाओं (प्राक्किशोरावस्था, पूर्व किशोरावस्था तथा उत्तर किशोरावस्था) यानी 12-13 साल से लेकर 19-20 साल की अवधि तक के विकसात्मक कार्य निम्नलिखित हैं–
    - किसी व्यवसाय का चयन करना तथा उसके लिए अपने आपको तैयार करना।
    - पारिवारिक जीवन तथा शादी के लिए अपने-आपको तैयार करना।
    - आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति की ओर अग्रसर होना।
    - दोनों लिंगों के समन्वय मित्रों के साथ नए और अधिक परिपक्व संबंधों की प्राप्ति।
    - स्त्रीलिंग या पुल्लिंग सामाजिक भूमिका प्राप्त करना।
    - अपने शारीरिक गठन को स्वीकारना और शरीर का प्रभावी उपयोग करना।

- माता-पिता और अन्य प्रौढ़ों की संवेगात्मक स्वतंत्रता प्राप्त करना।
- व्यवसाय का चयन और तैयारी करना।
- विवाह और पारिवारिक जीवन की तैयारी।
- नागरिक नुपिणता के लिए बौद्धिक कुशलता और आवश्यक संकल्पनाओं का विकास करना।
- उत्तरदायी सामाजिक व्यवहार की इच्छा करना और प्राप्त करना।
- व्यवहार को निर्देशित करने के लिए मूल्यों और एक नीतिगत तंत्र की प्राप्ति।

14. विकास के आयाम और विचलन (Domains of Development and Deviations)

- **शारीरिक विकास**—शारीरिक विकास ऊँचाई, वजन और शरीर के अनुपात में परिवर्तन को दर्शाता है। उदाहरण के लिए बचपन में शिशु का वजन पहले 6 महीनों में लगभग दोगुना हो जाता है और पहले साल में तीन गुना लंबाई प्रथम वर्ष में 50 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। शरीर की सभी प्रणालियाँ परिपक्व होने लगती हैं।
- **गत्यात्मक विकास**—गत्यात्मक विकास माँसपेशियों का विकास और गति में उनका उपयोग है। सकल गत्यात्मक विकास बड़ी मांसपेशी समूहों पर नियंत्रण करने को संदर्भित करता है, जो रेंगने, खड़ा होने, घूमने, चढ़ाने और चलाने जैसे कार्य निष्पादन में सहायता करता है। उचित गत्यात्मक विकास में छोटी माँसपेशियों का उपयोग होता है और इसमें चीजों को पकड़ना शामिल होता है जैसे एक कप को पकड़ना, पुस्तक के पन्नों को मोड़ना, बटन और चेन लगाना, चित्र बनाना, लिखना आदि; जैसे—जैसे बच्चे का विकास होता है वे अब तक प्राप्त गति संबंधी कौशल को सुधारते हैं और नए कौशल को प्राप्त करते हैं।
- **क्रियात्मक विकास**
  - क्रियात्मक विकास का अर्थ शरीर में मांसपेशियों के विकास से है।
  - बच्चे सकल और बड़ी मांसपेशियों की मदद से विभिन्न कौशल सीखते व प्राप्त करते हैं। इसलिए इन्हें क्रियात्मक विकास के रूप में भी जाना जाता है।
  - यह विकास शारीरिक गतिविधियों, तंत्रिका केंद्रों, तंत्रिकाओं और मांसपेशियों के माध्यम से शरीर पर नियंत्रण को समन्वित करता है।
  - क्रियात्मक विकास के अध्ययन के अनुसार ज्ञात होता है कि यह एक सामान्य पैटर्न है तथा मांसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त करने का एक विशिष्ट अनुक्रम है।
  - बाल्यावस्था को कौशल सीखने के लिए आदर्श काल माना गया है, क्योंकि इस अवस्था में बच्चों के शरीर अधिक लचीले होते हैं, तथा आसानी से कौशल सीख लेते हैं।
  - बच्चे दो प्रकार के मोटर कौशल विकसित करते हैं, सकल/स्थूल एवं ठीक/सूक्ष्म (उत्कृष्ट) गत्यात्मक कौशल।
- **सकल स्थूल क्रियात्मक कौशल**
  - स्थूल गत्यात्मक कौशल में बड़ी मांसपेशियाँ बच्चों की क्रियाओं को नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करती हैं। जैसे—रेंगना, खड़ा होना, चलना, चढ़ना, दौड़ना आदि।
  - जैसे–जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हम जिस तरह से स्थूल कौशल का उपयोग करते हैं, वह विकसित और बदल जाता है। यहाँ स्थूल गत्यात्मक कौशल के उदाहरण वे हैं जो लोग हर दिन उपयोग कर सकते हैं जैसे—कूदना, संतुलन बनाना, गेंद कौशल के दौरान गेंद फेंकना व गेंद पकड़ना, गेंद में लात मारना, सीढ़ियों पर ऊपर और नीचे जाना, बाइक चलाना, अलमारी खोलना से कुछ निकालने के लिए ऊपर की ओर हाथ पहुँचाना। साधारणतः ये अंग या पूरे शरीर को शामिल करते हैं।
  - **ठीक (उत्कृष्ट सूक्ष्म) क्रियात्मक कौशल**—सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल में छोटी मांसपेशियाँ शामिल होती हैं एवं हाथों और उँगलियों के उपयोग को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता करती है। ठीक मोटर कौशल के विकास में सामान्यतः आँखों का समन्वय भी शामिल होता है, जो हाथों की गति को आँखों के साथ मिलाने की क्षमता रखता है।
  - सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल बच्चों को विभिन्न वस्तुओं को पकड़ने, स्थानान्तरित करने एवं सँभालने में मदद करता है। बच्चों की अधिकांश गतिविधियों के साथ–साथ बड़े लोगों की गतिविधियों के लिये सकल और ठीक मोटर कौशल के संयोजन की आवश्यकता होती है।
  - निम्नलिखित गतिविधियाँ भी ठीक मोटर कौशल के उदाहरण हैं जैसे—फोन डायल करना, दरवाजे की कुण्डी लगाना, चाबियों से ताले खोलना, सॉकेट में प्लग लगाना, दाँतों को ब्रश करना, जूतों के फीते बाँधना, लिखना, सुई में धागा डालना, धागे में मोती पिरोना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ बनाना, आदि।
- **सामाजिक विकास**—सामाजिक विकास अन्य लोगों के साथ बातचीत करने, संबंधों को विकसित करने और बनाए रखने, साझा करने, सहयोग और एक समूह में रहने में बच्चे की क्षमता को दर्शाता है। इसमें उस समाज के सामाजिक मानदंडों का सीखना शामिल है जिसमें वह बड़ा हो रहा है और इसलिए समाज का एक उत्पादक सदस्य होने के लिए परिपक्व होता है।
- **भावनात्मक विकास**—भावनात्मक विकास प्रेम, क्रोध, भय, खुशी, प्रसन्नता और अन्य भावनाओं के साथ ही सामाजिक रूप से स्वीकार्य और उचित तरीके से इन भावनाओं को व्यक्त करने के सीखने के तरीके के उद्‌भव को दर्शाता है। उदाहरण के लिए दो वर्ष के बच्चे को दूसरों को मारने के लिए माफ किया जा सकता है, लेकिन एक बड़े बच्चे को शारीरिक आक्रामकता नियंत्रित करनी होगी और मारने के अलावा अन्य तरीकों से गुस्सा व्यक्त करना सीखना होगा। इस तरह भावनात्मक विकास सिर्फ भावनाओं का अनुभव नहीं है बल्कि उनकी उचित अभिव्यक्ति भी है।
- **भाषा का विकास**—भाषा का विकास मौखिक रूप से अन्य लोगों के साथ संवाद करने की क्षमता प्राप्त करने को बताता है। जन्म के समय शिशु की मुख्य वाचिक क्षमता रोना होती है। समय के साथ जब वह बड़ा होता है तो एक–दो शब्द बोलना शुरू करता है; जैसे—पापा, मम्मी, दादा आदि। जब वह दो साल का होता है वह सरल वाक्य बोलने में सक्षम होता है; जैसे—'मुझे पानी दो आदि और छह वर्ष की उम्र तक धारा प्रवाह बोलने

में सक्षम होता है। शब्दावली, व्याकरण और संचार कौशल का विकास एक व्यक्ति की भाषा के विकास के अध्ययन का हिस्सा है।

- **संज्ञानात्मक विकास**—संज्ञानात्मक विकास, तर्क, स्मृति, समस्या सुलझाना, समझ, याद करना, धारणा और अवधारणा बनने जैसी उच्च मानसिक प्रक्रियाओं के विकास को दर्शाता है। अनुभूति का संबंध इस बात से है कि हम कैसे हमारे आसपास की दुनिया को जानते हैं । हम में से हर एक लोगों और घटनाओं के बारे में हमारे अपने विचार हैं। हम कैसे इन विचारों और विश्वासों को स्थापित करते हैं? कैसे ज्ञान विकसित होता है? अनुभूति, विचार और ज्ञान के विकास से संबंधित है। यह सूचनाओं को प्राप्त करने और व्याख्या करने की प्रक्रिया है और कार्रवाई के लिए इसका उपयोग कैसे किया जाता है? अनुभूति का विकास व्यक्ति को वातावरण और परिस्थितियों को स्वीकार करने में मदद करता है। विचारों के विकास के साथ व्यक्ति अधिक प्रभाव के साथ स्थितियों को समझने और संभालने में सक्षम होता है। संज्ञानात्मक विकास को बच्चों में कई प्रेरक गतिविधियों के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है।
- **नैतिक विकास—**नैतिक विकास के अन्तर्गत नैतिक व्यवहार तथा नैतिक अवधारणाओं का विकास सम्मिलित है। यह बचपन से वयस्कता के मध्य नैतिकता के उत्थान परिवर्तन और समझ पर केंद्रित है।

15. विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास (Physical Development in Different Stages)

शैशवावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development in Infancy)

- शैशवावस्था जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। शिशु का शारीरिक विकास जन्म के पूर्व गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है। इस समय माता के खान–पान, रहन–सहन, स्वास्थ्य एवं उसके संवेगात्मक संतुलन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस अवस्था में विकास निम्न रूपों में देखा जा सकता है—
  - **आकार और भार—**नवजात शिशु की औसत लंबाई 19 इंच अर्थात् 17-20 इंच के बीच होती है। जन्म के समय एक सामान्य बालक का भार लगभग 7 पाउंड होता है और इस अवधि के दौरान बालक में संवेदी पेशी कौशल विकसित होता है।
  - **अनुपात में परिवर्तन**—जन्म के समय बालक का शरीर अनाकर्षक होता है। धीरे-धीरे शरीर के विभिन्न अंग जैसे हाथ और धड़ समानुपातिक आकार लेने लगते हैं और जन्म के समय बड़ा दिखने वाला सिर अब छोटा लगने लगता है, क्योंकि पैर और हाथ लंबाई में बढ़ जाते हैं।
  - **हड्डियाँ और पेशियाँ**—हड्डियों और माँसपेशियों में तेजी से वृद्धि होती है। नवजात की हड्डियाँ लचीली होती हैं। वे पहले वर्ष में सख्त होने लगती हैं।
  - **दाँत**—जन्म के समय शिशु के मुँह में दाँत नहीं होते हैं। छह महीने की आयु में पहला दाँत निकलता है। पहले साल के अंत तक बालक के मुँह में पाँच से छः दाँत आ जाते हैं और दूसरे साल के अंत तक बालक के मुँह में 16 दाँत आ जाते हैं।
  - **दिल की धड़कन**—शैशवावस्था के पहले महीने के दौरान, बालक का दिल एक मिनट में 140 बार तक धड़कता है, लेकिन पहले 6 महीनों में यह धीमा होकर लगभग 100 धड़कन प्रति मिनट तक धीमा हो जाता है।
- **बाल्यावस्था में शारीरिक विकास**—बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल होता है। ये अवस्था 2 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। बाल्यावस्था के प्रथम तीन वर्षों में शारीरिक विकास तीव्रगति से होता है और बाद के तीन वर्षों में इस विकास में स्थिरता आ जाती है।
- **शारीरिक वृद्धि एवं विकास—**प्रारम्भिक बाल्यावस्था में शारीरिक वृद्धि तीव्र गति से होती है, परन्तु उत्तरवर्ती बाल्यावस्था में शारीरिक वृद्धि मंद, स्थिर एवं एकसमान होती है तथा बालक के पेशीय समन्वय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। बालक इस अवधि के दौरान शरीर पर नियंत्रण हासिल कर लेता है और स्वतंत्र रूप से चलने में सक्षम भी हो जाता है। बालक अपनी मातृभाषा में बोलने का कौशल भी सीखता है। इसी अवस्था में दूध के दाँत गिरने लगते हैं और इन अस्थायी दाँतों की जगह स्थायी दाँत ले लेते हैं। इस अवस्था में बालिकाओं की लम्बाई और भार अधिक बढ़ता है, परंतु बालक के समग्र रूप में परिवर्तन होता है।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development in Adolescence)

- **लंबाई और भार में वृद्धि**—किशोरों की लंबाई तेजी से बढ़ती है। हड्डियों और मांसपेशियों के बढ़ने से भार भी बढ़ता है। आमतौर पर बालक बालिकाओं की तुलना में भारी और लम्बे होते हैं।
- **शारीरिक अनुपात में बदलाव**—शरीर के अलग–अलग हिस्से अलग–अलग दर से बढ़ते हैं और अपने अंतिम आकार तक पहुँचते हैं, कंधे किशोरावस्था में चौड़े हो जाते हैं।
- **चेहरे की विशेषताएँ**—बालक और बालिकाओं में उनके लिंग की विशिष्ट विशेषताएँ विकसित हो जाती हैं। हड्डियों और मांसपेशियों का तेजी से विकास होने से बालिकाओं की मांसपेशियाँ नरम रहती हैं जबकि बालकों की मांसपेशियाँ सख्त और दृढ़ हो जाती हैं।
- **स्वर में बदलाव**—बालकों और बालिकाओं के स्वर में विशेष परिवर्तन होता है। बालकों का स्वर गहरा और कठोर हो जाता है। बालिकाओं के स्वर में तीखापन आ जाता है और वह मधुर हो जाता है।
- **पाचन तंत्र**—किशोरावस्था के दौरान पाचन तंत्र के अंग गुणात्मक परिवर्तन से गुजरते हैं। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप किशोरावस्था में अधिक खाने की इच्छा होती है।
- **नाड़ी की गति में वृद्धि**—शरीर के अन्य अंगों की तरह हृदय का आकार और भार बढ़ जाता है। बालिकाओं की तुलना में बालकों में वृद्धि की दर अधिक होती है। दोनों की नाड़ी दर बढ़ जाती है।

16. विभिन्न अवस्थाओं में मानसिक विकास (Mental Development in Different Stages)

शैशवावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Infancy)

- जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क पूर्णतया अविकसित होता है और वह अपने वातावरण को नहीं जानता, परन्तु जैसे-जैसे उसका मस्तिष्क

विकसित होता है, उसे अपने वातावरण के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त होता जाता है।

- जन्म से तीन माह तक शिशु केवल अपने हाथ-पैर हिलाता है। भूख लगने पर रोता है। हिचकी लेना, दूध पीना, कष्ट का अनुभव करना, चौंकना आदि। चमकदार चीज को देखकर आकर्षित होना या कभी-कभी हँसना आदि क्रियाएँ करता है।
- चार से छः मास तक शिशु व्यंजनों की ध्वनियाँ करता है। वस्तुओं को पकड़ने का प्रयास करता है। सुनी हुई आवाज का अनुकरण करता है व अपना नाम समझने लगता है।
- सातवें मास से नौवें मास तक वह घुटने के बल चलने और सहारे से खड़ा होने लगता है।
- दसवें माह से 1 वर्ष तक वह बोलने का अनुकरण करता है।
- दूसरे वर्ष से शब्द व वाक्य बोलने लगता है।
- तीसरे वर्ष में पूछे जाने पर अपना नाम बताने लगता है या छोटी–छोटी कहानी भी सुनाता है। अपने शरीर के अंग पहचानने लगता है।
- इस प्रकार शैशवावस्था में मानसिक विकास शीघ्रता से होता है। तर्क व निर्णय करने की क्षमता अधिक विकसित नहीं होती है। जन्म से शिशु की स्मरण शक्ति बहुत कम होती है। ज्ञानेन्द्रियों के विकास के साथ संवेदन क्रिया आरम्भ हो जाती है। इस अवस्था में बच्चे कल्पना जगत में रहते हैं। वे अधिकतर अनुभव, निरीक्षण व अनुकरण द्वारा सीखते हैं। वह छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान करने लगते हैं।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Childhood)

- बालक की शारीरिक आयु के साथ-साथ मानसिक विकास भी होने लगता है। बच्चे स्कूल जाने लगते हैं, इसलिए उन्हें मानसिक विकास के अधिक अवसर मिलते हैं।
- इस अवस्था में बालक के समझने, स्मरण करने, विचार करने, समस्या का समाधान करने, तर्क चिन्तन व निर्णय लेने आदि की क्षमता का विकास समुचित मात्रा में हो जाता है। वह छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन करने लगता है।
- बच्चों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का संचय करने की क्षमता विकसित होती है व वह रचनात्मक कार्यों में रुचि लेने लगता है जैसे—उसे लकड़ी, कागज व मिट्टी की वस्तुओं को बनाने में आनन्द मिलता है।
- बच्चे समूह में रहना व कार्य करना पसन्द करते हैं। साथ ही अनुकरण, सहानुभूति व सहयोग आदि की सामान्य प्रवृत्तियों का विकास भी इस अवस्था में हो जाता है।
- बच्चे पढ़ने लिखने व सीखने में अधिक रुचि लेते हैं।
- खेल उनकी दिनचर्या का प्रमुख अंग बन जाता है। वे पहेली बुझाने व समस्यात्मक खेलों में रुचि लेने लगते हैं।
- बच्चे पर्यावरण की वास्तविकताओं को समझने लगते हैं और उनमें आत्मविश्वास विकसित हो जाता है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Adolescence)

- किशोरावस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमाओं को छू लेता है।
- किशोर–किशोरियों की स्मरण शक्ति में स्थायित्व आने लगता है। उनकी कल्पना, चिन्तन, तर्क विश्लेषण, संश्लेषण, अमूर्त चिन्तन, समस्या समाधान जैसी उच्च मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास हो जाता है, लेकिन वे उसका उपयोग प्रौढ़ों की तरह करने में समर्थ नहीं होते हैं।
- इस अवस्था में कल्पना की बहुलता होती है, वे कभी-कभी दिवा स्वप्न भी देखते हैं।
- किशोरावस्था में शब्द भण्डार अधिक बढ़ जाता है और चिन्तन, तर्क व कल्पना शक्ति के साथ किशोर/किशोरी में वाक्पटुता आ जाती है।
- इस अवस्था में किशोर/किशोरी की रुचियों में भी तीव्र विकास होता है। आकर्षक व्यक्तित्व, वेशभूषा, पढ़ाई-लिखाई, पौष्टिक भोजन, भावी रोजगार कम्प्यूटर, इन्टरनेट, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रति किशोर/किशोरी की विशेष रुचि होती है।
- इस अवस्था में बच्चा बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसित होता है, इसलिए किशोर/किशोरी को नये ढंग से समायोजन करना पड़ता है।

17. विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Infancy)

- संवेगात्मक विकास मानव जीवन के विकास व उन्नति के लिए आवश्यक है। यह विकास मानव जीवन को बहुत प्रभावित करता है व इसी से उसके व्यक्तित्व निर्माण में सहायता मिलती है। जब व्यक्ति अपने संवेगों; जैसे—भय, क्रोध, प्रेम आदि का सही प्रकाशन करना सीख लेता है, तो उसे संवेगात्मक विकास कहते हैं।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Infancy)

- शिशुओं का संवेगात्मक विकास धीरे-धीरे अस्पष्टता की ओर होता है।
- विशिष्ट संवेग मन्द गति के स्वभाव के साथ जुड़ता है।
- शारीरिक आयु के साथ-साथ संवेगात्मक विकास में तीव्रता होती है।

शिशु के संवेगात्मक विकास को हम निम्न रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं—

क्रम संख्या	आयु माह	संवेग प्रकार
1.	जन्म के समय	उत्तेजना
2.	1 माह	पीड़ा—आनन्द
3.	3 माह	क्रोध
4.	4 माह	परेशानी
5.	5 माह	भय
6.	10 माह	प्रेम
7.	15 माह	ईर्ष्या
8.	24 माह	खुशी-प्रसन्नता

- शैशवावस्था में मुख्यतया भय, क्रोध व प्रेम आदि तीन ही संवेगों का विकास होता है।
- शिशु थोड़ी-थोड़ी देर में अपने संवेगों को बदलते रहते हैं। वह कभी रोता है, तो कभी हँसता है और कभी-कभी दोनों का प्रकटीकरण साथ-साथ ही करने लगता है।
- शैशवावस्था के अन्तिम चरण में वातावरण संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने लगता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Childhood)

- इस अवस्था में संवेगों में स्थायित्व आना प्रारम्भ हो जाता है।
- बालक संवेग व समाज के नियमों में समायोजन करने लगता है।
- वह प्रत्येक क्रिया के प्रति प्रेम, ईर्ष्या, घृणा व प्रतिस्पर्धा की भावना प्रकट करने लगता है।
- माता–पिता द्वारा बताये कार्य के प्रति वह हाँ या न कहकर चुप रहता है और बाद में झूठ बोलकर अपने को उपेक्षा से बचाता है।
- इस अवस्था के अन्तिम चरणों में वह संवेगों पर नियन्त्रण करना सीख जाता है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Adolescence)

- किशोरावस्था में प्रवेश करने पर किशोर/किशोरी से अनुशासित जीवन व्यतीत करने की आशा की जाती है, पर परिणाम ठीक इसके विपरीत होता है। हम उन्हें न तो बालकों की कोटि में रखते हैं न बड़ों की कोटि में इस अवस्था में सबसे अधिक संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है।
- किशोर/किशोरी में प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति आदि संवेग स्थायी रूप धारण कर लेते हैं। वह इन पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। अतः सामान्यतः अन्यायी व्यक्ति के प्रति क्रोध व दुःखी व्यक्ति के प्रति दया की अभिव्यक्ति करता है।
- किशोर/किशोरी की शारीरिक शक्ति की उनके संवेगों पर छाप होती है जैसे सबल व स्वस्थ किशोर में संवेगात्मक स्थिरता व निर्बल व अस्वस्थ किशोर में संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है।
- किशोर/किशोरी अनेक बातों के बारे में चिन्तित रहते हैं। उदाहरणार्थ— अपनी आकृति, स्वास्थ्य, सम्मान, धन प्राप्ति, शैक्षिक प्रगति, सामाजिक सफलता आदि।
- किशोर न तो बालक समझा जाता है न प्रौढ़। अतः उसे अपने संवेगात्मक जीवन में वातावरण से अनुकूलन में बहुत कठिनाई होती है। यदि वह अपने प्रयास में असफल रहता है, तो उसे घोर निराशा होती है। ऐसी स्थिति में वह कभी-कभी घर से भाग जाता है या आत्महत्या तक का शिकार हो जाता है।
- किशोरावस्था में असाधारण रूप से शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होते हैं। किशोर और किशोरी दोनों में काम प्रवृत्ति इतनी तीव्र होती हैं जो कि उसके संवेगात्मक व्यवहार पर बहुत अधिक प्रभाव डालती हैं।

18. विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक विकास (Social Development in Different Stages)

शैशवावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Infancy)

- शिशु जन्म से सामाजिक नहीं होता। जन्म के बाद अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के प्रति प्रतिक्रिया करता है। इस प्रकार सामाजिक प्रक्रिया प्रथम सम्पर्क में प्रारम्भ होकर जीवनपर्यन्त चलती है।
- हम शिशु के सामाजिक विकास को निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं—

क्रम संख्या	आयु माह	समाजिक व्यवहार का रूप
1.	प्रथम माह	ध्वनियों में अन्तर करना।
2.	द्वितीय माह	मानव ध्वनि पहचानना, मुस्कराकर स्वागत करना।
3.	तृतीय माह	माता के लिए प्रसन्नता व माता के अभाव में दुःख।
4.	चतुर्थ माह	परिवार के सदस्यों को पहचानना।
5.	पंचम माह	प्रसन्नता व क्रोध में प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
6.	षष्ठम् माह	परिचितों से प्यार व अन्य लोगों से भयभीत होना।
7.	सप्तम माह	अनुकरण के द्वारा हाव–भाव सीखना
8.	अष्टम एवं नवम् माह	हावभाव के द्वारा विभिन्न संवेगों (प्रसन्नता, क्रोध, भय) का प्रदर्शन करना।
9.	दशम एवं ग्याहरवें माह	प्रतिछाया के साथ खेलना, नकारात्मक विकास
10.	दूसरे वर्ष की अवधि में	बड़ों के कार्यों में सहायता करना, सहयोग, सहानुभूति का विकास।

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Childhood)

- शिशु का संसार परिवार व बालक का संसार परिवार के बाहर संगी-साथी व विद्यालय होता है।
- बालक एवं बालिकाओं में सामाजिक जागरूकता, चेतना व समाज के प्रति रुझान होता है। वो समूह का सदस्य होने के नाते समाज या समूह के आदर्शों का पालन करते हैं।
- इस आयु के बच्चे बालक बालिकाएँ अपने समूह अलग–अलग बनाते हैं। उन्हें खेल अधिक प्रिय होते हैं। वे अपने समूह में नियमों का पालन करते हैं।
- इस अवस्था में बच्चे मित्र बनाने लगते हैं। वे अधिकतर कक्षा के सहपाठी को ही मित्र बनाते हैं।
- इस आयु में बच्चे आत्मनिर्भर होने का प्रयास करते हैं। वे घर से बाहर निकलकर अन्य बालकों के साथ समय बिताते हैं, कार्य करते हैं व निर्णय भी लेते हैं। उनमें आत्मसम्मान की मात्रा अधिक होती है।

- बाल्यावस्था में बालकों में प्रवृत्तियों, चारित्रिक गुण व नागरिक गुणों आदि का विकास होता है। वे अपने माता-पिता, अध्यापक आदि के व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं और उनकी विशेषताओं को सीखते हैं।
- इस अवस्था में बच्चे आत्मकेन्द्रित या स्वार्थी नहीं होते, बल्कि वे समाज में अपने को समायोजित करते हैं।
- इस अवस्था में बच्चों में नेता बनने की भावना दिखाई देती है व सामाजिक प्रशंसा व स्वीकृति प्राप्त करने की प्रवृत्ति होती है।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Adolescence)

- किशोरावस्था मानव जीवन की अनोखी अवस्था होती है। उसके प्रति दूसरों के और दूसरों के प्रति उसके दृष्टिकोण न केवल उसके अनुभवों में वरन् उसके सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन लाने लगते हैं। इससे उसके सामाजिक विकास पर भी निम्न प्रभाव पड़ता है—
    - इस अवस्था में किशोर/किशोरी में आत्मप्रेम की भावना बहुत अधिक होती है। वे अपनी वेश–भूषा पर विशेष ध्यान देते हैं तथा स्वयं को आकर्षक दिखाने में अधिक समय व्यतीत करते हैं।
    - इस अवस्था किशोर/किशोरी में विषमलिंगी के प्रति आकर्षण होने लगता है। वे एक-दूसरे के साथ समय बिताने के लिए उत्सुक रहते हैं।
    - इस आयु में बच्चे अपने समूह के सक्रिय व प्रतिष्ठित सदस्य बन जाते हैं और वो समूह के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।
    - इस आयु में बच्चों में आत्मसम्मान की भावना बहुत अधिक होती है और वो अपने को बच्चा न मानकर वयस्क मानते हैं।
    - किशोर/किशोरी में संवेगों की तीव्र अभिव्यक्ति होती है। वे अपनी इच्छाओं को समाज के मापदण्ड के खिलाफ भी पूरा करना चाहते हैं, इसलिए उनके समायोजन में अस्थिरता आ जाती है।

विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development in Different Stages)

- **संज्ञानात्मक विकास** (Cognitive development)—संज्ञानात्मक विकास मानसिक प्रक्रियाओं और क्षमताओं की एक विस्तृत विविधता का विकास है, जिसमें संवेदी क्षमता, ध्यान, स्मृति, धारणा, अवधारणा, समस्या समाधान, कल्पना, रचनात्मकता एवं भाषा के माध्यम से दुनिया का प्रतिनिधित्व करने की अनूठी मानवीय क्षमता ये शामिल हैं।
- **पियाजे** के अनुसार दुनिया के बारे में बच्चों की समझ का विस्तार होता है, क्योंकि वे नये विचारों और चुनौतियों का अनुभव करते हैं।
- बच्चे अपने परिवेश के साथ अन्तःक्रिया करके अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। बच्चों के परिपक्व होने पर संज्ञानात्मक विकास आगे बढ़ता है।
- जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार चरणों में विभाजित किया है। ये चरण सभी बच्चों में क्रमानुसार दिखाई देते हैं, एवं किसी भी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता है। हालाँकि जब बच्चे इन चरणों से गुजरते हैं, तो निश्चित रूप से कुछ भिन्नताएँ प्रदर्शित हो जाती हैं।

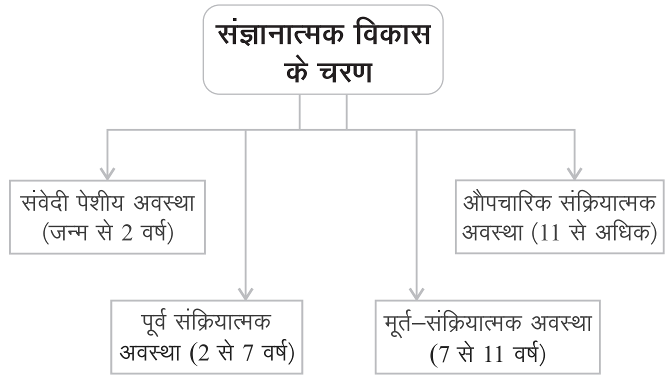

- **संवेदी पेशीय अवस्था (जन्म से 2 वर्ष)**—संवेदी पेशीय अवस्था (सेंसरिमोटर) को पियाजे द्वारा प्रस्तावित संज्ञानात्मक विकास के पहले चरण के रूप में जाना जाता है। यह चरण जन्म से दो वर्ष की आयु तक होता है।
    - पियाजे का मानना था कि शिशु सक्रिय सीखने वाले होते हैं, जो वातावरण में उत्तेजना के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
    - शिशु तेजी से सीखते हैं और वातावरण की विभिन्न विशेषताओं के बीच जल्द ही अंतर करने लगते हैं।
    - **उदाहरण के लिये**—एक शिशु चम्मच से दूध पीने में एवं माँ का दूध पीने में अन्तर करना सीख लेता है, एवं उसी के अनुरूप अलग-अलग तरीके से मुँह खोलता है।
    - संज्ञानात्मक, सीखने के लिये प्रतिवर्ती क्रियाएँ जैसे—चूसना, पकड़ना आदि बच्चे को विरासत में मिलती है तथा ये सीखने के लिये निर्माण खंड (आधार) का कार्य करती है।
    - शिशु अपने वातावरण में दूसरों का अनुकरण कर नकल करना सीखते हैं। जैसे-जैसे शिशु बड़े होते हैं, वे उस व्यक्ति का भी अनुकरण कर नकल करना सीख जाते हैं, जो तत्काल वातावरण में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं हैं। इसे आस्थगित/विलम्बित अनुकरण कहा जाता है।
    - धीरे-धीरे शिशु वस्तु स्थायित्व को विकसित कर लेते हैं, अर्थात् यह समझ विकसित कर लेते हैं कि वस्तुएँ दृष्टि से दूर होने पर भी मौजूद रहती हैं। उदाहरण के लिए—एक चार महीने का बच्चा एक गेंद की तलाश नहीं करता है। जिससे वह खेल रहा था, लेकिन 15 महीने का बच्चा यह क्रिया निश्चित रूप से करेगा।
- **पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)**—यह संज्ञानात्मक विकास का दूसरा चरण है जो मूल रूप से एक पूर्व तार्किक चरण है, क्योंकि बच्चे में तर्क अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ है।
    - यह स्तर दो से सात साल की उम्र तक होता है। इसमें कुछ संज्ञानात्मक सीमाएँ हैं, जो इस स्तर पर बच्चों के संज्ञान की विशेषताओं को सम्मिलित करती हैं। ये निम्न प्रकार हैं—
        - **वस्तु स्थायित्व**—इस चरण के दौरान वस्तु स्थायित्व की अवधारणा का विकास ही प्रमुख विकास है। यह इस बात को समझने की क्षमता है कि वस्तुओं और घटनाओं का तब भी अस्तित्व बना रहता है जब उन्हें देखा या सुना नहीं जाता है।

- **एनिमिस्टिक और अतार्किक सोच**—इस स्तर पर बच्चे सोचते हैं कि निर्जीव वस्तुएँ जीवन जैसे गुण भी रखते हैं।

  उदाहरण के लिए, बच्चे यह तर्क दे सकते हैं कि यदि कोई वस्तु गति कर रही है, तो वह जीवित है और यदि वह गति नहीं कर रही है तो वह जीवित नहीं है। इस स्तर पर बच्चे के लिये बादल जीवित वस्तु के अन्तर्गत ही आते हैं।
- **अहंकारीवाद**—बच्चे सोचते हैं कि हर कोई वैसा ही सोचता है, जैसा वे सोचते हैं और दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने में असफल हो जाते हैं। अपनी सोच को प्राथमिकता देते हैं।
- **प्रतिवर्तिता** (विपरीत)—बच्चे यह नहीं समझते हैं कि किसी भी गतिविधि के लिए घटनाओं को प्रारंभिक बिन्दु पर वापस खोजा जा सकता है। उदाहरण के लिए—यदि एक लम्बे गिलास से चौड़े गिलास में पानी डाला जाता है तो पानी को मूल अवस्था में लाने के लिए लम्बे गिलास में वापस डाला जा सकता है।
- **संरक्षण**—बच्चों में इस स्तर पर संरक्षण करने की क्षमता का अभाव होता है, जिसका अर्थ है कि वे यह समझने में विफल हो जाते हैं, कि किसी वस्तु का बाहरी स्वरूप बदल जाता है, लेकिन उस वस्तु के भौतिक गुण समान रहते हैं।

  उदाहरण के लिए—यदि हम दो गिलास में बराबर मात्रा में पानी डालते हैं, जबकि एक गिलास लम्बा और दूसरा चौड़ा है और यदि हम बच्चों से पूछें कि किस गिलास में अधिक पानी है तो बच्चे कई दृष्टिकोणों को समझने में विफल होते हैं, और वस्तु को एक से अधिक विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर उपश्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं।

- **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष)** —मूर्त संक्रियात्मक अवस्था सात वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर 11 वर्ष तक जारी रहती है।
  - इस स्तर पर संवेदी पेशीय अवस्था की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं।
  - बच्चों में तार्किक सोच विकसित होती है, लेकिन काल्पनिक स्थितियों में तर्क लागू करने में कठिनाई होती है।
  - बच्चों का तर्क वस्तुओं और स्थितियों की ठोस अवलोकन योग्य विशेषताओं तक सीमित रहता है।
  - बच्चे इस अवस्था में दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में सक्षम होते हैं।
  - मूर्त संक्रियात्मक अवस्था के बच्चों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक विकेन्द्रीकरण दृष्टिकोण है।
  - इस स्तर पर बच्चों की सोच किसी वस्तु के केवल एक पहलू पर केंद्रित नहीं होती है।
  - वस्तुओं को वर्गीकृत करते समय बच्चा एक से अधिक पहलुओं को ध्यान में रख सकता है।
  - बच्चों के पास विचारों की उत्क्रमणीयता होती है, जहाँ वे एक विचार या संचालन को आगे या पीछे की ओर ले जा सकते हैं।
  - वे वस्तु की परिभाषित विशेषताओं के आधार पर वस्तु को क्रमबद्ध क्रम में व्यवस्थित कर सकते हैं, इसे शृंखला कहते हैं।
  - **उदाहरण के लिए**—वे विभिन्न आकारों की पेंसिल के एक सेट को आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित कर सकते हैं।
  - ये सभी विशेषताएँ उन्हें संज्ञानात्मक विकास के पूर्व संक्रियात्मक चरण में उपस्थित बच्चों की तुलना में बेहतर समस्या–समाधानकर्ता बनाती हैं।
- **अमूर्त-संक्रियात्मक अवस्था या औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष से अधिक)**— मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था ग्यारह वर्ष की आयु से प्रारम्भ होती है।
  - इस अवस्था में बच्चे उच्च कोटि के मानसिक कार्य करने में सक्षम होते हैं।
  - बच्चों की सोच लचीली होती है और वे तर्क से जुड़ी जटिल समस्याओं से प्रभावी ढंग से निपट सकते हैं।
  - इस अवस्था में औपचारिक विचारों की परिभाषित विशेषताओं में से एक काल्पनिक सह–निगमनात्मक तर्क करने की क्षमता भी उपस्थित रहती है।
  - किशोर परिकल्पना बना सकते हैं और समस्या को हल करने के सभी संभावित समाधान ढूँढ़ सकते हैं तथा पुनः हल करने के लिये सबसे उपयुक्त समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

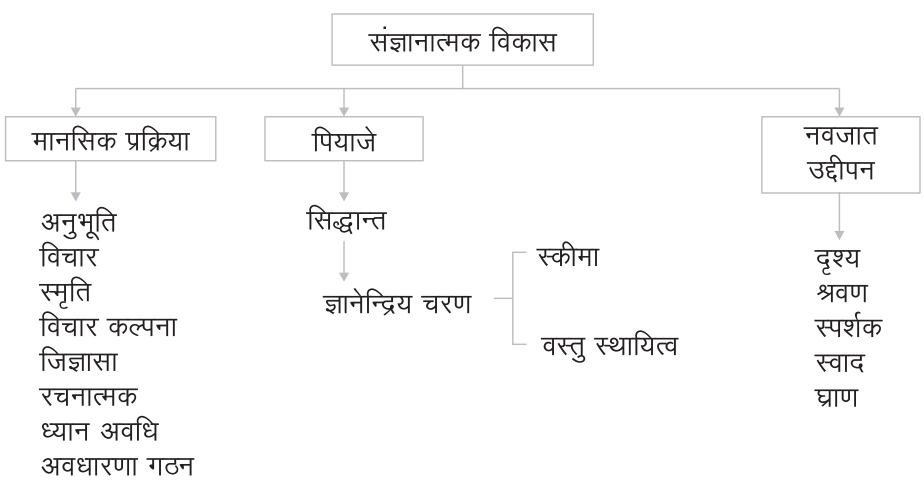

- **संज्ञानात्मक विकास में शामिल मानसिक प्रक्रियाएँ**

अनुभूति–अनुभूति इंद्रियों से प्राप्त जानकारी की व्याख्या करने की सक्रिय प्रक्रिया है।

- इसका अर्थ है पाँच इंद्रियों के माध्यम से किसी चीज के बारे में जागरूक होना। यह हमारे ज्ञान का प्राथमिक स्रोत है।
- एक बार जब बालक अपने संवेदी अंगों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करता है तो वह पूर्व सूचना से जुड़ जाता है। बालक तब जानकारी के दो खंडों के बीच के संबंध का पता लगाता है।
- उदाहरण के लिए, जब किसी बालक को केला खिलाया जाता है, तो वह उसे देखता है, चखता है, सूँघता है और महसूस करता है। इन सभी अनुभवों के साथ वह एक केले की अनुभूति विकसित करता है, अर्थात् वह एक केले के प्रति मानसिक छवि निर्मित करता है।

सोच–सोच में स्मृति में संग्रहीत जानकारी और प्रतीकों का मानसिक पुनर्व्यवस्था या हेरफेर होता है।

- सोच में उपयोग किए जाने वाले प्रतीक सभी पाँच इंद्रियों का उपयोग करने वाले शब्द और मानसिक चित्र होते हैं।
- वस्तु के अभाव में भी चिंतन होता है। यह एक अमूर्त प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए मैं शादी में क्या पहनूँगा।

तर्कशक्ति–तर्कशक्ति कुछ नियमों के एक समुच्चय के आधार पर किसी समस्या को हल करने की एक विधि है।

- इसमें उपलब्ध साधनों के आधार पर नए निर्णय लेने होते हैं।
- इसमें सामान्यीकरण करने और निष्कर्ष निकालने की क्षमता शामिल है।
- तर्कशक्ति में कारण और प्रभाव संबंध का विश्लेषण, लक्ष्य निर्देशित सोच और अन्य सूचनाओं से निष्कर्ष निकालना भी शामिल है। उदाहरण के लिए–
  - आसमान में काले बादल छाए हुए हैं।
  - काले बादल वर्षा के द्योतक हैं–तर्क
  - इसलिए बारिश होने की संभावना है–निष्कर्ष

स्मृति–स्मृति सूचनाओं को संगृहीत करने की प्रक्रिया है जिसे आवश्यकता पड़ने पर पुनः प्राप्त किया जा सकता है। यह किसी समयावधि में सीखी गई बातों का प्रतिधारण है। इसकी तीन मूल प्रक्रियाएँ हैं–

- स्मृति अधिग्रहण, भंडारण और पुनर्प्राप्ति के लिए निर्मित की गई है। अधिग्रहण सूचना को एक ऐसे रूप में अनुवादित करता है जिसमें मस्तिष्क प्रक्रिया कर सकता है।
- तथ्यों को तब स्मृति में रखा जाता है। उदाहरण के लिए एक सेब का अवलोकन करना और यह देखना कि यह लाल है, एक अधिग्रहण है।
- भंडारण समयावधि में याद की गई सामग्री का प्रतिधारण है। जानकारी को अलग–अलग शीर्षकों के तहत, अलग–अलग श्रेणियों में संगृहीत किया जाता है। यहाँ तथ्यों को स्मृति में रखा जाता है। उदाहरण के लिए याद रखना कि एक सेब लाल है, भण्डारण है।
- पुनर्प्राप्ति वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पहले से संगृहीत जानकारी को वर्तमान उपयोग के लिए वापस लाया जाता है। यहाँ स्टोरेज से तथ्य पुनर्प्राप्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए एक सेब को लाल रंग का होना जैसा कि आपको याद है, पुनर्प्राप्ति है।

कल्पना–कल्पना किसी ऐसी वस्तु की मानसिक छवि बनाने की क्रिया या शक्ति है जो तत्काल वातावरण में मौजूद नहीं है।

- कल्पना को आमतौर पर कलात्मक छापों का आधार माना जाता है।
- अनुभवों को कुछ नए और अनोखे रूप में ढालना मन की शक्ति है।
- **उत्सुकता–**जिज्ञासा "पता लगाने" की जन्मजात इच्छा या आग्रह है। इसलिए यह एक आधार वृत्ति है।
- इसे दुनिया भर से जानकारी प्राप्त करने के लिए एक प्रेरक अभियान के रूप में भी जाना जाता है।
- यह इच्छा प्रयोग और खोज में मदद करती है।
- जिज्ञासा मस्तिष्क का कार्य है तथा यह लोगों में एक विशिष्ट विशेषता है।

रचनात्मकता–रचनात्मकता एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें नए विचारों या नए संघों की पीढ़ी शामिल है।

- यह अनुभव, संवेदनशीलता, सहजता और मौलिकता का उत्पाद है।
- कुछ रचनात्मक बनाने के लिए जानकारी से परे "आउट ऑफ द बॉक्स" सोच जरूरी है।

ध्यानावधि–ध्यान पर्यावरण से एक उत्तेजना का चयन करने की प्रक्रिया माना जाता है।

- इसलिए, ध्यानावधि उस समय की अवधि है जिसमें बालक ध्यान केंद्रित करता है।
- किसी दी गई गतिविधि पर बालक के ध्यान या किसी व्यक्ति के लिए नई चीजें सीखने में सक्षम होने के लिए ध्यान अवधि आवश्यक है।
- बालक आमतौर पर अपनी क्षमताओं और रुचियों से मेल खाने वाली गतिविधियों को करते समय अधिक ध्यान देने की अवधि बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

अवधारणा निर्माण–एक अवधारणा ऐसा अमूर्त विचार या धारणा है, जो किसी वस्तु या घटना के तत्वों को एक विचार से जोड़ती है।

- **उदाहरण के लिए**–एक सर्कस की अवधारणा में एक जोकर, एक बाजीगर, कलाबाज, जानवर और तम्बू शामिल हैं। इस प्रकार अवधारणा निर्माण विभिन्न संवेदी अनुभवों से उत्पन्न विभिन्न छवियों का एकीकरण है।

19. विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास (Language Development in Different Stages)

- भाषा विकास बौद्धिक विकास की सर्वाधिक उत्तम कसौटी मानी जाती है। बालक को भाषा का ज्ञान सर्वप्रथम परिवार से होता है। तत्पश्चात् विद्यालय एवं समाज के सम्पर्क में उसका भाषायी ज्ञान विकसित होता है।

शैशवावस्था में भाषा विकास (Language Development in Infancy)

- जन्म के समय बालक क्रन्दन करता है। यह उसकी पहली भाषा होती है। इस समय न तो उसे स्वरों का ज्ञान होता है और न व्यंजनों का 25 सप्ताह तक शिशु जिस प्रकार की ध्वनियाँ निकालता है, उनमें स्वरों की संख्या अधिक होती है।
- 10 मास की अवस्था में शिशु पहला शब्द बोलता है, जिसे वह बार-बार दोहराता है।
- शैशवावस्था में भाषा विकास की प्रगति का क्रम इस प्रकार है—

भाषा विकास की प्रगति	
आयु	**शब्द**
जन्म से 8 मास	0
10 मास	1
1 वर्ष	3
1 वर्ष 3 माह	19
1 वर्ष 6 माह	22
1 वर्ष 9 माह	118
2 वर्ष	212

बाल्यावस्था में भाषा विकास (Language Development in Childhood)

- आयु के साथ-साथ बालकों के सीखने की गति में वृद्धि होती है। इस अवस्था में बालक शब्द से लेकर वाक्य विन्यास तक की सभी क्रियाएँ सीख लेता है।

किशोरावस्था में भाषा विकास (Language Development in Adolescence)

- इस अवस्था में बच्चे अपनी भाषा को अधिक साहित्यिक बना लेते हैं। किशोर/किशोरी में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों से जो संवेग उत्पन्न होते हैं, उससे उनकी कल्पना शक्ति का विकास होने लगता है और वो कविता, कहानी व चित्र के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।
- किशोरावस्था में शब्दकोश भी विकसित होता है वे कभी–कभी गुप्त (code) भाषा का भी प्रयोग करते हैं। यह भाषा कुछ प्रतीकों (symbols) के माध्यम से लिखी जाती है जिसका अर्थ वे ही जानते हैं जिनको कोड आता है। भाषा विकास का प्रभाव उसके चिन्तन पर भी पड़ता है।

20. विभिन्न अवस्थाओं में सृजनात्मक विकास (Development of Creativity in Different Stages)

शैशवावस्था में सृजनात्मक विकास (Development of Creativity in Infancy)

- सृजनात्मकता उस योग्यता को बताती है, जो किसी वस्तु को खोजने या सृजन से सम्बन्धित होती है। शैशवावस्था में शिशु बहुत कल्पनाशील होता है। वो अपनी कल्पना के आधार पर ही नई वस्तुओं का सृजन करता है, जैसे—कागज की नाव बनाना, पंतग बनाना, उड़ने वाला जहाज बनाना कागज पर तरह-तरह के चित्र बनाना व कल्पना के आधार पर उनमें रंग भरना आदि।
- शैशवावस्था में सृजनात्मक क्षमता का विकास भली भांति होना आवश्यक है, क्योंकि इसमें हम बालक की कल्पना शक्ति का पूरा प्रयोग करते हैं। इस क्षमता का विकास करके हम उनके भावी जीवन का निर्माण करते हैं व शिशु के व्यक्तित्व का उचित विकास करते हैं।

बाल्यावस्था में सृजनात्मक विकास (Development of Creativity in Childhood)

- प्रत्येक बच्चे में सृजन की क्षमता जन्मजात होती है, छोटे बच्चों के खेलों में यह सृजनात्मक शक्ति स्पष्ट रूप से झलकती है। रचनात्मक कार्यों द्वारा वह सीखते और आगे बढ़ते हैं। इसके लिए हम बच्चों को कुछ स्वयं करने का अवसर दें, वे आस-पास की वस्तुओं का ज्ञान, अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त करें और अनुभव करें। बच्चों की कल्पना निरीक्षण व स्मरण शक्ति के विकास द्वारा ही उनकी सृजनात्मक क्षमता विकसित होगी। सृजनात्मक क्षमता के विकास द्वारा ही वो भावी जीवन की तैयारी करेंगे।
- बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हम कई प्रकार की क्रियाओं द्वारा कर सकते हैं; जैसे—खेल, कला, नृत्य, अभिनय और बेकार की वस्तुओं से सामग्री तैयार करना आदि।

किशोरावस्था में सृजनात्मक शक्ति का विकास (Creative Development in Adolescence)

- किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था है। इस अवस्था में उसके अन्दर बहुत सारे शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक परिवर्तन होते हैं। वह न तो बच्चा रहता है और न प्रौढ़, इस कारण से वह अपने को वातावरण से भलीभांति समायोजित नहीं कर पाता। उसमें कल्पना की अधिकता होती है, वह सृजनात्मक कार्य करके अपनी कल्पना को यथार्थ का रूप देना चाहता है।
- यदि किशोर/किशोरी की सृजनात्मक क्षमता को उचित वातावरण देकर उसका अधिकतम विकास किया जाये, तो वे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर सकते हैं तथा अपनी शक्ति का सदुपयोग करके स्वयं को कुण्ठा व निराशा से बचा सकते हैं।
- किशोर/किशोरी में सृजनात्मक शक्ति के विकास के लिए विद्यालय में तरह-तरह की पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिये, जैसे—वाद-विवाद प्रतियोगता, साहित्यिक गोष्ठियाँ, नाटक एवं संगीत, नाटकीय खेल, व्यर्थ सामग्री का उपयोग करके कुछ नई वस्तु की रचना आदि। सृजनात्मक क्षमता का विकास करके ही उन्हें हम कुशल डॉक्टर, इंजीनियर, साहित्यकार, शिक्षक या समाज का मार्गदर्शन करने वाला बनने में सहायता कर सकते हैं।

21. विभिन्न अवस्थाओं में बौद्धिक विकास (Intellectual Development in Different Stages)

- **बाल्यावस्था के दौरान बौद्धिक विकास**—इस अवधि में नए अनुभव अर्जित और प्रयोग में लाए जाते हैं। बाल्यावस्था के दौरान एक बालक भाषा विकास के द्वारा अपने भाषा कौशल को विकसित करता है। उसकी शब्दावली समृद्ध होती है और भाषा कौशल में तीव्रता आती है; जैसे—रिपोर्टिंग, प्रश्न पूछना, सोचना आदि जिज्ञासा भी बढ़ जाती है। बौद्धिक विकास की विशेषताएँ अग्र प्रकार हैं—

- **संकल्पनाओं का विकास**—बालक में समय, लम्बाई तथा दूरी की संकल्पनाओं का पूर्ण विकास होता है।
- **रुचि का विकास**—बालक में रुचि का विस्तार होता है। उसे किताबें, यात्रा, परियों की कहानियाँ और रहस्य आदि पसंद आने लगते हैं।
- **सोचने-समझने की शक्ति का विकास**—बालक में देखने, तर्क करने, स्मरण करने, ध्यान देने तथा सोचने की शक्ति का विकास होता है।
- **जिज्ञासु प्रश्न**—बालक अपने बड़ों और माता-पिता से जिज्ञासु प्रश्न करता है और उनसे उत्तर प्राप्त करने का प्रयास करता है। ये प्रश्न उन प्रश्नों से कहीं अधिक निश्चित होते हैं जिन्हें वह अपनी शैशवावस्था के दौरान पूछा करता था।

किशोरावस्था चरण में बौद्धिक विकास (Intellectual Development in Adolescence Stage)

- **समझ का विकास**—किशोरावस्था अधिकतम वृद्धि और बौद्धिक विकास की अवधि है। इस अवधि के दौरान बौद्धिकता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाती है। इस काल के अन्त तक बौद्धिक शक्तियाँ, जीवन तार्किक चिन्तन, अमूर्त तर्कशक्ति एवं एकाग्रता का लगभग विकास हो चुका होता है।
- **ध्यानावधि में वृद्धि**—किशोरावस्था में ध्यानावधि बढ़ जाती है। किशोर अधिक समय तक एक चीज को ध्यान में रख सकते हैं। एकाग्रता और स्मृति शक्ति भी बढ़ जाती है।
- **कल्पनाशक्ति का विकास**—किशोरों में अत्यधिक कल्पना शक्ति होती है। लेखकों, कलाकारों, कवियों, दार्शनिकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों का जन्म इसी काल में हुआ था। बालक इस काल में ही अपने भविष्य के बारे में सोचता है। वह अपनी रुचि के अनुसार कल्पनाएँ करता है। युवा किशोरों की रुचियाँ भी असंख्य और विविध होती हैं। उनके रुचि की सबसे महत्वपूर्ण श्रेणियों में मनोरंजक, सामाजिक, व्यक्तिगत रुचियाँ, व्यावसायिक रुचियाँ और धार्मिक रुचियाँ शामिल होती हैं।
- **आदर्श उपासना**—यह इस अवधि में बहुत प्रमुख है कि एक किशोर अपने आदर्श पुरुष या महिला की उपासना करना शुरू कर देता है और खुद को उसके जैसा बनाने की कोशिश करता है। एक किशोर के लिए आदर्श कोई फिल्म स्टार, कोई राजनीतिक नेता, कोई कवि, कोई वैज्ञानिक, कोई लेखक या कोई शिक्षक हो सकता है। किशोर अपने आदर्श का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं।

22. किशोरावस्था के विकास का सिद्धांत (Principle of Development of Adolescence)

- किशोरावस्था से संबंधित दो सिद्धांतों को महत्व दिया गया है—
  - **सौम्य विकास का सिद्धांत (स्टेनली हॉल)**—इस सिद्धांत के अनुसार किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तन आकस्मिक होते हैं, इन आकस्मिक परिवर्तनों और पूर्व परिवर्तनों के मध्य कोई संबंध नहीं होता।
  - **क्रमिक विकास का सिद्धांत (थॉर्नडाइक)**—इस सिद्धांत के अनुसार किशोरावस्था के विकास के दौरान भिन्नताएँ और मौलिकता धीरे-धीरे आने के साथ-साथ कभी तेजी भी हो जाती है।

23. वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors Affecting Growth and Development)

- बालक के विकास पर अनेक बातों का प्रभाव पड़ता है। कुछ तत्व उसके विकास में सहायक होते हैं और कुछ विकास को कुण्ठित या विलम्बित कर देते हैं। बालक के विकास पर जिन तत्वों का प्रभाव पड़ता है उनमें से कुछ तो स्वयं उसके अन्दर विद्यमान होते हैं और कुछ उसके वातावरण में पाए जाते हैं।
- विकास को प्रभावित करने वाली कुछ बातों पर संक्षेप में नीचे प्रकाश डाला गया है—

बुद्धि (Intelligence)

- विकास पर जिन तत्वों का प्रभाव पड़ता है उनमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व बालक की बुद्धि समझी जाती है। परीक्षणों और प्रयोगों से इस बात को प्रमाणित किया गया है कि तीव्र बुद्धि के बालकों का विकास मन्दबुद्धि के बालकों के विकास की अपेक्षा अधिक तेजी से होता है।
- टरमन ने एक अध्ययन में पता लगाया कि बहुत प्रखर बुद्धि के बालकों में चलने की क्रिया 13 महीने और बोलने की क्षमता 11 महीने में प्रकट हुई, जबकि बहुत दुर्बल बुद्धि के बालकों में ये क्रियाएँ क्रमशः 30 और 15 महीनों में उत्पन्न हुईं। इसी प्रकार बुद्धि और काम-शक्ति के विकास में भी यही सम्बन्ध पाया जाता है। प्रतिभाशाली और उत्कृष्ट बुद्धि के बालकों में काम-शक्ति का प्रथम उदय सामान्य बुद्धि के बालकों की अपेक्षा एक या दो वर्ष पूर्व ही हो जाता है। दुर्बल बुद्धि के बालकों में या तो काम-शक्ति परिपक्व ही नहीं होती या उसकी परिपक्वता काफी विलम्बित होती है। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि बुद्धि बालक के विकास को काफी सीमा तक प्रभावित करती है।

यौन-भेद (Sex-difference)

- बुद्धि की भाँति यौन-भेद का प्रभाव न केवल शारीरिक विकास पर ही पड़ता है बल्कि मानसिक गुणों का विकास भी इसके द्वारा प्रभावित होता है। जन्म के समय लड़के लम्बाई में लड़कियों से कुछ अधिक होते हैं, परन्तु बाद में लड़कियों का विकास अधिक तेजी से होता है और लड़कों की अपेक्षा पहले ही परिपक्वता को प्राप्त हो जाती हैं। काम-शक्ति लड़कियों में लड़कों से एक या दो वर्ष पर्व ही परिपक्व हो जाती है। दस-ग्यारह वर्ष की अवस्था में पहुँचकर समान आयु की लड़की, लड़के की अपेक्षा कुछ लम्बी हो जाती है।
- बुद्धि—परीक्षणों से पता चलता है कि मानसिक विकास में भी लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा कुछ पहले ही मानसिक परिपक्वता को प्राप्त हो जाती हैं। ये सारी भिन्नताएँ यौन-भेद के कारण ही दिखायी पड़ती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि बालक के विकास पर उसके पुरुष या स्त्री होने का प्रभाव पड़ता है।

ग्रन्थियाँ (Glands)

- मनुष्य के शरीर के भीतर बहुत-सी अन्तःस्रावी व बहिःस्रावी ग्रन्थियाँ पाई जाती हैं, इन ग्रन्थियों के कारण शरीर के भीतर विभिन्न प्रकार के रसों की उत्पत्ति होती रहती है। इन रसों पर अनेक प्रकार के शारीरिक व मानसिक विकास निर्भर होते हैं। उदाहरण के लिए, गले

में स्थित पैराथायराइड ग्रन्थि कैल्शियम उत्पन्न करती है जिससे शरीर में हड्डियों का निर्माण होता है। सीने में स्थित थाइमस ग्रन्थि और मस्तिष्क में स्थित पीनियल ग्रन्थि की अति-क्रियाशीलता के कारण शरीर का सामान्य विकास रुक जाता है और बालकों के भीतर बचपना बहुत दिनों तक बना रहता है। गोनड की मन्द क्रियाशीलता से तरुणावस्था आने में विलम्ब होता है और उसके अधिक क्रियाशील हो जाने से यौन परिपक्वता जल्दी आ जाती है।

- **अंत:स्रावी ग्रंथियाँ (Internal Glands)**
  - अंत:स्रावी ग्रंथियाँ, नलिकाविहीन ग्रन्थियाँ होती हैं, जो हार्मोन स्रावित करती हैं तथा जो रक्त प्रवाह के माध्यम से विशेष अंगों या ऊतकों तक ले जायी जाती हैं। ये ग्रन्थियाँ वृद्धि विकास और प्रजनन को नियंत्रित करती हैं।
  - अंत:स्रावी ग्रन्थियाँ बाहरी और आंतरिक प्रतिक्रिया की उत्तेजनाओं में हॉर्मोन का स्राव करती हैं।
  - पिट्यूटरी ग्रंथि जिसे मास्टर ग्रंथि के रूप में भी जाना जाता है, मस्तिष्क के आधार पर स्थित होती है, एवं सभी अंत:स्रावी ग्रन्थियों के कार्यों को तथा विकास को भी नियंत्रित करती है।
  - गर्दन में स्थित थायरॉइड ग्रन्थि मेटाबॉलिज्म (चयापचय/उपापचय) की दर को नियंत्रित करती है।
  - पैराथायरॉइड ग्रन्थि शरीर में कैल्शियम संतुलन को नियंत्रित करती है।
  - एड्रीनल (अधिवृक्क) ग्रंथि शरीर की आपातकालीन क्रिया के लिए जिम्मेदार होती है।
  - अग्न्याशय एक पाचन तंत्र ग्रंथि है। यह रक्त में शर्करा स्तर को बनाए रखने का कार्य करती है।
  - अग्न्याशय (पाचक ग्रन्थि) एक उदर अंग है जिसमें अंत:स्रावी और बहि:स्रावी दोनों कार्य होते हैं। यह विभिन्न प्रकार के हॉर्मोन का उत्पादन करता है जो ज्यादातर रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने से सम्बन्धित होते हैं। एक एक्सोक्राइन ग्रंथि के रूप में, यह अग्नाशयी तरल पदार्थ को स्रावित करता है जिसमें बाइकार्बोनेट और पाचन एंजाइम होते हैं।
  - वृषण (वीर्यकोष) और अंडाशय क्रमशः नर और मादा में प्रजनन कोशिकाओं की वृद्धि और विकास के लिये उत्तरदायी होते हैं।
- **बहि:स्रावी ग्रंथियाँ (Exocrine Glands)**
  - ये वे ग्रंथियाँ हैं, जो अपने उत्पाद को वाहिनी में स्रावित करती हैं। उदाहरण के लिए—लार ग्रंथियाँ लार को लार वाहिनी में स्रावित करती हैं।
    - स्वेद ग्रंथि और वसामय ग्रंथियाँ क्रमशः पसीना और सीबम का उत्पादन करती हैं। समस्थिति को बनाए रखने में इनमें से प्रत्येक तरल पदार्थ की भूमिका अहम् होती है। पसीना अधितप्त होने पर शरीर की सतह को ठंडा कर देता है और थोड़ी मात्रा में उपापचयी अपशिष्ट को बाहर निकालने में मदद करता है।
    - अश्रु ग्रंथि आँख के पार्श्व सिरे के ऊपरी कक्षा के भीतर स्थित होती है। यह लगातार तरल पदार्थ स्रावित करती है, जो आँख की सतह को साफ और संरक्षित करता है, क्योंकि यह चिकनाई और नमी को दूर करता है। इन अश्रु स्रावों को सामान्यतः आँसू के रूप में जाना जाता है।
    - लार ग्रंथियाँ, लार (थूक) का उत्पादन करती हैं और इसे नलिकाओं, या छोटे छिद्रों के माध्यम से मुँह में स्रावित कर देती हैं। वे मुँह और गले को चिकनाई देती हैं, निगलने और पाचन में सहायता करती हैं, और दाँतों को कैविटी पैदा करने वाले बैक्टीरिया से बचाने में मदद करती हैं।
    - स्तन ग्रंथि जोड़े में मौजूद एक अत्यधिक विकसित और विशिष्ट अंग है। इस अंग का प्राथमिक कार्य दूध का स्राव करना है। हालांकि यह दोनों लिंगों में मौजूद है, किन्तु यह महिलाओं में पूर्ण रूप से विकसित है तथा पुरुषों में अल्पविकसित है।
    - पाचन ग्रंथियाँ पाचक रसों का स्राव करती हैं, जिनमें भोजन के पाचन के लिए एंजाइम होते हैं। पाचन तंत्र में अग्न्याशय, यकृत आदि ग्रंथियाँ भी होती हैं, जो पाचन की सुविधा के लिए अपने स्राव को आहार नलिका में प्रवाहित करती हैं।

जाति (Caste)

- बालकों के शारीरिक और मानसिक विकास पर जाति का भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ते हुए देखा गया है। इस बात की पुष्टि अनेक उदाहरणों द्वारा की जा सकती है। नीग्रो, भारतीय, नेपाली, भूटानी और चीनी बालकों का विकास यूरोपीय जातियों के बालकों की अपेक्षा धीरे-धीरे होता है। इस भिन्नता का कारण जातीय भिन्नता ही मानी जाती है।
- एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों से न केवल शारीरिक गठन, वर्ण एवं आकृति में ही भिन्न होते हैं बल्कि जातीय भिन्नता का प्रभाव उनकी बौद्धिक, नैतिक तथा अन्य मानसिक क्षमताओं के विकास पर भी दूर तक पड़ता है।

पोषाहार (Nutrition)

- पोषाहार की गणना उन तत्वों में की जाती है जो बालक को बाहरी वातावरण से प्राप्त होते हैं। बुद्धि, यौन, ग्रन्थि और जाति के समान यह बालक के भीतर जन्म से नहीं विद्यमान होता।
- पोषाहार का प्रभाव शारीरिक व मानसिक क्रियाओं के विकास पर जिस सीमा तक पड़ता है सभी को विदित है। परन्तु बालक के विकास में भोजन की मात्रा का उतना महत्व नहीं होता जितना भोजन के भीतर पाए जाने वाले पोषक तत्वों जैसे विभिन्न विटामिन आदि का। शारीरिक दुर्बलता और दाँत तथा चर्म सम्बन्धी बीमारियों का कारण पौष्टिक भोजन का अभाव होता है।

रोग (Disease)

- शारीरिक बीमारियों और आघातों का शारीरिक विकास पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। बचपन की गंभीर बीमारियाँ, जैसे—टायफाइड आदि अथवा मस्तिष्क आघात का प्रभाव बहुत दिनों तक बना रहता है जिसके फलस्वरूप बालक उचित शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नहीं प्राप्त कर पाता। इसके विपरीत जो बालक स्वस्थ रहता है उसका विकास सामान्य ढंग से चलता है और वह ठीक समय पर परिपक्वता प्राप्त कर लेता है।

घर का वातावरण (Home Environment)

- बालक के विकास पर वातावरण का वंश परम्परा के समान ही प्रभाव पड़ता है। बालक को उसके घर का वातावरण अन्य वातावरणों से पहले ही प्राप्त हो जाता है। अतः उसका प्रभाव उसके विकास पर काफी दूर तक पड़ता है। जिस घर में बालक अन्य बालकों को नहीं पाता वहाँ उसका विकास अपेक्षाकृत मंदगति से चलता है, परन्तु इसके विपरीत जिस परिवार में कई बालक होते हैं वहाँ सबसे छोटे बालक को अनुकरण का पर्याप्त अवसर मिलता है और इसलिए उसका विकास अधिक तेजी के साथ होता है। अतः परिवार में किसी बालक का कौन-सा स्थान है यह बात भी उसके विकास को प्रभावित करती है।
- **सहकर्मी समूह**–सहकर्मी समूह बच्चों को सामाजिक रूप से सीखने और अच्छे तरीके से व्यवहार करने में मदद करता है।
- **लिंग और संस्कृति**–माता–पिता और सामाजिक उपेक्षाओं के कारण लड़कों और लड़कियों के व्यवहार में अंतर प्रदर्शित होता है। अक्सर देखा जाता है कि लड़कों को वापस लड़ने के लिये अर्थात् जवाब देने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है एवं लड़कों को रोते समय "लड़की की तरह" नहीं रोने के लिए कहा जाता है, जबकि लड़कियों को डाँटने पर उनका रोना स्वीकार किया जाता है। यह लैंगिक रूढ़िवादिता को बढ़ावा देता है। यह हानिकारक है। माता–पिता और शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि क्रिया और शब्दों के माध्यम से, इस तरह के व्यवहार को प्रोत्साहित न किया जाये।

विद्यालय (School)

- यह वह स्थान है जहाँ बच्चा सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक चीजें सीखता है। यह एक पर्यावरणीय कारक है जो सीखने को प्रभावित करता है। 'मैं' की अहंकार-केंद्रित संस्कृति धीरे-धीरे सामूहिक संज्ञा 'हम' में बदल जाती है। इसलिए, विद्यालय को एक महत्वपूर्ण सामाजिक माध्यम कहा जाता है। स्कूल के नियम बच्चे को स्वतंत्रता, कार्यों और भाषण या शब्दों के उपयोग (भाषा विकास) की सीमाओं को समझाते हैं।

24. अधिगम और विकास का अर्थ (The Meaning of Learning and Development)

- अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति ने अपने पूर्व जीवन काल में जो भी ज्ञान ग्रहण किया होता है उसमें वह गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है।
- जीव में ज्ञान ग्रहण करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य बदलते परिवेश के अनुसार सामंजस्य बैठाने की क्षमता उत्पन्न करता है जोकि अनुभव से संबंधित होती है न कि परिपक्वता से।
- **बिन्सटेड (1980)** ये मानते हैं कि अधिगम की प्रक्रिया केवल बोधात्मक प्रक्रिया नहीं है जिसमें सूचनाओं को लाक्षणिक संकेतों के रूप में ग्रहण किया जाता है बल्कि यह एक प्रभावी एवं शारीरिक प्रक्रिया भी है। इस विचार को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस प्रक्रिया में व्यक्ति की **भावनाएँ, संवेदना एवं मांसपेशियाँ** सभी की समान रूप से भागेदारी होती है। ये सभी मिलकर अधिगमकर्ता की प्रकृति में बदलाव लाते हैं। यह भी सत्य है कि **"चेतन ध्यान"** (Conscious Attention) के द्वारा अधिगम की प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो सकती है।
- **विकास** एक ऐसी अवधारणा है जो सभी के लिए **आकर्षक व लाभप्रद** है। सभी विकसित होने की इच्छा रखते हैं और प्रयास करते हैं परंतु कुछ ही सफल हो पाते हैं। जिन्हें यह सफलता मिलती है उनके द्वारा सचेत प्रयास किया जाता है और वे परिवर्तन के अनुकूल कार्य करते हैं। परिवर्तन सुनिश्चित है, उसे पसंद किया जाए अथवा नहीं, परन्तु परिवर्तन होता ही है; उसे रोका नहीं जा सकता। यह जरूर हो सकता है कि परिवर्तन को व्यक्ति के विकास के अनुकूल **व्यवस्थित कर दिया जाए। यह कहना गलत नहीं होगा कि अधिगम और परिपक्वता हासिल करने के परिप्रेक्ष्य में विकास की प्रक्रिया की प्रकृति जटिल होती जा रही है। यह प्रक्रिया मात्रात्मक रूप से व्यापक एवं पर्याप्त भिन्नता लिए हुए विकसित हो रही है।**
- संगठन में बढ़ती भिन्नताएँ एवं जटिलताएँ नई संभावनाओं को जन्म देती हैं जोकि संगठन के सूक्ष्म एवं व्यापक वातावरण में सक्रिय रहने हेतु नई चुनौतियाँ व नए अवसर प्रदान करती हैं जिसके लिए निरंतर ज्ञान अर्जन आवश्यक है। यह अधिगम के नए अवसर प्रदान करता है तथा यह प्रक्रिया चलती रहती है। अतः अधिगम की प्रक्रिया को विकास का पथ कहा जा सकता है। यद्यपि दोनों प्रक्रियाएँ एक-समान नहीं होती हैं, परंतु बिना अधिगम की प्रक्रिया के विकास संभव नहीं है।
- प्राथमिक रूप से व्यक्ति के सोचने का तरीका उसके अधिगम और विकास के परिणाम पर आधारित है। व्यक्ति के स्वयं की अवधारणा एवं आत्मसम्मान एवं उसकी अनुक्रियाशीलता व्यक्ति को ज्ञान ग्रहण करने तथा विकास की ओर उन्मुख करती है डालोज के अनुसार, 'अधिगम और विकास एक यात्रा है जो एक जानी पहचानी दुनिया से प्रारंभ होती है और भ्रम संकटयुक्त, उतराव चढ़ाव, संघर्ष और अनिश्चितता के रास्ते से होती हुई एक ऐसी नई दुनिया में पहुँचाती है जहाँ वास्तविकता में कुछ भी बदला नहीं, परंतु फिर भी सब कुछ रूपांतरित हो गया होता है व जीवन का अर्थ बदला हुआ प्रतीत होता है।'
- विद्वानों और विशेषज्ञों के विचारों के अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिगम और विकास की प्रक्रिया व्यक्ति और संगठन दोनों के लिए महत्वपूर्ण होती है।

25. वृद्धि व विकास की प्रकृति (Nature of Growth and Development)

- वृद्धि व विकास की प्रकृति को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–
  - **वृद्धि व विकास का पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाता है**–वृद्धि और विकास को अक्सर पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाता है। लेकिन वृद्धि, विकास से अलग होती है। वृद्धि का आशय आकार, भार, लम्बाई आदि से लगाया जा सकता है जबकि विकास का आशय आकार, रूप या संरचना में परिवर्तन से है, जिसके फलस्वरूप कार्य-कलापों में बेहतर सुधार होता है। यहाँ बेहतर कार्य प्रणाली से आशय परिपक्वता की ओर ले जाने वाले कुछ गुणात्मक परिवर्तनों से है।

- **वृद्धि सेलुलर है, जबकि विकास संगठनात्मक होता है—**फ्रैंक जे., वृद्धि और विकास के बीच के अन्तर करते हुए कहते हैं कि, वृद्धि को कोशिकीय गुणन के रूप में देखा जा सकता है और विकास को उन सभी भागों के संगठन के रूप में देखा जा सकता है जो विकास संबंधित भेदभाव ने उत्पन्न किये हैं। इस प्रकार वृद्धि शरीर के विशेष पहलुओं में परिवर्तन को संदर्भित करती है तथा विकास समग्र रूप से संगठन का अर्थ हो सकता है।
- **वृद्धि रुक जाती है, जबकि विकास प्रगतिशील है—**वृद्धि जीवन भर जारी नहीं रहती है। यह एक निश्चित आयु तक होती है उसके बाद यह रुक जाती है। लेकिन दूसरी तरफ विकास का अर्थ जीवन भर परिवर्तनों की एक प्रगतिशील शृंखला से है। परिपक्वता आ जाने पर वृद्धि रुक जाती है, जबकि विकास निरंतर चलता रहता है।
- **वृद्धि में शारीरिक परिवर्तन अन्तर्निहित है, जबकि विकास में परिपक्वता अन्तर्निहित है—**शरीर में होने वाले परिवर्तनों को निर्दिष्ट करने के लिए वृद्धि शब्द का प्रयोग किया जाता है। एल. एच. स्कॉट के शब्दों में, "शरीर के विभिन्न भागों में वृद्धि की दर समान नहीं है या तो पूर्ण या सापेक्ष अर्थ में, वृद्धि में आवश्यक रूप से शरीर के अनुपात के साथ-साथ समग्र कद और वजन में परिवर्तन अन्तर्निहित है। विकास एक प्राणी में उसके जन्म से उसकी मृत्यु तक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन अधिक विशेष रूप से प्रगतिशील या गैर-जरूरी होने वाले परिवर्तन उत्पत्ति से परिपक्वता तक होते रहते हैं।" अतः विकास, परिपक्वता के लक्ष्य की ओर प्रवृत्त एक व्यवस्थित, सुसंगत प्रकार के परिवर्तनों की एक प्रगतिशील शृंखला है।
- **वृद्धि व विकास आनुवंशिकता और पर्यावरण के संयुक्त उत्पाद होते हैं—**एक बालक अपने विकास के किसी स्तर पर कुछ आनुवंशिकता रखता है और वह अपने पर्यावरण से भी प्रभावित होता है। बालक अपने माता-पिता से जो प्राप्त करता है और जो वह अपने पर्यावरण के साथ साझा करता है, वह उसके व्यक्तित्व को भी आकार प्रदान करता है। उसकी वृद्धि व विकास किसी भी समय, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, आनुवंशिकता और वातावरण की ताकतों से प्रभावित होते हैं।
- **वृद्धि व विकास साथ-साथ चलते हैं—**वृद्धि व विकास साथ-साथ चलते हैं। वृद्धि के बिना विकास का अस्तित्व नहीं है; जैसे—जब शरीर संरचना में वृद्धि या बढ़ोतरी होती है तो यह कार्य के रूप में भी परिणत होता है, जो विकास का रूपक है। अर्थात् वृद्धि विकास में सहायक होती है, परन्तु यह हमेशा नहीं होता है। बच्चा में मोटापा होने लगता है तो इसके साथ किसी भी प्रकार का कार्यात्मक सुधार या विकास नहीं हो सकता है। बच्चे के आकार, ऊँचाई तथा वजन में वृद्धि शारीरिक या संवेदी चालन संबंधी गतिविधि में किसी प्रकार के सुधार का संकेत नहीं दे सकती है। सामान्य रूप से वृद्धि जब रुक जाती है तो भी बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास अनवरत जारी रहता है। विकास परिवर्तनों की एक प्रगतिशील शृंखला का गठन करता है। प्रगतिशील होने का तात्पर्य यह है कि विकास प्रगतिगामी दिशा के रूप में होता है। यह पीछे जाने की बजाय हमेशा आगे की तरफ बढ़ता है, जिससे प्रणाली में अधिक भिन्नता और जटिलता होती है। परिणामस्वरूप प्राणी अधिक कार्यकुशल होता है।
- चूँकि वृद्धि व विकास के शब्दों में अंतर किया गया है फिर भी व्यापक अर्थों में वृद्धि व विकास को पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। ऐसा अक्सर शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है।

26. बाल-विकास के सिद्धांत (Principles of Child Development)

- बालक के विकास की प्रक्रिया उसके गर्भ में आने से ही आरंभ हो जाती है और उस समय तक चलती रहती है जब तक वह प्रौढ़ता को प्राप्त नहीं कर लेता है। मुनरो ने लिखा है कि, "विकास परिवर्तन शृंखला की वह अवस्था है जिसमें बालक भ्रूणावस्था से प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है।"
- **गैरीसन** और **अन्य** के मतानुसार, "जब बालक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है तब हम उसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। अध्ययनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि इन परिवर्तनों में पर्याप्त निश्चित सिद्धांतों का अनुसरण करने की प्रवृत्ति होती है। इन्हीं को विकास का सिद्धांत कहा जाता है।"
- बाल विकास की प्रक्रिया किन्हीं निश्चित सिद्धांतों से नियंत्रित होती है। प्रमुख सिद्धांत निम्नांकित हैं—

निश्चित दिशा का सिद्धांत (Principle of Fixed Direction)

- विकास की निश्चित दिशा से अभिप्राय विकास की प्रकृति से है। विकास सामान्य से विशेष की तरफ बढ़ता है।
- विकास के सभी विभागों में, चाहें वे क्रियात्मक हों या मानसिक, शुरू में बालक की अनुक्रियायें सामान्य होती हैं, फिर भी वे विशेष की ओर अग्रसर होती हैं। उदाहरणार्थ, बच्चा पहले हाथों से चलता है उसके बाद हाथों की सहायता से विशेष कार्यों को करना सीखता है। कहने का आशय यह है कि विकास की एक निश्चित दिशा होती है जो कि सामान्य से विशेष की ओर उन्मुख होती है।

निरन्तर विकास का सिद्धांत (Principle of Continuous Development)

- गर्भाधान के समय से लेकर परिपक्वता के समय तक विकास निरन्तर गति से चलता रहता है। किसी समय इसकी गति तीव्र होती है और किसी समय मन्द। मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार के गुणों का विकास प्रौढ़ावस्था तक अपनी अधिकतम सीमा से निरन्तर होता रहता है। चूँकि विकास निरन्तर होता रहता है, अतः एक अवस्था का प्रभाव दूसरी अवस्था पर पड़ता है।

विकास क्रम का सिद्धान्त (Principle of Development Sequence)

- यद्यपि विकास की प्रक्रिया गर्भावस्था से मृत्यु-पर्यन्त निरन्तर चलती रहती है परन्तु इस विकास का एक निश्चित क्रम होता है। सबसे पहले बालक का गामक (क्रियात्मक) और भाषा सम्बन्धी विकास होता है। बालक पहले क्रंदन करता है, फिर निरर्थक शब्दों का उच्चारण करता है, अन्त में सार्थक शब्दों और वाक्यों पर पहुँचता

है। इसी प्रकार गामक विकास में बच्चा पहले-पहले हाथ-पैर पटकता है, फिर पलटता है, फिर बैठता है, उसके बाद खड़ा होता व चलता है।

एकीकरण का सिद्धान्त (Principle of Integration)

- विकास की प्रक्रिया एकीकरण के सिद्धान्त का पालन करती है। इसके अनुसार बालक अपने सम्पूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। इसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। सामान्य से विशेष की ओर बदलते हुए विशेष प्रतिक्रियाओं और चेष्टाओं को इकट्ठे रूप में प्रयोग में लाना सीखता है।
- उदाहरण के लिए, एक बालक पहले पूरे हाथ को, फिर उंगलियों को और फिर हाथ एवं उंगलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त (Principle of Interrelation)

- मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक, सामाजिक और चारित्रिक सभी प्रकार के विकास में पारस्परिक सम्बन्ध होता है, ये एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं और एक के साथ अन्य सबका विकास होता है।
- उदाहरण के लिए, जैसे-जैसे व्यक्ति के शरीर के बाह्य तथा आन्तरिक अंगों की वृद्धि होती है, उनका आकार व भार बढ़ता है वैसे-वैसे उसके शरीर के अंगों की कार्यक्षमता का विकास होता है तथा जैसे-जैसे उसके शरीर के अंगों, विशेषकर ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ती है वैसे-वैसे उसका मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक, सामाजिक और चारित्रिक विकास भी होता है। हाँ, यह आवश्यक है इसके लिए उचित वातावरण और शिक्षा उपलब्ध हो।

वंशानुक्रम एवं पर्यावरण में अन्तःक्रिया का सिद्धांत (Principle of Interaction of Heredity and Environment)

- बालक का विकास वंशानुक्रम एवं पर्यावरण की अन्तःक्रिया के फलस्वरूप होता है। स्किनर ने लिखा है कि, "वंशानुक्रम उन सीमाओं को निश्चित करता है, जिनके आगे बालक का विकास नहीं किया जा सकता है।" इसी प्रकार यह प्रमाणित किया जा चुका है कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में दूषित वातावरण, गम्भीर रोग, जन्मजात योग्यताओं को कुंठित या कमजोर बना सकता है।

सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धांत (Principle of General to Specific Responses)

- विकास के सभी पक्षों में बालक पहल सामान्य प्रतिक्रिया के रूप में व्यक्ति भी करता है और तत्पश्चात् विशिष्ट प्रतिक्रिया की ओर अग्रसर होता है। नवजात शिशु पहले अपने सम्पूर्ण शरीर का संचालन करता है और उसके बाद किसी विशेष अंग का संचालन करता है। किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए पहले सामान्यतः वह केवल हाथ ही नहीं बढ़ाता है बल्कि अन्य अंगों को भी हिलाता है, लेकिन धीरे-धीरे उसे प्राप्त करने के लिए वह विशिष्ट रूप से हाथ बढ़ाता है।

विकास अनुक्रमिक है और एक प्रतिमान का अनुसरण करता है (Development is Sequential and Follows a Pattern)

- सभी मनुष्यों का विकास एक सार्वभौमिक या समान प्रतिमान और दिशा का अनुसरण करता है। सभी बच्चे इन विकासात्मक प्रतिमान का पालन करते हैं। इस अनुक्रमिक प्रतिमान को दो दिशाओं में देखा जा सकता है।
  - ★ **शिरःपदाभिमुख अनुक्रम**—शीर्षाभिमुख प्रवृत्ति दर्शाती है कि विकास अनुदैर्ध्य दिशा में आगे बढ़ता है। इसका मतलब है कि विकास सिर से पैर तक होता है यानी एक बच्चा सिर क्षेत्र से पैर तक बढ़ना शुरू करता है। यही कारण है कि उनका सिर पहले विकसित होता है, उसके बाद में धड़ और पैर विकसित होते हैं। बच्चा चलना शुरू करने से पहले सिर पर नियंत्रण हासिल करता है। उदाहरण के लिए, बच्चा पहले अपने सिर पर नियंत्रण हासिल करता है, फिर वह वस्तुओं को पकड़ सकता है, बैठ सकता है, रेंग सकता है और बाद में वह खड़ा हो सकता है तदुपरांत चलना प्रारम्भ करता है।
  - ★ **समीप-दूराभिमुख अनुक्रम**—इसका मतलब है कि विकास शरीर के मध्य भाग से परिधि या शरीर के बाहरी हिस्सों तक होता है। इसे इस तथ्य में देखा जा सकता है कि बच्चे पहले अपनी भुजाओं पर और बाद में अपने हाथों पर नियंत्रण हासिल करते हैं। इसी तरह बच्चों के पहले दाँत उनके शरीर के बीच की ओर निकलते हैं और बाद में दाँत मुँह के किनारों की ओर निकलते हैं।

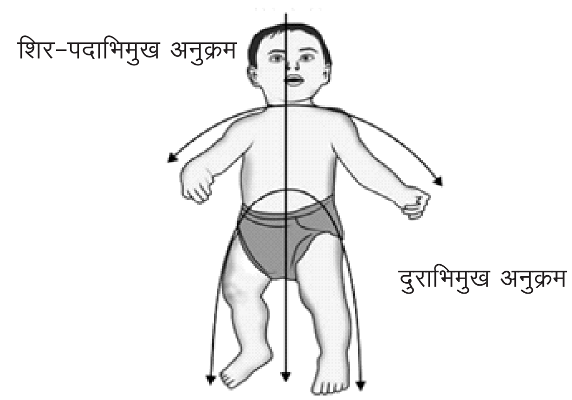

विकास पूर्वानुमानित है (Development is Predictable)

- बच्चों में वृद्धि और विकास की अवधि के लिए विकास के प्रतिमान और दर का अनुमान लगाया जा सकता है। यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि अलग–अलग उम्र के बच्चों से विकास के विभिन्न चरणों में कौन से महत्वपूर्ण घटना की उम्मीद की जा सकती है। इसी प्रकार, विकास के चरणों का भी अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 9 महीने से 15 महीने की उम्र के बच्चों से अपेक्षा की जा सकती है कि वे दूसरों के सहारे के बिना अपने आप चलना शुरू कर दें।
- इसके अलावा, प्रतिमान में पूर्व अनुमान होता है जिसमें बच्चे पहले अपनी गर्दन पर नियंत्रण हासिल करते हैं, सहारे के साथ बैठना

शुरू करते हैं, रेंगना शुरू करते हैं, सहारे के साथ खड़े होते हैं और अंततः बिना सहारे के चलने लगते हैं। ये प्रतिमान विकास के अन्य क्षेत्रों में भी देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे जीवन के पहले दो वर्षों के दौरान बुनियादी संवेगों को समझते हैं और प्रदर्शित करते हैं और ढाई साल के अंत तक वे आत्म–चेतन संवेगों को भी समझने लगते हैं। उनकी संवेगात्मक क्षमताएँ बचपन और किशोरावस्था में और अधिक विकसित होती हैं। संवेगों को पूरी तरह से समझने और प्रबंधित करने की परिपक्वता वयस्कता तक विकसित होती रहती है; बुढ़ापे में बुद्धि के साथ समाप्त होती है। इस प्रकार, अन्य क्षेत्रों में विकास की तरह, भावनात्मक समझ की प्राप्ति भी पूर्वानुमानित है।

विकास विभिन्न दरों पर होता है (Development Occurs at Different Rates)

- विभिन्न कार्यक्षेत्र के लिए विकास अलग-अलग दरों पर होता है। उदाहरण के लिए, जीवन के पहले कुछ वर्षों के दौरान शारीरिक विकास तेजी से होता है, फिर धीमा हो जाता है और किशोरावस्था के दौरान फिर से गति पकड़ लेता है। अन्य कार्यक्षेत्र के दौरान विकास समान प्रक्षेप पथ का अनुसरण नहीं कर सकता है। उदाहरण के लिए, भाषा के विकास के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवधि होती है। जो बच्चे छह वर्ष से कम उम्र में भाषा के संपर्क में आते हैं, वे उन लोगों की तुलना में बेहतर भाषा सीखते हैं जिन्हें इस उम्र में भाषा सीखने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया जाता है। ऐसे अन्य समय भी हो सकते हैं जब अन्य क्षेत्रों में विकास तेजी से हो सकता है। इसके अलावा, शरीर के विभिन्न अंग एक ही समय में विकसित नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, किशोरावस्था के अंत तक बच्चों की लंबाई वयस्कों जैसी हो जाती है और बाद में उनकी लम्बाई नहीं बढ़ती। हालाँकि, वे वजन और माँसपेशियों में वृद्धि जारी रख सकते हैं।

विकास में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं (There are Individual Differences in Development)

- किसी विशेष आयु सीमा के लिए विकास के कुछ अपेक्षित प्रतिमान होते हैं, जिन्हें विकास के मील के पत्थर कहा जाता है। ये मील के पत्थर आमतौर पर एक विशेष आयु सीमा के अधिकांश बच्चों द्वारा हासिल किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, अगर कोई उम्मीद करता है कि बच्चे 3 साल की उम्र तक अपनी इच्छाओं और जरूरतों के बारे में बताना शुरू कर देंगे, तो उसे उम्मीद करनी चाहिए कि सामान्य आयु सीमा के भीतर सभी बच्चे ऐसा करने में सक्षम होंगे। लेकिन कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते और प्रत्येक बच्चा अद्वितीय होता है। एक बच्चा जल्दी चलना शुरू कर सकता है और दूसरा अपने अधिकांश समकक्षों की तुलना में देर से चलना शुरू कर सकता है। इसलिए, यह ध्यान में रखना चाहिए कि यद्यपि विकास का क्रम एक समान और पूर्व निर्धारित है, लेकिन अलग–अलग व्यक्तियों के लिए विकास की दर भिन्न हो सकती है।
- प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्राप्त योग्यता का स्तर भी भिन्न हो सकता है। कुछ बच्चे भाषा विकास में तो आगे निकल जाते हैं लेकिन शारीरिक दक्षता में पिछड़ जाते हैं। दूसरी ओर ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं जो संज्ञानात्मक उपलब्धियों में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते, लेकिन शारीरिक रूप से बहुत मजबूत और पुष्ट होते हैं।

विकास के सभी पहलू एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं (All Aspects of Development are Interrelated)

- विकास के सभी कार्यक्षेत्र एक-दूसरे कार्यक्षेत्र से संबंधित होते हैं और एक बच्चा एकीकृत रूप से विकसित होता है। विकास का प्रत्येक क्षेत्र दूसरे को प्रभावित करता है और बदले में, दूसरे से प्रभावित होता है। एक कार्यक्षेत्र में कोई भी अंतराल अन्य कार्यक्षेत्र को प्रभावित करने की संभावना रखता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा संचार और भाषा के विकास में पिछड़ जाता है तो वह यह नहीं समझ पाता है कि अपने साथियों के साथ स्वस्थ सामाजिक संबंध कैसे बनाए रखें। इससे बच्चे की अन्य बच्चों के साथ होने वाली बातचीत पर असर पड़ सकता है। हो सकता है कि वे इस बच्चे को अपने खेल में शामिल न करें। इससे बच्चे की संज्ञानात्मक, संवेगात्मक शारीरिक क्षमताएँ और बाधित होंगी। यह प्रभाव कभी-कभी गंभीर और स्थायी और कभी-कभी मामूली और अस्थायी हो सकता है।

27. वृद्धि तथा विकास के समन्वित सिद्धांत (Integrated Principles of Growth and Development)

- वृद्धि व विकास अव्यवस्थित, अनियमित या यादृच्छिक तरीके से नहीं होता है। ये कुछ सिद्धांतों का अनुसरण करते हैं जो कुछ प्रक्रियाओं के अन्तर्गत आते हैं तथा जिन्हें सभी प्राणियों में देखा जा सकता है।
- क्रो तथा क्रो के अनुसार, वृद्धि संरचनात्मक और शारीरिक परिवर्तन को संदर्भित करती है, जबकि विकास का आशय वृद्धि के साथ-साथ व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से है, जो पर्यावरणीय उत्तेजना के परिणाम–स्वरूप होता है।
- वृद्धि आम तौर पर आकार, लम्बाई और वजन में वृद्धि को संदर्भित करती है जबकि विकास समग्र रूप से जीव में परिवर्तन को संदर्भित करता है।
- वृद्धि को मापा जा सकता है और विकास को देखा जा सकता है।
- परिपक्वता पर वृद्धि रुक जाती है जबकि विकास निरंतर जीवन भर होता रहता है।
- वृद्धि मात्रात्मक है जबकि विकास मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों ही होता है।
- वृद्धि एकीकरण विभेदन की जुड़वाँ प्रक्रिया के माध्यम से होती है जबकि विकास एक व्यापक प्रक्रिया है, लेकिन वृद्धि इसका केवल एक हिस्सा है।
- हम देखते हैं कि वृद्धि कुछ समय अन्तराल के बाद रुक जाती है जबकि विकास की गति निरंतर चलती रहती है। वृद्धि व विकास से संबंधित कुछ समन्वित सिद्धांत निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत हैं–
  - **निरंतरता का सिद्धांत–**वृद्धि और विकास की प्रक्रिया गर्भाधान से लेकर व्यक्ति के परिपक्वता तक पहुँचने तक जारी रहती है। शारीरिक और मानसिक दोनों लक्षणों का विकास धीरे-धीरे तब तक चलता रहता है जब तक कि ये लक्षण अपनी अधिकतम

वृद्धि तक नहीं पहुँच जाते। यह जीवन भर निरंतर चलता रहता है। परिपक्वता की अवधि प्राप्त होने के बाद भी विकास समाप्त नहीं होता है। जबकि वृद्धि विकास के अन्तर्गत समाहित होती है। सभी वृद्धि विकास का रूप हो सकती हैं लेकिन सभी विकास वृद्धि नहीं हो सकते।

- **क्रमिकता का सिद्धांत**—विकास की प्रक्रिया क्रमिक होती है। एक बालक पहले पेट के बल खिसकना सीखता है उसके बाद वह पैरों पर चलना सीखता है। यह सब अचानक नहीं आता है। यह प्रकृति में संचयी भी है। जबकि वृद्धि में शरीर के विभिन्न भागों में वृद्धि की दर समान नहीं है, या तो पूर्ण या सापेक्ष अर्थ में, वृद्धि में आवश्यक रूप से शरीर के अनुपात के साथ–साथ समग्र कद और वजन में परिवर्तन अन्तर्निहित है।
- **समानता का सिद्धांत**—मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार विकास क्रमिक होता है या क्रमबद्ध होता है। प्रत्येक प्राणी, चाहे पशु हो या मानव, विकास के एक विशिष्ट पैटर्न का अनुसरण करता है। सामान्य तौर पर यह पैटर्न सभी व्यक्तियों के लिए समान होता है। बालक खड़ा होने से पहले रेंगता है, चलने से पहले खड़ा होता है और बात करने से पहले बड़बड़ाता है। वृद्धि में शारीरिक लम्बाई, वजन इत्यादि में परिवर्तन होते हैं।
- **व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्नता का सिद्धांत**—विकास की दर एक समान नहीं होती है। व्यक्ति की वृद्धि और विकास की दर अलग-अलग व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न होती है। शरीर के प्रत्येक अंग की वृद्धि की अपनी विशिष्ट दर होती है।
- **सामान्य से विशिष्ट की ओर सिद्धांत**—विकास के सभी क्षेत्रों में, सामान्य गतिविधि हमेशा विशिष्ट गतिविधि से पहले होती है। जैसे, भ्रूण अपने पूरे शरीर को हिलाता है लेकिन विशिष्ट प्रतिक्रिया करने में असमर्थ होता है। भावनात्मक व्यवहार के संबंध में, शिशु किसी प्रकार की सामान्य भय-प्रतिक्रिया के साथ अजीब और असामान्य वस्तुओं के पास जाते हैं। बाद में उनका डर और अधिक विशिष्ट हो जाता है और विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को जन्म देता है, जैसे, रोना, मुड़ना और छिपना आदि। जबकि वृद्धि गर्भावस्था के दौरान शिशुओं में शारीरिक होती है।
- **सहसंबद्ध लक्षण का सिद्धांत**—सामान्यतः देखा गया है कि जिस बच्चे का मानसिक विकास औसत से अधिक होता है, वह स्वस्थ, सामाजिक और विशेष योग्यता जैसे कई अन्य पहलुओं में श्रेष्ठ होता है। जबकि वृद्धि में से सब नहीं होता है। वृद्धि में अनुभवशीलता का उपयोग होता है।
- **आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों का एक उत्पाद**—वृद्धि और विकास दोनों आनुवंशिकता और पर्यावरण से प्रभावित होते हैं। दोनों मानव के विकास व वृद्धि दोनों के लिए उत्तरदायी हैं।
- **अनुमानित बनाम अवलोकनीय का सिद्धांत**—शारीरिक और मनोवैज्ञानिक क्षमताओं में अन्तर अवलोकन और मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा अनुमानित किया जा सकता है; जबकि वृद्धि को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- **संरचनात्मकता और कार्यात्मकता का सिद्धांत**—विकास संरचनात्मक और कार्यात्मक परिवर्तन लाता है जबकि वृद्धि संरचनात्मक परिवर्तन लाती है। वृद्धि संरचना में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होती है।
- **कारकों के बीच संपर्क की निरंतरता का सिद्धांत**—एक क्षेत्र में विकास दूसरे क्षेत्रों में विकास से अधिक संबंधित है। जैसे, एक बालक जिसका स्वास्थ्य अच्छा है वह सामाजिक और बौद्धिक रूप से सक्रिय हो सकता है। जबकि वृद्धि एक समयान्तराल के बाद रुक जाती है।

28. विकास में मुद्दे (बहस) (Issues/Debates in Development)

- हमने पहले ही अध्ययन कर लिया है कि प्रत्येक व्यक्ति विकास के निश्चित चरणों से होकर गुजरता है। विकास के कुछ निश्चित सिद्धांत हैं जो कम या अधिक सभी व्यक्तियों के लिए समान होते हैं। फिर भी मनोविज्ञानी और शिक्षाविद् विकास के सिद्धांत और प्रकृति के बारे में अपनी भिन्न राय रखते हैं।
- जैसा हमने पहले ही स्थापित किया है कि आनुवंशिकता और वातावरण दोनों व्यक्ति की वृद्धि और विकास को प्रभावित करते हैं। इस परिदृश्य से संबंध कुछ अन्य मुद्दे हैं। हम उन्हें एक-एक कर भिन्न शीर्षकों के अंतर्गत समझने का प्रयास करते हैं–

प्रकृति *बनाम* पोषण (Nature *vs.* Nurture)

- क्या विकास प्रकृति या पोषण का उत्पाद है? मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाविदों में इस मुद्दे पर बहस किया था। जब हम बाल विकास में प्रकृति के बारे में बात करते हैं तो हम बात कर रहे हैं कि आनुवंशिकता से बच्चे में क्या आता है। जब हम पोषण के बारे में बात करते हैं तो हम वातावरण के प्रभाव को देख रहे हैं।
- जो लोग प्रकृति के पक्ष में हैं वे सुझाव देते हैं कि विकास के लिए केवल प्रकृति ही उत्तरदायी है। दूसरी तरफ वे जो पोषण के पक्ष में हैं, सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति का विकास वातावरण पर निर्भर करता है कि कैसे वह व्यक्ति का पोषण करता है। इस प्रकार प्रकृति बनाम पोषण का मुद्दा उभरता है।
- किंतु यदि हम व्यक्ति के विकास का विश्लेषण करते हैं तो यह न तो अकेले प्रकृति का उत्पाद प्रतीत होता है न ही अकेले पोषण का घटक बल्कि यह प्रकृति और पोषण दोनों का उत्पाद है। इसे हम एक उदाहरण की सहायता से समझने का प्रयास करते हैं।

सततता *बनाम* असतता (Continuity *vs.* Discontinuity)

- प्रश्न यह है कि क्या विकास पूरी तरह से और समान रूप से सतत है? या क्या यह आयु-विशिष्ट अवधियों द्वारा चिह्नित है? विकासात्मक मनोवैज्ञानिक जो सततता प्रतिमान की वकालत करते हैं, विकास को एक अपेक्षाकृत निर्बाध प्रक्रिया के रूप में, बिना स्पष्ट या बिना अवस्थाओं के रूप में वर्णित करते हैं जिसमें एक व्यक्ति को गुजरना होता है अर्थात् विकास एक व्यवहार, कौशल या ज्ञान के क्रमिक संचय की एक प्रक्रिया के रूप में कल्पना की जाती है।

- इसके विपरीत जो लोग दूसरे दृष्टिकोण को मानते हैं वे सुझाव देंगे कि विकासात्मक परिवर्तन प्रकृति में असतता द्वारा परिलक्षित होता है। वे विकास को पृथक् चरणों की एक शृंखला के रूप में वर्णित करते हैं जिनमें से प्रत्येक की विशेषता यह होती है कि अतीत में क्या हुआ था और बच्चा उस अवधि के विकास कार्यों में कितनी अच्छी तरह से सक्षम था आदि। इन सिद्धांतकारों का सुझाव है कि व्यवहार या कौशल अक्सर समय के साथ गुणात्मक रूप से परिवर्तित होते हैं, और व्यवहार, कौशल या ज्ञान के नये संगठन अचानक या पृथक् तरीके से उभरते हैं।

स्थायित्व *बनाम* परिवर्तन (Stability *vs.* Change)

- एक अन्य मुद्दा जो मनोवैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण है, वह स्थायित्व बनाम् परिवर्तन का मुद्दा है। यहाँ प्रश्न यह है कि क्या विकास स्थायित्व में सबसे अच्छी तरह परिलक्षित होता है, उदाहरण के लिए कोई व्यवहार या लक्षण जैसे शार्मिलापन समय के साथ अपनी अभिव्यक्ति में स्थिर रहता हैः या परिवर्तन, उदाहरण के लिए, क्या किसी व्यक्ति के शर्मिलेपन की हद में पूरे जीवन काल में उतार-चढ़ाव हो सकता है? विकास के पहलू जैसे, व्यक्तित्व लक्षणों पर माता-पिता के साथ आसक्ति बंधन, स्थिर पाया गया। जबकि, पर्यावरणीय कारकों के कारण चित्तप्रकृति बदल सकती है।

गतिविधि *बनाम* निष्क्रियता(Activity *vs.* Passivity)

- विकास से जुड़े एक और मुद्दे को एक घटना की मदद से समझने का प्रयास करते हैं।
  - **घटनाः** अपराजिता और माधवी एक ही क्लास में पढ़ती हैं। अपराजिता के पास बहुत हल्के ढंग से कक्षाएं लेने पर भी उच्च अंक प्राप्त करने की संज्ञानात्मक क्षमता है। वह मूल रूप से पढ़ाई में रुचि नहीं रखती है। दूसरी ओर, माधवी औसत संज्ञानात्मक क्षमता वाली छात्रा है लेकिन वह सीखने की अवधारणाओं में कड़ी मेहनत करती है। माधवी ने स्वेच्छा से प्रवेश लिया और पाठ्यक्रम लेने के लिए बहुत उत्सुक थी। पहले टेस्ट में अपराजिता ने माधवी से अधिक स्कोर किया, जबकि माधवी ने अपने दूसरे टेस्ट में जबरदस्त सुधार दिखाया। यह उसकी कमजोरी का आकलन करने और उस पर कड़ी मेहनत करने के अपने प्रयासों के कारण था।
  - उपर्युक्त मामले से, हम विश्लेषण कर सकते हैं कि किसी व्यक्ति के विकास से संबंधित दो मुद्दे हैं।
  - 'गतिविधि' का पहला मुद्दा मानता है कि विकास प्रक्रिया में व्यक्ति सक्रिय है। वह स्वाभाविक रूप से जो आ रहा है वह उसे स्वीकार नहीं करता है। बल्कि वह अपने विकास के मार्ग को चुनने का प्रयास करता है, जैसा कि हम माधवी की उपलब्धि में सुधार के प्रयासों के मामले में देख सकते हैं।
  - दूसरी ओर, विकास में 'निष्क्रियता' यह बताती है कि व्यक्ति विकास के मार्ग में जो कुछ भी आ रहा है उसे स्वीकार करता है।
  - अपराजिता के मामले की तरह जो अपने अंकों को सुधारने के लिए कोई प्रयास नहीं करती क्योंकि वह पढ़ाई में बहुत निष्क्रिय थी।

सार्वभौमिकता *बनाम* संदर्भ विशिष्ट (Universality *vs.* Context Specific)

- हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि विकास एक सतत प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती है।
- व्यक्ति का विकास कुछ सिद्धांतों पर आधारित होता है।
- अनुक्रमिकता और समान पैटर्न का सिद्धांत सार्वभौमिकता के एक महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर ले जाता है।
- विकास की सार्वभौमिक धारणा यह मानती है कि विकास का मार्ग सभी व्यक्तियों के लिए समान है। उदाहरण के लिए, शैशवावस्था से वयस्कता तक के विकास के चरण सभी व्यक्तियों के लिए सामान्य होते हैं।
- दूसरे शब्दों में, प्रत्येक मनुष्य संस्कृति, समुदाय और समाज पर ध्यान दिए बिना विकास के क्रमिक पैटर्न से गुजरता है।
- संस्कृतियों, समुदाय, समाज और व्यक्तियों में विकासात्मक परिवर्तन किस हद तक भिन्न हैं, यह 'संदर्भ–विशिष्ट' विकास का एक मुद्दा है।
- एक संस्कृति में अपनाया गया विकास का मार्ग दूसरी संस्कृति में अपनाए गए मार्ग से काफी भिन्न हो सकता है।
- यह मुद्दा बताता है कि विकास समाज, संस्कृति, व्यक्ति आदि जैसे विभिन्न पहलुओं के विशिष्ट संदर्भ में होता है। उदाहरण के लिए, आदिवासी पृष्ठभूमि के एक व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार का एक समूह हो सकता है जो शहरी क्षेत्रों के व्यक्ति से अलग है। इसके अलावा, अभिवादन का तरीका, भाषा, कला और सौंदर्यशास्त्र भी व्यक्तियों के संदर्भ–विशिष्ट विकास को दर्शाता है। इसलिए, एक विशेष संस्क्रेति के भीतर, उपसंस्कृतियों से उपसंस्कृतियों, परिवार से परिवार और व्यक्तियों से व्यक्तियों में विकासात्मक परिवर्तन भिन्न हो सकते हैं। लेकिन, यह देखा जा सकता है कि संदर्भ–विशिष्ट विकास के बावजूद, व्यक्ति समान विकासात्मक चरणों से गुजरते हैं।

29. बालक के विकास में पर्यावरण और आनुवंशिकता की भूमिका (Role of Environment and Heredity in the Development of a Child)

- प्राणी के गर्भ में आने से लेकर पूर्ण प्रौढ़ता प्राप्त होने की स्थिति मानव विकास कहलाती है। मानव का विकास अनेक कारकों द्वारा होता है। इन कारकों में जैविक एवं सामाजिक दो कारक प्रमुख हैं। जहाँ जैविक विकास का दायित्व माता–पिता पर होता है और सामाजिक विकास का वातावरण पर।
- बालक लगभग 9 माह अर्थात् 280 दिन तक माँ के गर्भ में रहता है और तब से ही उसके विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। जब भ्रूण

विकसित होकर पूर्ण बालक का स्वरूप ग्रहण कर लेता है तो प्राकृतिक नियमानुसार उसे गर्भ से पृथ्वी पर आना ही पड़ता है। तब बालक के विकास की प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से विकसित होने लगती है।

- बालक के विकास पर वंशानुक्रम के अतिरिक्त वातावरण का भी प्रभाव पड़ने लगता है। जन्म से सम्बन्धित विकास को वंशानुक्रम तथा समाज से सम्बन्धित विकास को वातावरण कहते हैं। इसे प्रकृति (Nature) तथा पोषण (Nurture) भी कहा जाता है।

30. वंशानुक्रम (Heredity)

वंशानुक्रम का अर्थ (Meaning of Heredity)

- वंशानुक्रम में उन सब शारीरिक और मानसिक विशेषताओं का समावेश होता है जो व्यक्ति को अपने माता–पिता की वंश परंपरा से प्राप्त होती हैं। ये विशेषताएँ पूर्वजों के द्वारा मिलती हैं। इस प्रकार गोरे माता–पिता की संतान गोरी व काले माता–पिता की संतान काली होती है। माता–पिता के काले और किसी के गोरे होने पर बालक का रंग किसी पर भी जा सकता है। बालक में शरीर का रंग, बालों का रंग, और बनावट, कद, नाक, नक्शा, आवाज आदि वंशानुक्रम के ही प्रभाव से निश्चित होते हैं इन पर वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- वंशानुक्रम को हम वंश-परम्परा, पैतृकता, आनुवंशिकता आदि नामों से भी पुकारते हैं।

वंशानुक्रम की परिभाषाएँ (Definitions of Heredity)

- वंशानुक्रम के सन्दर्भ में कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–
  - **रूथ बैनेडिक्ट** के अनुसार, "वंशानुक्रम माता–पिता से सन्तान को प्राप्त होने वाले गुणों का नाम है।"
  - **जे. ए. थाम्पसन** के अनुसार, "वंशानुक्रम, क्रमबद्ध पीढ़ियों के बीच उत्पत्ति सम्बन्धी, सम्बन्ध के लिये सुविधाजनक शब्द है।"
  - **पी. जिंसबर्ट** के अनुसार, "प्रकृति में पीढ़ी का प्रत्येक कार्य माता–पिता द्वारा सन्तानों में कुछ जैविकीय या मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का हस्तान्तरण करना है। इस प्रकार से विशेषताओं के संगठित हस्तान्तरण को वंशानुक्रम के नाम से जाना जाता है।"
  - **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, "माता–पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का संतानों में संक्रमित होना ही वंशानुक्रम है।"
  - **एच. ए. पेटरसन** के अनुसार, "वंशानुक्रम को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि व्यक्ति अपने माता–पिता के माध्यम से पूर्वजों के जो कुछ गुण प्राप्त करता है, वही वंशानुक्रम कहलाता है।"
  - **बी. एन. झा** के अनुसार, "व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं के समस्त योग को वंशानुक्रम कहते हैं।"
  - **वुडवर्थ वंशानुक्रम** के अनुसार, "व्यक्ति के पूर्वजों में उपस्थित समस्त गुणों का उनके वंशजों में स्थानांतरण होना वंशानुक्रम कहलाता है। इसके लक्षण जन्म के समय नहीं बल्कि गर्भाधान के समय जन्म से लगभग नौ माह पूर्व ही व्यक्ति में विकसित होने लगते हैं।"

वंशानुक्रम की प्रक्रिया (Process of Heredity)

- मानव शरीर कोषों (cells) का योग होता है शरीर का आरम्भ केवल एक कोष से होता है, जिसे संयुक्त कोष (Zygote) कहते हैं। यह कोष 2, 4, 8, 16, 32 और इसी क्रम में संख्या में आगे बढ़ता है। संयुक्त कोष दो उत्पादक कोषों का योग होता है। इनमें से एक कोष पिता का होता है, जिसे 'पितृकोष' (sperm) और दूसरा माता का होता है, जिसे 'मातृकोष' (ovum) कहते हैं। उत्पादक कोष भी संयुक्त कोष के समान संख्या में बढ़ते हैं।
- पुरुष और स्त्री के प्रत्येक कोष में 23-23 गुणसूत्र (chromosomes) होते हैं। इस प्रकार संयुक्त कोष में गुणसूत्रों के 23 जोड़े होते हैं। गुणसूत्रों के सम्बन्ध में **मन** ने लिखा है–"हमारी सब असंख्य परम्परागत विशेषताएँ इन 46 गुणसूत्रों में निहित रहती हैं। ये विशेषताएँ गुणसूत्रों में विद्यमान पित्रैकों (Genes) में होती हैं।" अतः संयुक्त कोष गुणसूत्र तथा पित्रैक का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है–
  - **संयुक्त कोष**–ये गाढ़े एवं तरल पदार्थ साइटोप्लाज्म का बना होता है। साइटोप्लाज्म के अन्दर एक नाभिक (न्यूक्लियस) होता है, जिसके भीतर गुणसूत्र (क्रोमोसोम्स) होते हैं।
  - **गुणसूत्र**–प्रत्येक कोशिका के नाभिक में डोरों के समान रचना पायी जाती है, जिनको क्रोमोसोम्स कहा जाता है। ये गुणसूत्र सदैव जोड़ों में पाये जाते हैं। एक संयुक्त कोष में गुणसूत्रों के 23 जोड़े होते हैं। जिसमें आधे पिता द्वारा प्राप्त होते हैं और आधे माता द्वारा प्रत्येक गुणसूत्र में छोटे–छोटे तत्व होते हैं, जिनको 'जीन्स' कहते हैं। इस सन्दर्भ में **एन. एल. मन** ने कहा है–"हमारी असंख्य परम्परागत विशेषताएँ इन 46 गुणसूत्रों में उपस्थित रहती हैं। गुणसूत्रों में छिपे वंशानुक्रमीय कीटाणुओं को 'जीन्स' कहते हैं, जो वंशानुक्रम के निर्धारक होते हैं।"
  - **पित्रैक**–एक गुणसूत्र के अन्दर वंशानुक्रम के अनेक निश्चयात्मक तत्व पाये जाते हैं, जिनको पित्रैक (जीन) कहा जाता है। जैसा कि **एनास्टासी** ने लिखा है–"पित्रैक वंशानुक्रम की विशेषताओं का वाहक है, जो किसी न किसी रूप में सदैव हस्तान्तरित होता है।" अतः अपने माता–पिता और पूर्वजों से जन्मजात विशेषताओं के रूप में हमें जो भी प्राप्त होता है, वह माता–पिता द्वारा प्रदान किये गये पित्रैकों के माध्यम से माँ के गर्भ में जीवन प्रारम्भ होने (शुक्र कीट द्वारा अण्डकोष का निषेचन होने) के समय ही प्राप्त हो जाता है। यह स्वतः ही पीढ़ी में हस्तान्तरित होते रहते हैं।

वंशानुक्रम के सिद्धान्त और नियम (Laws and Theories of Heredity)

- वंशानुक्रम की प्रक्रिया के सम्बन्ध में विभिन्न परीक्षण एवं प्रयोग किये गये हैं, वंशानुक्रम सदैव मनोवैज्ञानिकों तथा जीव वैज्ञानिकों के लिये अत्यन्त रोचक व रहस्यमय विषय रहा है। वंशानुक्रम के स्वरूप को इन्हीं मनोवैज्ञानिकों तथा जीव वैज्ञानिकों के परीक्षणों के आधार पर परिभाषित कर सकते हैं। इनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है–
  - **बीजकोष की निरन्तरता का नियम**–इस नियम के प्रतिपादक **वीजमैन** थे। **वीजमैन** के अनुसार शरीर–निर्माण करने वाला बीजकोष (Germplasm) कभी नष्ट नहीं होता। यह मानव में सदा

गुणसूत्रों के रूप में उपस्थित रहते हैं। बीजकोष (Germplasm) का कार्य जनन कोशिकाओं (Germ Cells) का निर्माण करना है। बीजकोष निरंतर पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। इस प्रकार बीजकोष पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता रहता है। आधुनिक आलोचकों के अनुसार वीजमैन का सिद्धांत वंशानुक्रम की संपूर्ण प्रक्रिया की व्याख्या संतोषजनक ढंग से नहीं करता । अतः यह सिद्धांत मान्य नहीं है।

- **समानता का नियम**—इस नियम को स्पष्ट करते हुए सोरेनसन ने लिखा कि "समान समान को ही जन्म देता है। अर्थात् जैसे माता–पिता होते हैं वैसे ही उनकी संतान भी होगी। बुद्धिमान माता–पिता की संतान बुद्धिमान और मूर्ख माता–पिता की संतान मूर्ख होती है। इसी प्रकार शारीरिक रचना की दृष्टि से भी ऐसा ही होता है। किंतु इस नियम को हम सत्य नहीं मान सकते, क्योंकि इस नियम के विपरीत यह देखा गया है कि जिनके माता–पिता गोरे नहीं हैं उनकी संतान गोरी होती है।
- **विभिन्नता का नियम**—इस नियम के अनुसार बालक अपने माता–पिता के बिल्कुल समान न होकर कुछ भिन्न होते हैं। इसी प्रकार एक ही माता–पिता के बालक एक–दूसरे के समान होते हुए भी बुद्धि, रंग और स्वभाव में एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। भिन्नता का नियम प्रतिपादित करने वालों में **डार्विन** तथा **लैमार्क** ने अनेक प्रयोगों और विचारों द्वारा यह मत प्रकट किया है कि उपयोग न करने वाले अवयव तथा विशेषताओं का लोप आगामी पीढ़ियों में हो जाता है। नवोत्पत्ति तथा प्राकृतिक चयन द्वारा वंशक्रमीय विशेषताओं का उन्नयन होता है।
- **प्रत्यागमन का नियम**—इस नियम के अनुसार बालक में अपने माता–पिता के विपरीत गुण पाये जाते हैं। 'प्रत्यागमन' शब्द का अर्थ विपरीत होता है जब बालक माता–पिता से विपरीत विशेषताओं वाले विकसित होते हैं, तो यहाँ पर प्रत्यागमन का सिद्धान्त लागू होता है; जैसे—मंदबुद्धि माता–पिता की सन्तान का प्रखर बुद्धि होना। इस नियम के सन्दर्भ में विद्वानों ने निम्न धारणाएँ प्रस्तुत की हैं—
  - जब माता और पिता के गुणसूत्रों के गुणवाहक जीन का संयोग भली–भांति अर्थात् पिता के उत्तम गुण माता के उत्तम गुणवाहक जीन से मिलते हैं, तब संतान उत्तम गुणों से युक्त प्रखर बुद्धि की होती है और जब सामान्य गुण वाहक जीन का संयोग सामान्य जीन से होता है तो संतान सामान्य बुद्धि की होती है।
  - वैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्ति को वंशानुक्रम से दो प्रकार के गुण प्राप्त होते हैं—व्यक्त (Dominate) और सुप्त (Recessive)।
- **अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम**—इस नियम के अनुसार माता–पिता द्वारा अपने जीवन काल में अर्जित किये जाने वाले गुण उनकी सन्तान को प्राप्त नहीं होते हैं। इस नियम को अस्वीकार करते हुए विकासवादी **लैमार्क** ने लिखा है— "व्यक्तियों द्वारा अपने जीवन में जो अर्जित किया जाता है, वह उनके द्वारा उत्पन्न किये जाने वाले व्यक्तियों को संक्रमित करता है।" **लैमार्क** ने जिराफ की गर्दन का लम्बा होना परिस्थितिवश बताया, लेकिन अब वह वंशानुक्रमीय हो चुका है। **लैमार्क** के इस कथन की पुष्टि **मैक्डूगल** और **पवलव** ने चूहों पर एवं **हैरीसन** ने पतंगों पर परीक्षण करके की है। आज के युग में विकासवाद या अर्जित गुणों के संक्रमण का सिद्धान्त स्वीकार नहीं किया जाता है। इस सम्बन्ध में **वुडवर्थ** ने लिखा है—"वंशानुक्रम की प्रक्रिया के अपने आधुनिक ज्ञान से संपन्न होने पर यह बात प्रायः असंभव जान पड़ती है कि अर्जित गुणों को संक्रमित किया जा सके; जैसे—यदि आप कोई भाषा बोलना सीख लें, तो क्या आप पित्रैकों द्वारा इस ज्ञान को अपने बच्चे को संक्रमित कर सकते हैं? इस प्रकार के किसी प्रमाण की पुष्टि नहीं हुई है।
- **मेंडल का नियम**—इस नियम का प्रतिपादन **चेकोस्लोवाकिया** देश के **ग्रेंगर जोहन मेंडल** नामक पादरी ने किया था। मेंडल ने वंशानुक्रम का अध्ययन करने के लिए अनेक प्रयोग किए। इन प्रयोगों के निष्कर्ष "मेंडलवाद" के नाम से प्रसिद्ध हुए । सर्वप्रथम मेंडल ने यह प्रयोग अपने बाग में हरी मटर पर किया । उसने इस प्रयोग के लिए दो प्रकार की (छोटी और बड़ी) मटरों का चुनाव किया। सर्वप्रथम उसने छोटी और बड़ी मटर को अलग–अलग बोया। इस प्रकार छोटी मटर से छोटी और बड़ी मटर से बड़ी मटर पैदा हुई। किंतु जब छोटी और बड़ी मटर से बड़ी मटरें पैदा हुईं। किन्तु जब छोटी और बड़ी मटर को बराबर संख्या में मिलाकर बोया गया तब केवल बड़ी मटरें ही पैदा हुईं। यहाँ छोटेपन का रह गया और बड़ेपन का गुण व्यक्त हो गया। सिद्ध होता है कि प्रकृति सदा शुद्ध गुण वाली संतति को बढ़ाती है। यह व्यक्त गुण Cross Fertilization निर्बल नहीं पड़ा। सुप्त गुण व्यक्त गुण की उपस्थिति में निर्बल पड़ जाता है या छिप जाता है। इस प्रकार छोटी और बड़ी मटरों से उत्पन्न केवल बड़ी मटरों में छोटी का गुण सुप्त रूप से व्याप्त रहता है, किन्तु जब उन्हें अलग–अलग बोया जाता है। अर्थात् जब उनमें Self Fertilization होता है तब ये सुप्तगुण व्यक्त हो जाते हैं। संक्षेप में छोटी और बड़ी मटर से उत्पन्न वर्णसंकर (Hybrids) को बोने पर आधे शुद्ध मटर और उनके वर्णसंकर मटर उत्पन्न हुए अर्थात् 1/4 मटर विशुद्ध बड़ी, 1/4 विशुद्ध छोटी और 2/4 मध्यम बड़ी मटर उत्पन्न हुई। इस प्रकार इन मटरों को बार–बार बोने पर धीरे–धीरे वर्णसंकर मटरों की संख्या कम होती गई। मटरों पर किए गये इस प्रयोग से मेण्डल इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि व्यक्त गुण जो अधिक प्रबल या जाग्रत होता है। वह सुप्त गुण को निष्क्रिय कर देता है। व्यक्त गुण के अभाव में जो कि सुप्तावस्था में रहते हैं, सुप्त गुण प्रकट होकर प्रधान प्रकार के गुण का रूप धारण कर लेते हैं, इसलिए इस "प्रधान प्रकार की ओर प्रत्यागमन का सिद्धांत" (Law of Regression of the main type) भी कहते हैं।

मेण्डल का मटरों पर प्रयोग

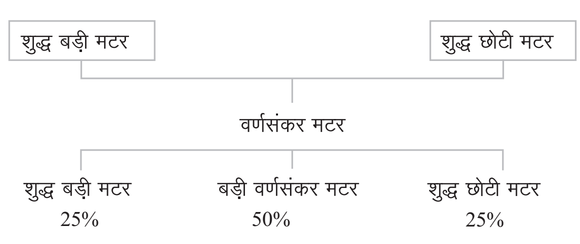

- इस प्रकार उसने चूहों पर भी प्रयोग किए। यह प्रयोग सफेद और काले चूहों को साथ रखकर किया गया। सफेद और काले चूहों से काले चूहे ही उत्पन्न हुए। उसके बाद इन वर्ण संकर चूहों के साथ रखने पर काले और सफेद दोनों रंग के चूहे पैदा हुए। इनका अनुपात 3 : 1 का था अर्थात् तीन काले और एक सफेद। इसके बाद सफेद से सफेद चूहा उत्पन्न हुआ। मेण्डल ने अपने प्रयोगों के आधार पर जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया वह मेण्डलवाद के नाम से प्रसिद्ध है। मेण्डल के प्रयोगों से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—
  - मेण्डल का नियम प्रत्यागमन को स्पष्ट करता है।
  - बालक में माता–पिता की ओर से एक–एक गुणसूत्र आता है।
  - गुणसूत्र की अभिव्यक्ति संयोग पर निर्भर करती है।
  - एक ही प्रकार के गुणसूत्र अपने ही प्रकार की अभिव्यक्ति करते हैं।
  - जागृत गुणसूत्र अभिव्यक्ति करता है, सुषुप्त नहीं।
  - कालान्तर में यह अनुपात 1 : 2, 24, 1 : 2, 1 : 2 होता जाता है।

बाल विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव (Influence of Heredity on Child Development)

- वंशानुक्रम निम्नलिखित प्रकार से बाल विकास को प्रभावित करता है—
  - **तन्त्रिका तन्त्र की बनावट**—तन्त्रिका तन्त्र में प्राणी की वृद्धि, सीखना, आदतें विचार और आकांक्षाएं आदि केन्द्रित रहते हैं। तन्त्रिका तन्त्र बालक में वंशानुक्रम से ही प्राप्त होता है। इससे ही ज्ञानेन्द्रियाँ, पेशियाँ तथा ग्रन्थियाँ आदि प्रभावित होती रहती हैं। छात्र की प्रतिक्रियाएँ तन्त्रिका तन्त्र पर निर्भर करती हैं। अतः हम बालक के तन्त्रिका तन्त्र के विकास को सामान्य, पिछड़ा एवं असामान्य आदि भागों में विभाजित कर सकते हैं। बालक का भविष्य तन्त्रिका तन्त्र की बनावट पर भी निर्भर करता है।
  - **बुद्धि पर प्रभाव**—बुद्धि का विकास किस सीमा तक हो सकता है, इसका निश्चय वंशानुक्रम द्वारा ही होता है।
  - **मूल प्रवृत्तियों पर प्रभाव**—मूल प्रवृत्ति बालक के व्यवहार को शक्ति प्रदान करती है। इसको हम देख नहीं सकते बल्कि व्यक्ति के व्यवहार को देखकर पता लगाते हैं कि कौन–सी मूल प्रवृत्ति जागृत होकर व्यवहार का संचालन कर रही है? मैक्डूगल महोदय ने इनका पता लगाया था और इनको जानने के लिए उन्होंने प्रत्येक मूल प्रवृत्ति के साथ एक संवेग को भी जोड़ दिया, जो मूल प्रवृत्ति का प्रतीक होता है। संवेग को देखकर मूल प्रवृत्ति का पता लगाया जाता है। आपने यह भी स्पष्ट किया है कि ये भी वंश से ही प्राप्त होते हैं। मूल प्रवृत्तियाँ एवं सहयोगी संवेग निम्नवत हैं—
    - मूल प्रवृत्ति—संवेग
    - पलायन—भय
    - निवृत्ति—घृणा
    - जिज्ञासा—आश्चर्य
    - युयुत्सा—क्रोध
    - आत्मगौरव—सकारात्मक आत्मानुभूति
  - **स्वभाव का प्रभाव**—बालक के स्वभाव का प्रकटीकरण उनके माता–पिता के स्वभाव के अनुकूल होता है। यदि बालक के माता–पिता मीठा बोलते हैं तो उसका स्वभाव भी मीठा बोलने वाला होगा। इसी प्रकार से क्रोधी एवं निर्दयी स्वभाव वाले माता–पिता के बच्चों का स्वभाव भी क्रोधी होगा।
  - **शारीरिक गठन**—बालक का शारीरिक गठन एवं शरीर की बनावट उसके वंशजों पर निर्भर करती है। **कार्ल पियरसन** ने बताया है कि माता–पिता की लम्बाई, रंग एवं स्वास्थ्य आदि का प्रभाव बालकों पर पड़ता है। **क्रेश्मर** महोदय ने एक अध्ययन कर शारीरिक गठन के आधार पर सम्पूर्ण मानव जाति को तीन भागों में बाँटा है—
    - पिकनिक
    - ऐथलैटिक
    - ऐस्थेनिक
  - **व्यावसायिक योग्यता पर प्रभाव**—बालकों में माता–पिता की व्यावसायिक योग्यता की कुशलता भी हस्तान्तरित होती हैं 'कैटेल' ने 885 अमेरिकन वैज्ञानिकों के परिवारों का अध्ययन कर पाया कि उनमें से 2/5 व्यवसायी वर्ग, 1/2 भाग उत्पादक वर्ग और केवल 1/4 भाग कृषि वर्ग के थे। अतः स्पष्ट है कि व्यावसायिक कुशलता वंश पर आधारित होती है।
  - **सामाजिक स्थिति पर प्रभाव**—जो लोग वंश से अच्छा चरित्र, गुण या सामाजिक स्थिति सम्बन्धी विशेषताओं को लेकर उत्पन्न होते हैं, वे ही सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। **विनसिप** महोदय का मत है कि "गुणवान एवं प्रतिष्ठित माता–पिता की सन्तान ही प्रतिष्ठा प्राप्त करती है।" जैसे "रिचर्ड एडवर्ड नामक परिवार के रिचर्ड एक प्रतिष्ठित नागरिक थे। इनकी सन्तानें विधानसभा के सदस्य एवं महाविद्यालयों के अध्यक्ष आदि प्रतिष्ठित पदों पर आसीन हुए। अतः स्पष्ट है कि सामाजिक स्थिति वंशानुक्रमणीय होती है।"

31. वातावरण (Environment)

वातावरण का अर्थ (Meaning of Environment)

- 'वातावरण' के लिए 'पर्यावरण' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना 'परि + आवरण'। जहाँ परि का अर्थ है—चारों ओर एवं 'आवरण' का अर्थ है—ढकने वाला। इस प्रकार पर्यावरण या वातावरण वह वस्तु है जो चारों ओर से ढके हुए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि जो हमारे आस–पास है, वही हमारा वातावरण है।
- वातावरण में वह सभी बाह्य शक्तियाँ, प्रभाव, परिस्थितियाँ आदि सम्मिलित हैं जो बच्चे के व्यवहार, शारीरिक तथा मानसिक विकास को प्रभावित करती हैं।
- **वातावरण दो प्रकार का होता है**—भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक। भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार का वातावरण व्यक्ति के व्यवहार तथा शारीरिक व मानसिक विकास को प्रभावित करता है। भौतिक वातावरण में जलवायु के अलावा और भी चीजें आ जाती हैं, जिन्हें देखा तथा स्पर्श

किया जा सकता है। जबकि मनोवैज्ञानिक वातावरण बच्चे के व्यक्तित्व और व्यवहार को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

वातावरण की परिभाषा (Definition of Environment)

- वातावरण के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—
  - **वुडवर्थ** के अनुसार, "पर्यावरण में वे तत्व आते हैं जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरम्भ करने के समय से प्रभावित किया है।"
  - **एनास्टासी** के अनुसार, "वातावरण वह प्रत्येक वस्तु है, जो व्यक्ति के जीन्स के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करती है।"
  - **रॉस** के अनुसार, "वातावरण वह शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"
  - **जिस्बर्ट** के अनुसार, "वातावरण वह हर वस्तु है जो किसी अन्य वस्तु को घेरे हुए है और उस पर सीधे अपना प्रभाव डालती है।"

पर्यावरण के प्रकार (Types of Environment)

- पर्यावरण दो प्रकार के होते हैं—
  - आंतरिक पर्यावरण,
  - बाह्य पर्यावरण।

आंतरिक पर्यावरण (Internal Environment)

- आंतरिक पर्यावरण किसी जीव के आंतरिक परिवेश को संदर्भित करता है।
- आंतरिक पर्यावरण को भी दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है—
  - प्रसवपूर्व पर्यावरण और
  - प्रसवोत्तर पर्यावरण।
  - **प्रसव पूर्व पर्यावरण (जन्म से पूर्व वातावरण)**—प्रसवपूर्व विकास विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है; जैसे—कि उम्र हॉर्मोनल स्तर, आहार, स्वास्थ्य, माँ की भावनात्मक स्थिति दवाएँ व शराब और गर्भावस्था के दौरान माँ द्वारा सेवन की जाने वाली दवाएँ, गर्भावस्था के दौरान बीमारियाँ, संक्रमण आदि। इनमें से किसी भी कारक की उपस्थिति भ्रूण के विकास को प्रभावित करती है। इनमें से किसी भी कारक की उपस्थिति शिशु में विकासात्मक दोष और हानि उत्पन्न कर सकती है।
  - **प्रसवोत्तर पर्यावरण**
    - प्रसवोत्तर अवधि के दौरान, बाहरी पर्यावरणीय कारक अधिक सक्रिय और प्रभावशाली होते हैं, क्योंकि व्यक्ति लगातार आसपास के वातावरण के साथ अन्योन्यक्रिया कर रहा होता है।
    - जन्म के तुरंत बाद और जीवन के शुरुआती चरणों के दौरान पर्यावरणीय अनुभवों और प्रतिक्रियाओं का बच्चे की आत्म–अवधारणा, व्यक्तित्व व्यवहार, भावनात्मक और सामाजिक संबंधों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है।
    - बच्चे का घर और परिवार प्रथम एवं प्रभावशाली कारक है। घर का वातावरण, आवास स्थिति, परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, परिवार का आकार, आहार, स्वास्थ्य सेवाएँ, पालन–पोषण की शैली, माता–पिता की शिक्षा व बच्चों के प्रति दृष्टिकोण सीधे बच्चे के शारीरिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास से संबंधित है।
    - स्कूल, शिक्षक और सहपाठी बच्चे में आदतों, मूल्यों और दृष्टिकोण को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
    - बड़े पैमाने पर समाज भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बच्चे के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को प्रभावित करता है।
    - वैश्वीकरण, शहरीकरण, औद्योगिक जैसे सामाजिक परिवर्तन बच्चे के विकास पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

बाह्य वातावरण (External Environment)

- बाह्य वातावरण को आगे दो प्रकारों में विभाजित किया गया है। भौतिक वातावरण (वायु, पेड़, जानवर आदि) और सामाजिक वातावरण (साथी समूह, अज्ञात लोग आदि)।
  - **भौतिक पर्यावरण—**इसमें भूमि, वायु जल, पौधे, पशु, भवन अन्य बुनियादी ढाँचे और सभी प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं, जो सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए हमारी बुनियादी जरूरतों और अवसर को प्रदान करते हैं। लोगों की शारीरिक एवं भावनात्मक भलाई के लिये एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण महत्वपूर्ण है।
  - **सामाजिक वातावरण—**एक व्यक्ति का सामाजिक वातावरण उसका समाज और उसके आसपास का वातावरण होता है, जो किसी भी रूप में मनुष्य द्वारा प्रभावित होता है। इसमें सभी रिश्ते-नाते, संस्कृति, संस्थान और भौतिक संरचनाएँ शामिल हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव (Environmental Influences)

- प्रकृति से तात्पर्य यह है कि बच्चे को आनुवंशिक (विरासत) रूप में माता–पिता से क्या प्राप्त होता है, जबकि बच्चे के विकास पर पर्यावरण के प्रभाव को पोषण कहा जाता है।

बाल-विकास पर वातावरण का प्रभाव (Influence of Environment on Child Development)

- बालक के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण का भी प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है। हम यहाँ इन पक्षों पर विचार करेंगे, जो वातावरण से प्रभावित होते हैं—
  - **समाजार्थिक पृष्ठभूमि**—जो बच्चे अच्छे सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों से संबंध रखते हैं वे गरीब परिवारों के बच्चों की अपेक्षा जल्दी विकसित होते हैं। इसका मुख्य कारण अच्छा आहार, कम बीमारी तथा स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल आदि हैं।
  - **पारिवारिक संरचना**—शहरीकरण तथा संयुक्त परिवारों के विघटन से माँ–बाप दोनों नौकरी पर जाने लगते हैं, जिसकी वजह से बढ़ते हुए बच्चे को सामाजिक वातावरण नहीं प्राप्त होता है। बच्चों और माँ–बाप के बीच जिस प्रकार की अंतःक्रिया होनी चाहिए वह नहीं हो पाती। इसका भी विकास पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

- **बौद्धिक वातावरण**—अगर बच्चे को अच्छा बौद्धिक वातावरण प्राप्त हो जिसमें उसे सीखने–समझने तथा अपनी उत्सुकताओं को संतुष्ट करने का अवसर मिले तो निश्चित तौर पर विकास और अच्छी प्रकार से और तेजी से होता है, इसलिए बच्चे को ऐसा वातावरण प्रदान कराना आवश्यक है।
- **संगी साथी**—बच्चे के विकास पर उसके संगी–साथियों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है अगर बच्चा ऐसे साथियों के साथ रहता है जिनमें अच्छे संस्कार हैं तथा एक–दूसरे के साथ सहयोग से रहने के गुण हैं तो बच्चा अच्छे विकास की तरफ अग्रसर होता है।
- **आराम और शारीरिक क्रिया**—अच्छे विकास के लिए यह जरूरी है कि बच्चे को पूरी नींद, आराम तथा उपयुक्त व्यायाम के पूरे अवसर प्राप्त हों। आयु अनुसार बच्चे को यह सब सुविधाएँ प्रदान करने से विकास में गति आना स्वाभाविक है।
- **शिक्षा**—बालक की शिक्षा बुद्धि, मानसिक प्रक्रिया और सुन्दर वातावरण पर निर्भर करती है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सामान्य विकास करना होता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में बालकों का सही विकास उपयुक्त शैक्षिक वातावरण पर ही निर्भर करता है। प्रायः यह देखने में आता है कि उच्च बुद्धि वाले बालक भी सही वातावरण के बिना उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं।
- **व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव**—कूले का मत कि व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति का विकास आन्तरिक क्षमताओं का विकास करके और नवीनताओं को ग्रहण करके किया जाता है। इन दोनों ही परिस्थितियों के लिए उपयुक्त वातावरण को उपयोगी माना गया है। कूल महोदय ने यूरोप के 71 साहित्यकारों का अध्ययन कर पाया कि उनके व्यक्तित्व का विकास स्वस्थ वातावरण में पालन–पोषण के द्वारा हुआ।

बाल-विकास पर विद्यालय की आन्तरिक स्थितियों का प्रभाव (The Impact of Internal Conditions of the School on Child Development)

- बालक जब विद्यालय में प्रवेश लेता है तो विद्यालय में अधिक सुलभ साधनों की अपेक्षा रखता है। विद्यालय से सम्बन्धित कुछ साधनों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है—
  - **विद्यालय का वातावरण**—शिक्षकों का व्यवहार बालकों के प्रति अति सरल, सौम्य एवं स्नेहमयी होना चाहिए, जिससे बालक घर की याद कर परेशान न हों । विद्यालय का भवन, साफ, स्वच्छ तथा सुविधाओं से युक्त होना चाहिए। बीस या पच्चीस बालकों पर एक शिक्षक की नियुक्ति होनी चाहिए। एक अच्छे विद्यालय में पठन–पाठन की सामग्री, बालकों के खेलने के सुन्दर खिलौने, बाग–बगीचे आदि भौतिक संसाधन होने चाहिए जिससे बालक विद्यालय के प्रति आकर्षित हो सकें।
  - **समय विभाजन चक्र**—विद्यालय में बड़े छात्रों की अपेक्षा छोटे आयु वर्ग के छात्रों के समय विभाजन चक्र में अधिक अन्तर रहता है। छोटे बच्चों की शाला प्रातः 9:30 से 12:30 तक ही संचालित करना चाहिए। इस अवधि में अल्प भोजन, विश्राम, स्वास्थ्य निरीक्षण तथा प्रार्थना सभा आदि के लिये समय नियत किया जाय। विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत बाल–विकास में निम्नलिखित अभिकरण पर्याप्त सहायता पहुँचा रहे हैं।
  - **शिशु-क्रीड़ा केन्द्र**—प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए नगरीय क्षेत्रों में किण्डर गार्टन, माण्टेसरी और नर्सरी विद्यालय चल रहे हैं परन्तु ये शिक्षा संस्थाएँ शहरी धनवानों के शिशुओं को ही शिक्षा प्रदान कर रही हैं। इस दोष को दूर करने के लिए अब ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की शिक्षा पूर्ति के लिए तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिये कोठारी आयोग की सिफारिशों के आधार पर शिशु–क्रीड़ा केन्द्रों या आँगनबाड़ी की व्यवस्था की गयी है। ये शिशु क्रीड़ा केन्द्र बालकों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार करते हैं जिससे बालक विद्यालय के वातावरण से परिचित हो जाते हैं। ये केन्द्र बालकों के शारीरिक मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में सहायक होते हैं। ये केन्द्र बालकों में स्वस्थ आदतों का निर्माण कर खेल–खेल में आत्मनिर्भरता, कलात्मकता तथा सृजनात्मकता जैसे गुणों का विकास करते हैं। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण एवं परिस्थितियाँ बालक के विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

बाल–विकास पर संचार माध्यमों का प्रभाव (Influence of Media on Child Development)

- जनसंचार माध्यमों का भी बालक के विकास पर प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दूरदर्शन का प्रभाव तो आजकल बालक पर तीन अथवा चार वर्ष की आयु में ही दिखाई देने लगता है। रेडियो, टेपरिकॉर्डर, चलचित्र का प्रभाव बालक पर बहुत पहले से ही पड़ने लगा है। आजकल टेलीफोन, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का प्रभाव विद्यालय में प्रवेश और अध्ययन करने के बाद पड़ता है, क्योंकि इन साधनों हेतु शैक्षिक ज्ञान की जरूरत होती है। बालक जब पढ़ना सीख जाता है तब इन संचार साधनों से प्रभावित होता है। बालक के विकास में संचार साधनों की भूमिका को निम्नलिखित शीर्षकों द्वारा समझा जा सकता है—
  - **शारीरिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**—आधुनिक समय में संचार साधनों के द्वारा बालकों को स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनके माध्यम से बालक अपने शारीरिक विकास को सन्तुलित रूप प्रदान कर सकते हैं, जैसे—दूरदर्शन पर योगाभ्यास के कार्यक्रमों एवं आसनों के माध्यम से बालक अपनी शारीरिक विकृतियों को दूर कर सकता है और अपने शरीर का सन्तुलित विकास कर सकता है। इसी प्रकार संचार माध्यमों के द्वारा बालक ज्ञान प्राप्त करके अपने शारीरिक विकास को नवीन दिशा प्रदान कर सकते हैं।
  - **मानसिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**—बालक के मानसिक विकास में भी संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संचार साधनों के द्वारा बालक नवीन तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिनसे उनमें तर्क एवं चिन्तन शक्ति का विकास होता है। दूरदर्शन के माध्यम से बालक नयी घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जैसे डिस्कवरी चैनल द्वारा उनमें तर्क एवं चिन्तन शक्ति विकसित होती है। कई कार्यक्रम वे इन्टरनेट एवं वेबसाइटों के माध्यमों से देखते हैं, इससे उनका सन्तुलित मानसिक विकास होता है।

- **संवेगात्मक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–बालक संचार साधनों के माध्यमों से विविध तरह की कहानियाँ, कविताएँ एवं नाटकों को आत्मसात करता है। उनके संवेगों की स्थिरता एवं स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण रखकर उनको देखता एवं सुनता है। इसके सुखद एवं अच्छे परिणामों से परिचित होता है। इससे बालक संवेगात्मक स्थिरता एवं संवेगों पर नियंत्रण रखना सीखता है। इन समस्त माध्यमों से उसमें विविध तरह के संवेग, प्रेम, भय, क्रोध आदि का सन्तुलित विकास होता है। इसलिए सन्तुलित संवेगात्मक विकास में जनसंचार साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **सामाजिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–जनसंचार माध्यमों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक सामग्रियों का प्रचार किया जाता है । इस प्रकार उससे बाल–विकास भी प्रभावित होता है। इस तरह के कार्यक्रम देखकर बालकों में भी सामाजिक गुणों का विकास होता है। बालकों द्वारा टेलीविजन देखते समय विभिन्न नाटक एवं फिल्में देखी जाती हैं जिनमें हमारे सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन की झाँकी दिखाई देती है। इसी क्रम में रेडियो, टेपरिकॉर्डर, पत्रिका एवं समाचार–पत्रों के माध्यम से छात्रों में सामाजिक विकास की तीव्रता पायी जाती है। इससे यह ज्ञात होता है कि संचार माध्यम सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं।
- **भाषायी विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–बालकों के भाषायी विकास पर भी संचार साधनों का विशेष प्रभाव पड़ता है, क्योंकि भाषायी विकास में श्रवण का महत्वपूर्ण स्थान है। संचार साधनों में कुछ साधन ऐसे होते हैं जो श्रव्य–दृश्य हैं; जैसे–चलचित्र, दूरदर्शन तथा वीडियो आदि। इस तरह के साधन बालकों के भाषायी विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि इसमें बालक भाषा के शब्दों का उच्चारण की प्रक्रिया एवं बोलने वाले व्यक्ति के हावभाव को समझ सकता है। इसी तरह सुनने वाले तथा देखने वाले संचार साधनों के माध्यम से भी भाषायी विकास प्रभावित होता है।
- **चारित्रिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–संचार साधनों में विविध साधन ऐसे होते हैं, जिनके द्वारा बालक का चारित्रिक विकास सम्भव होता है; जैसे–समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं में विविध कहानियाँ, लघु कथाएँ निकलती रहती हैं, जिन्हें पढ़कर या सुनकर बालक अपने भीतर त्याग, सहयोग, प्रेम, परोपकार, दया जैसे विभिन्न चारित्रिक गुणों को समाहित करता है। टेलीविजन पर नाटक अथवा फिल्में देखकर स्वयं की तुलना नायक अथवा नायिका से करके उसके गुणों को स्वयं व्यक्त करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि चारित्रिक विकास पर भी जनसंचार साधनों का प्रभाव पड़ता है।
- **दक्षताओं के विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट के माध्यम से आज छात्र कई तरह के खेलकूद अथवा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। दूरदर्शन स्पोर्ट चैनल एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं से संबंधित विविध चैनलों को देखकर बालक विभिन्न क्षेत्रों में दक्षताओं को प्राप्त कर सकता है। छात्र कम्प्यूटर पर ड्राइंग प्रोग्राम के माध्यम से ड्राइंग में दक्षता प्राप्त करता है एवं टाइपिंग के माध्यम से टाइपिंग में मास्टरी कर सकता है। इससे सिद्ध होता है कि संचार साधन बालकों में विविध तरह की दक्षताओं का विकास कर सकते हैं।
- **मूल्यों के विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–संचार साधनों के द्वारा सामाजिक मूल्य, जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य कई मानवीय मूल्यों को कई तरह की कथाओं एवं नाटकों के माध्यम से विकसित किया जाता है। इन नाटकों को देखकर छात्र अपने विवेक से उन गुणों को जो उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं, अपने भीतर समाहित करते हैं। समाचार–पत्रों में भी विविध शीर्षकों के माध्यम से मूल्यों को विकसित करने वाली लघु कथाएँ प्रभावित होती हैं। इस तरह संचार साधन मूल्य विकास को भी प्रभावित करते हैं।
- **सृजनात्मक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–संचार साधन बालक के सृजनात्मक विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। टेलीविजन पर ज्ञानदर्शन के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। उसमें विविध आकृतियों के निर्माण एवं विज्ञान संबंधी प्रयोगों का प्रसारण होता है। इन कार्यक्रमों को देखकर बालकों में सृजनात्मकता का विकास होता है।
- **शैक्षिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव**–कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से हम विश्व के किसी भी देश के शैक्षिक कार्यक्रमों को देख सकते हैं जिसके द्वारा बालक अपनी रुचि एवं इच्छा के अनुसार शैक्षिक गतिविधियों का निरीक्षण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिकाओं एवं रेडियो पर भी विविध शैक्षिक कार्यक्रम आते हैं। टेलीविजन पर भी विज्ञान एवं गणित से संबंधित शैक्षिक कार्यक्रम आते हैं। इन सभी से बालकों का शैक्षिक विकास बहुत तेजी से होता है।

वंशानुक्रम और वातावरण का संबंध एवं सापेक्षिक महत्व (Relationship and Relative Importance of Heredity and Environment)

- वंशानुक्रम और वातावरण संबंधी परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वंशानुक्रम और वातावरण समान होने पर भी बालकों में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है।
- **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार, "व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशानुक्रम और न केवल वातावरण से होता है। बल्कि वह जैविकीय विरासत और सामाजिक विरासत के एकीकरण की उपज है।"
- मानव विकास कार्य में दोनों एक–दूसरे के पूरक और सहायक हैं। मानव के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का योग है। अर्थात् कह सकते हैं, कि विकास वंशानुक्रम या वातावरण दोनों में से किसी एक पर पूर्ण रूप से निर्भर नहीं है बल्कि दोनों के पारस्परिक प्रभाव पर निर्भर है।
- **वुडवर्थ** और **मारिक्स** के अनुसार, "व्यक्ति वंशानुक्रम और वातावरण का योगफल नहीं वरन् दोनों तत्वों का गुणनफल है।" अर्थात् विकास = वंशानुक्रम वातावरण। वंशानुक्रम को व्यक्ति बीज रूप में प्राप्त करता है और बीज का विकास उचित पोषण द्वारा होता है।

पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत (Ecological Systems Theory)

- उरी ब्रोंफेनब्रेनर एक रूसी मूल के अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, उन्होंने 1976 में मानव विकास की व्याख्या करने वाले सबसे प्रभावशाली सिद्धांतों में से एक का प्रस्ताव दिया है और हाल ही में ब्रोंफेनब्रेनर ने 2000 में एक जैव–पारिस्थितिक मॉडल के रूप में अपने दृष्टिकोण की विशेषता बताई है। उनके सिद्धांत को ''**पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत**'' के रूप में जाना जाता है।
- पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत ने प्रस्तावित किया कि **मानव विकास कई सामाजिक–सांस्कृतिक या पर्यावरणीय बलों से प्रभावित है।**
- उन्होंने पाँच संरचनाओं से युक्त वातावरण जैसे कि **लघु मंडल, मध्य–मंडल, बृहत मंडल, बाह्यमंडल, घटक मंडल की परिकल्पना की।**

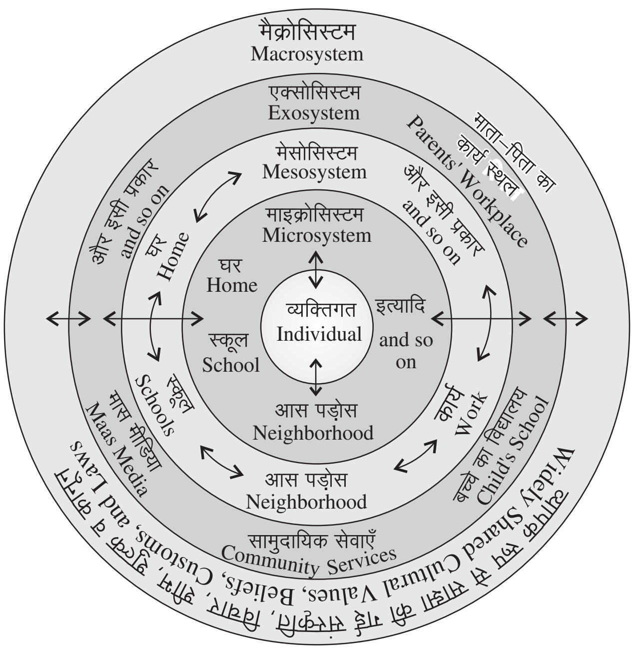

आइए क्रमिक क्रम में सभी 5 पारिस्थितिक तंत्र को समझते हैं–

- **लघु मंडल**–यह तात्कालिक पर्यावरणीय संरचना है जहाँ एक व्यक्ति का अपने महत्वपूर्ण दूसरों जैसे माता–पिता, भाई–बहन, शिक्षक और साथियों के साथ सीधा संपर्क होता है। ब्रोंफेनब्रेनर के अनुसार, इस प्रणाली में, व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण दूसरों के बीच संबंध द्विदिशात्मक होता है।
- **मध्यमंडल**–यह इस मॉडल की दूसरी स्तरीय संरचना है। इस स्तर में **लघुमंडल के बीच संबंध** शामिल हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चे के माता–पिता शिक्षकों से कैसे संबंधित होते हैं या माता–पिता अपने बच्चे के दोस्तों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह बच्चे के व्यवहार को प्रभावित करता है।
- **बाह्यमंडल**–इसमें उन **सामाजिक संदर्भों को शामिल किया गया है जिन पर एक विकासशील व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं है** जैसे कि माता–पिता का स्थानांतरण, कार्य अनुसूची, प्रसूति की उपलब्धता, पितृत्व अवकाश या अस्पताल की उपलब्धता।
- **बृहत् मंडल**–इसमें सांस्कृतिक मूल्य, रिवाज और कानून शामिल हैं। यह सबसे बाहरी स्तर है और इसका कोई विशिष्ट संदर्भ नहीं है।
  - एक माँ, उसका कार्यस्थल, उसका बच्चा और बच्चे का स्कूल एक बड़ी सांस्कृतिक व्यवस्था का हिस्सा हैं।
  - उदाहरण के लिए, भारत में वृहद प्रणाली में लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की विचारधारा शामिल है जो एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में बच्चे के विकास को प्रभावित करती है।
  - बृहत् मंडल विकसित होता है और प्रत्येक भावी पीढ़ी एक अद्वितीय बृहत् मंडल में आगे बढ़ सकती है।
- **घटक मंडल**–शब्द 'घटक' समय को संदर्भित करता है। ब्रोंफेनब्रेनर के अनुसार, यह एक **अस्थायी स्तर है। यह तेजी से बदलता है और किसी भी सामाजिक–ऐतिहासिक घटनाओं** जैसे कि युद्ध या देश की आर्थिक स्थिति को संदर्भित करता है।

32. पियाजे, कोहलबर्ग, वायगोत्स्की : संरचना और आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Piaget, Kohlberg, Vygotsky's Construction and Critical Approach)

- सामान्य आदमी की भाषा में, संज्ञान दुनिया के बारे में आपके ज्ञान को संदर्भित करता है, जबकि, संज्ञानात्मक प्रक्रिया, वे मानसिक प्रक्रियाएँ हैं जिनके माध्यम से हम अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। इस प्रकार, संज्ञानात्मक विकास सूचना प्रसंस्करण, वैचारिक संसाधनों, अवधारणात्मक कौशल, भाषा सीखने आदि के संदर्भ में एक बच्चे के विकास को संदर्भित करता है।
- यह अध्याय संज्ञानात्मक विकास के दो प्रमुख सिद्धांतों से संबंधित है, अर्थात्, पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत और वायगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास का सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत। फिर, यह अध्याय नैतिक विकास के कोहलबर्ग के सिद्धांत की मदद से नैतिक विकास पर चर्चा में सहयोगी होगा।

33. जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत (Jean Piaget's Theory of Cognitive Development)

- **संज्ञान (Cognition)** का तात्पर्य उन सारी मानसिक क्रियाओं से है जिसका संबंध चिंतन (Thinking), समस्या-समाधान, भाषा संप्रेषण तथा और भी बहुत सारी मानसिक प्रक्रियाओं से है।
  - **निस्सर** (Neisser 1967) ने कहा है कि 'संज्ञान' संवेदी सूचनाओं (Sensory Information) को ग्रहण करके उसका रूपान्तरण (Transformation), विस्तारण (Elaboration), संग्रहण (Storage), पुनर्लाभ (Recovery) तथा इसके समुचित प्रयोग करने से होता है।
  - **जीन पियाजे** (Jean Piaget) संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में कार्य करने वाले मनोवैज्ञानिकों में सर्वाधिक प्रभावशाली माने जाते हैं। पियाजे का जन्म, 9 अगस्त सन् 1896 को स्विट्जरलैंड में हुआ था। उन्होंने जन्तु–विज्ञान (Zoology) में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।
  - मनोविज्ञान के प्रशिक्षण के दौरान वे अल्फ्रेड बिने (Alfred Binet) की प्रयोगशाला में **बुद्धि–परीक्षण** (Intelligence Tests) पर जब

कार्य कर रहे थे उसी समय उन्होंने विभिन्न आयु के बच्चों के द्वारा अपने चारों ओर के बाह्य जगत के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया का अध्ययन करना शुरू कर दिया। उनकी 1923 और 1932 के बीच पाँच पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें उन्होंने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। पियाजे के सिद्धान्त की प्रमुख मान्यता यह है कि बालक के ज्ञान के विकास में वह खुद एक सक्रिय साझेदार की भूमिका अदा करता है और वह धीरे-धीरे वास्तविकता के स्वरूप को भी समझने लगता है।

34. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास से संबंधित संज्ञानात्मक अवधारणाएँ (Cognitive Concepts Related to Piaget's Cognitive Development)

- पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को समझने हेतु कुछ महत्वपूर्ण संप्रत्ययों (Important Concepts) को समझना आवश्यक है जिनका वर्णन निम्नवत है—
  - **स्कीमाटा—**पियाजे के अनुसार अनुभव (Experience) या व्यवहार (Behavior) को संगठित करने की ज्ञानात्मक संरचना को स्कीमाटा कहते हैं। एक नवजात शिशु में स्कीमाटा एक सहजात प्रक्रिया है, जैसे शिशु की चूसने की प्रतिक्रिया। बच्चा जैसे ही बाहरी दुनिया के साथ अन्तःक्रिया करना प्रारम्भ करता है, इन स्कीमाटा में भी तेजी से परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। धीर–धीरे बच्चे स्कीमाटा के सहारे समस्या समाधान के नियम तथा वर्गीकरण करना जान लेते हैं। इस तरह स्कीमाटा का संबंध मानसिक संक्रिया (mental operation) से है।
  - **संगठन—**संगठन से तात्पर्य प्रत्यक्षीकृत तथा बौद्धिक सूचनाओं (perceptual and cognitive information) को सही तरीके से बौद्धिक संरचनाओं (cognitive structure) में व्यवस्थित करने से है जो इसे बाह्य वातावरण के साथ समायोजन करने में उसके कार्यों को संगठित करता है। व्यक्ति मिलने वाली नई सूचनाओं को पूर्व निर्मित संरचनाओं के साथ संगठित करने की कोशिश करता है, परन्तु कभी-कभी इस कार्य में सफल नहीं हो पाता है, तब वह अनुकूलन करता है।
  - **अनुकूलन—**पियाजे के अनुसार अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसमें बालक अपने को बाहरी वातावरण (External Environment) के साथ समायोजन करने की कोशिश करता है। यह एक जन्मजात, प्रवृत्ति (Inborn Tendency) है जिसके अंतर्गत दो प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं—आत्मसातीकरण (Assimilation) तथा समाविष्टीकरण (Accommodation)
    - **आत्मसातीकरण** मूलरूप से आत्मसातीकरण एक नई वस्तु अथवा घटना को वर्तमान अनुभवों में सम्मिलित करने की प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए यदि एक बालक के हाथ में टॉफी रख दी जाती है तो उसे वह तुरंत मुँह में डाल देता है, क्योंकि उसे यह पता है कि टॉफी एक खाद्य वस्तु है। यहाँ बालक अनुकूलन के द्वारा खाने की क्रिया को आत्मसात कर रहा है अर्थात् पुरानी बौद्धिक क्रिया को नवीन क्रिया के साथ समायोजित करता है। अनुकूलन की यह प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती रहती है।
    - **समाविष्टीकरण** से तात्पर्य वह प्रक्रिया है, जिसमें बालक नए अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती संरचना में सुधार लाने या परिवर्तन लाने की कोशिश करता है। जिससे वह वातावरण के साथ समायोजन कर सके। उदाहरण के लिए जब बालक को टॉफी के स्थान पर रसगुल्ला देते हैं तो बालक यह जानता है, टॉफी मीठी होती है पर अब वह अपने मानसिक सरंचना (Mental structure) में परिवर्तन लाता है, और इसमें नई बातें जोड़ता है कि टॉफी और रसगुल्ला दोनों अलग-अलग खाद्य-पदार्थ हैं जबकि दोनों का स्वाद मीठा है।
- आत्मसातीकरण तथा समाविष्टीकरण तभी संभव है जब वातावरण के उद्दीपक बालक के बौद्धिक स्तर (Intellectual level) के अनुरूप होते हैं।
  - **साम्यधारण**–साम्यधारण (Equilibration) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक आत्मसातीकरण (Assimilation) और समाविष्टीकरण (Accommodation) के बीच संतुलन (Balance) स्थापित करता है। पियाजे के अनुसार अगर किसी बालक के सामने जब कोई समस्या आती है जिसका पूर्व अनुभव उसे नहीं होता है तो वह पूर्व अनुभूति के साथ उसे आत्मसात (Assimilate) करता है। फिर भी अगर समस्या का हल नहीं होता है तो वह अपने पूर्व अनुभव को अपने अनुसार रूपान्तरित (Modification) करता है। अर्थात् वह संतुलन कायम रखने के लिए आत्मसातीकरण और समायोजन दोनों प्रक्रिया करना शुरू कर देते हैं।
  - **संरक्षण**–पियाजे के अनुसार, संरक्षण का अर्थ वातावरण में परिवर्तन तथा स्थिरता को समझने और वस्तु के रंग-रूप में परिवर्तन तथा उसके तत्व के परिवर्तन में अन्तर करने की प्रक्रिया से है। दूसरे शब्दों में, संरक्षण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक में एक ओर वातावरण के परितर्वन तथा स्थिरता में अन्तर करने की क्षमता और दूसरी ओर वस्तु के रंग-रूप में परिवर्तन तथा उसके तत्व में परिवर्तन के बीच अन्तर करने की क्षमता से है।
  - **संज्ञानात्मक सरंचना**–पियाजे ने मानसिक योग्यताओं के सेट (Set) को संज्ञानात्मक संरचना की संज्ञा दी है। भिन्न–भिन्न आयु में बालकों की संज्ञानात्मक संरचना भिन्न–भिन्न हुआ करती है। बढ़ती हुई आयु के साथ यह संज्ञानात्मक संरचना सरल से जटिल बनती जाती है।
  - **मानसिक प्रचालन**–मानसिक-प्रचालन का अर्थ संज्ञानात्मक संरचना की सक्रियता से है। जब बालक किसी समस्या का समाधान करना शुरू करता है तो उसकी मानसिक संरचना सक्रिय बन जाती है। इसे ही मानसिक संक्रिया या मानसिक प्रचालन कहते हैं।
  - **स्कीम्स—**पियाजे के सिद्धान्त का यह संप्रत्यय वास्तव में मानसिक प्रचालन (Mental operation) संप्रत्यय का बाह्य रूप है। जब मानसिक प्रचालन बाह्य रूप से अभिव्यक्त (Expressed) होता है तो इसी अभिव्यक्त रूप को स्कीम्स कहते हैं।

- **स्कीमा**—पियाजे के अनुसार स्कीमा का अर्थ ऐसी मानसिक संरचना है, जिसका समान्यीकरण (Generalization) संभव हो। यह संप्रत्यय वस्तुतः संज्ञानात्मक संरचना तथा मानसिक प्रचालन के संप्रत्ययों से गहरे रूप से सम्बद्ध है।
- **विकेन्द्रण**—इस संप्रत्यय का संबंध यथार्थ चिंतन से है। विकेन्द्रण का अर्थ है कि कोई बालक किसी समस्या के समाधान के संबंध में किस सीमा तक वास्तविक ढंग से सोच-विचार करता है। इस संप्रत्यय का विपरीत (Opposite) आत्मकेन्द्रण (Ego centering) है। शुरू में बालक आत्मकेन्द्रित रूप से सोचता है और बाद में उम्र बढ़ने पर विकेन्द्रित ढंग से सोचने लगता है।
- **पारस्परिक क्रिया—**पियाजे के अनुसार बच्चों में वास्तविकता (Reality) को समझने तथा उसकी खोज करने की क्षमता न केवल बच्चों की प्रौढ़ता (Maturity) पर बल्कि उनके शिक्षण पर निर्भर करती है। यह दोनों की पारस्परिक क्रिया (Interaction) पर आधारित होते हैं।
- **असंतुलन—**जब बच्चे का अनुभव उनकी समझ से मेल खाता है तो वे संतुलन की स्थिति में होते हैं। यदि वे किसी ऐसी नई स्थिति या कार्य का सामना करते हैं जिसे वे नहीं समझते हैं, तो पियाजे इसे असंतुलन कहते हैं। यह तब होता है जब बच्चा वस्तुओं और अवधारणाओं को समझने के लिए नई जानकारी को समझने के लिए मौजूदा स्कीमा का उपयोग करने में असमर्थ होता है।
- **संगठन**—जब कोई बच्चा किसी उत्तेजक स्थिति का सामना करता है, तो उसकी अलग–अलग मानसिक गतिविधियाँ अलग–अलग काम नहीं करती हैं, बल्कि वे एक साथ काम करती हैं और सामूहिक रूप से उसे ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती हैं। मानसिक स्तर पर, यह गतिविधि लगातार होती रहती है। पर्यावरण के प्रति अनुकूलन संगठन का परिणाम है।
- **परिपक्वता**—जिस तरह से हम दुनिया को समझते हैं उस पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक परिपक्वता है, यह आनुवंशिक रूप से क्रमादेशित जैविक परिवर्तनों का प्रकट होने की क्रिया को संदर्भित करता है। पियाजे ने चार कारकों की पहचान की–जैविक परिपक्वता, गतिविधि, सामाजिक अनुभव और संतुलन–जो सोच में बदलाव को प्रभावित करने के लिए परस्पर क्रिया करते हैं।
- **अहंकारी भाषण**—जैसा कि पियाजे ने बताया है, अहंकारी भाषण अपरिपक्वता से जुड़ा हुआ है, यह संकेत है कि एक बच्चा अपने विकास के उस बिंदु पर है जहाँ उसने अभी तक दूसरों के साथ बातचीत करना नहीं सीखा है। इसलिए, जैसे–जैसे बच्चा परिपक्व होता जाएगा, अहंकारी भाषण की प्रवृत्ति कम होती जाएगी। पियाजे ने प्रीस्कूल भाषण को अहंकारी या समाजीकृत रूप में वर्णित किया। अहंकारी भाषण में एकालाप (खुद से बात करना) और सामूहिक एकालाप (दो या अधिक एक-दूसरे से बिना किसी संवाद के बात करना) के आनंद के लिए शब्दों और अक्षरों को दोहराना शामिल है।
- **सामूहिक एकालाप**—अहंकारी, असामाजिक भाषण का एक रूप जिसमें बच्चे एक-दूसरे के साथ सार्थक तरीके से संवाद किए बिना आपस में बात करते हैं। सामूहिक एकालाप की यह अवधारणा जीन पियाजे ने अपने पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में दी है।

संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ (Stages of Cognitive Development)

- संवेदी पेशीय अवस्था–जन्म से लगभग 2 वर्ष तक (Sensory Motor stage)
- पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था–2 से 7 वर्ष तक (Pre-operational Stage)
- मूर्त-सक्रिय अवस्था–7 से 11 वर्ष तक (Period of Concrete Operation)
- अपौचारिक सक्रिय अवस्था–11 वर्ष से किशोरावस्था तक (Period of formal operation)

संवेदी-पेशीय अवस्था (Sensory Motor Stage)

- यह अवस्था जन्म से दो साल तक की होती है। इस अवस्था में बालक कुछ संवेदी–पेशीय क्रियाएँ; जैसे–पकड़ना, चूसना, चीजों को इधर-उधर करना आदि स्वतः सहज क्रियाओं से व्यवस्थित क्रियाओं की ओर अग्रसित होता है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था में शिशुओं का बौद्धिक और संज्ञानात्मक विकास निम्नलिखित छः उप-अवस्थाओं से होकर गुजरता है–
  - **पहली अवस्था को प्रतिवर्त्त क्रिया की अवस्था** कहा जाता है जो जन्म से एक महीना तक की होती है। इस प्रतिवर्त्त क्रिया की अवस्था में शिशु अपने को नए वातावरण में अभियोजन करने की कोशिश करता है। इस समय चूसने की क्रिया सबसे प्रबल होती है।
  - **दूसरी अवस्था को प्रमुख वृत्तीय प्रतिक्रिया की अवस्था** कहा जाता है जो 1 से 4 महीने तक होती है। इस अवस्था में शिशुओं की प्रतिवर्त्त क्रियाएँ (Reflex activities) में कुछ हद तक परिवर्तन होता है। शिशु अपने को नए वातावरण में अभियोजन करने की कोशिश करता है। वह अपने अनुभवों को दोहराता है तथा उसमें रूपान्तरण लाने का प्रयास करता है। इसे प्रमुख (Primary) इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये प्रतिवर्त्त क्रियाएँ प्रमुख होती हैं एवं उन्हें वृत्तीय (Circular) इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इन क्रियाओं को वे बार-बार दोहराते हैं।
  - **तीसरी अवस्था गौण वृत्तीय प्रतिक्रिया की अवस्था** है जो 4 से 8 महीने तक की होती है। इस अवस्था में शिशु ऐसी क्रियाएँ करता है जो रुचिकर होती हैं तथा अपने आस–पास की वस्तुओं को छूने की कोशिश करता है; जैसे–चादर पर पड़े खिलौने को पाने के लिए चादर को खींचकर अपनी तरफ करता है और फिर खिलौने को ले लेता है।
  - **चौथी अवस्था गौण–**स्कीमाटा के समन्वय की अवस्था है जो 6 महीने से 12 महीने तक होती है। इस अवधि में शिशु अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहज क्रिया को इच्छानुसार प्रयोग करना सीख जाता है। वह वयस्कों द्वारा किए गए कार्यों का अनुकरण (Imitation) करने की कोशिश करता है। जैसे यदि हम बच्चे के सामने हाथ हिलाते हैं तो वह उसी तरह हाथ हिलाता है। वह इस अवधि में स्कीमाटा का उपयोग कर एक परिस्थिति से दूसरे परिस्थिति की समस्या का हल करता है।
  - **तृतीय वृत्तीय प्रतिक्रिया की अवस्था** है जो 12 महीने से 18 महीने तक होती है। इस अवस्था में बालक प्रयास एवं त्रुटि के आधार पर अपनी परिस्थितियों को समझाने की कोशिश करने से पहले सोचना

प्रारंभ कर देता है। इस अवधि में बच्चे में उत्सुकता (Curiosity) उत्पन्न होती है तथा भाषा का भी प्रयोग करना शुरू कर देता है।?

- **मानसिक संयोग द्वारा नए साधनों की खोज अवस्था** 18 महीनों से 2 साल तक में शिशु प्रतिमा (Image) का उपयोग करना सीख जाता है। अब वह खुद ही समस्या का हल प्रतीकात्मक चिंतन क्रिया (Symbolic thought process) द्वारा ढूँढ़ लेता है। इस अवस्था में संज्ञानात्मक विकास के साथ बौद्धिक–विकास भी बहुत तेजी से होता है।

पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre Operational Stage)

- संज्ञानात्मक विकास की पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था लगभग दो साल से प्रारंभ होकर सात साल तक होती है। इस अवस्था में संकेतात्मक कार्यों की उत्पत्ति (Emergence of symbolic functions) तथा भाषा का प्रयोग (Use of language) होता है। पियाजे ने इस अवस्था को दो भागों में बाँटा है–
  - **प्राक्संप्रत्यात्मक अवधि**—जो कि 2 से 4 साल तक होता है। यह अवस्था वस्तुतः परिवर्तन की अवस्था है जिसे खोज (Exploration) की अवस्था भी कही जाती है। इस अवस्था में बच्चे जो संकेत (Symbol) का प्रयोग करते हैं वह थोड़ी-सी अव्यवस्थित (Disorganized) होती है। इस अवस्था में बच्चे बहुत सारी ऐसी क्रियाएँ करते हैं जिसे इससे पहले वह नहीं कर सकते थे; जैसे—संकेत (Symbol), व चिह्न (Signs) का प्रयोग कब और कहाँ किया जाता है। वे शब्दों (Words) का प्रयोग कर समस्याओं का समाधान करते हैं। बालक विभिन्न घटनाओं या कार्यों के संबंध में क्यों तथा कैसे (Why and How) जैसे प्रश्नों को जानने में रुचि रखते हैं। वे जिस कार्य को दूसरों के द्वारा करते हैं या होते देखते हैं उस कार्य को करने लगते हैं। उनमें बड़ों का अनुकरण (Imitation) करने की प्रवृति होती है। लड़के अपने पिता का अनुकरण कर स्कूटर चलाने या समाचार-पत्र पढ़ने तथा लड़कियाँ अपनी माँ की तरह गुड़िया को खिलाना, तैयार करना जैसे काम करते हैं। इस अवस्था में भाषा का सबसे ज्यादा विकास होता है जिसके लिए समृद्ध भाषाई वातावरण (Rich Verbal Environment) की जरूरत होती है जहाँ बालक को अपने भाषा के विकास के लिए अधिक अवसर मिल सके। पियाजे ने प्राकसंप्रत्यात्मक अवस्था की दो परिसीमाएँ (Limitations) बताई हैं जो निम्नलिखित हैं–
    - **जीववाद**—जीवावाद में बालक निर्जीव वस्तुओं को भी सजीव समझने लगता है उनके अनुसार जो भी वस्तुएँ हिलती हैं या घूमती हैं वे वस्तुएँ सजीव हैं। जैसे—सूरज, बादल, पंखा ये सभी अपना स्थान परिवर्तन करते हैं व पंखा घूमता है, इसलिए ये सभी सजीव हैं।
    - **आत्मकेन्द्रिता**—आत्मकेन्द्रिता में बालक यह सोचता है कि यह दुनिया सिर्फ उसी के लिए बनाई गई है। इस दुनिया की सारी चीजें उसी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। वह खुद को सबसे ज्यादा महत्व देता है। पियाजे के अनुसार उसकी बोली (Speech) का लगभग आत्मकेन्द्रित होता है।
  - **अंतर्दर्शी अवधि**—यह अवधि 4 से 7 साल तक होती है। इस अवधि में बालक की चिन्तन और तार्किक क्षमता पहले से अधिक सुदृढ़ हो जाती है। पियाजे के अनुसार अंतर्दर्शी चिन्तन ऐसा चिन्तन है जिसमें बिना किसी तर्क के किसी बात को तुरन्त स्वीकार कर लेना। अर्थात् वह अगर कोई समस्या का हल करता है तो इसके समाधान का कारण वह नहीं बता सकता है। समस्या-समाधान में सन्निहित मानसिक प्रक्रिया के पीछे छिपे नियमों के बारे में उसकी जानकारी नहीं होती। पियाजे ने अंतर्दर्शी चिन्तन (Intuitive Thinking) की कुछ परिसीमाएँ बताई हैं—
    - इस उम्र के बालकों के विचार अपरिवर्त्य (Irreversible) होते हैं। अर्थात् बालक मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः लौट नहीं पाता है। जैसे अगर 4 साल के किसी बच्चे से कहा जाए कि तुम्हारी मम्मी जैसे अंकित की मौसी है, उसी तरह उसकी मम्मी तुम्हारी मौसी होगी यह बात उसे समझ में नहीं आएगी।
    - पियाजे के अनुसार, उस उम्र के बच्चों में तार्किक चिन्तन की कमी रहती है, जिसे पियाजे ने संरक्षण का सिद्धान्त (Law of conservation) कहा है; जैसे—अगर किसी वस्तु के आकार को बदल दिया जाए तो उसकी मात्रा पर उसका कोई प्रभाव नहीं होगा, इस बात की समझ उनमें नहीं होती है।
    - संरक्षण से तात्पर्य इस विचार से है कि वस्तुओं के कुछ भौतिक गुण, उनके बाहरी रूप बदलने पर भी वैसे ही बने रहते हैं, बदलते नहीं हैं। इस अवस्था के बच्चे संरक्षण के गुण को समझने में असमर्थ होते हैं। उदाहरण स्वरूप यदि बच्चे को पानी से भरे एक जैसे लंबे दो गिलास दिखाये जाते हैं और उसे पूछा जाता है कि क्या दोनों में पानी की मात्रा बराबर है? बच्चे जब इस बात से सहमत हो जाता है कि दोनों में बराबर पानी है, तब एक गिलास का पानी चौड़े बर्तन में उड़ेल दिया जाता है जिससे पानी के आकार का रूप बदल जाता है परन्तु उसकी मात्रा नहीं बदलती है। परन्तु इस अवस्था के बच्चे सोचते हैं कि मात्रा बदल गई है। वे समझते हैं कि "अब पानी कम है, क्योंकि वह इतना नीचे चला गया है। इसे निम्नांकित चित्र के माध्यम से समझ सकते हैं"–

    - बच्चे समझते हैं कि इस बर्तन में पानी डालने के बाद पानी की मात्रा कम हो गई।
    - **विपरीत प्रक्रिया**—यह किसी समस्या के विभिन्न चरणों की क्रमिक शृंखला को क्रमबद्ध रूप से कर लेना और फिर मन में

पूरी प्रक्रिया की दिशा उलटकर वापस प्रारंभिक बिंदु पर लौट आने की क्षमता होती है। द्रव्य के संरक्षण (conservation) के मामले में इस उम्र के बच्चे उल्टा सोचकर पानी के वापस अपने मूल बर्तन गिलास में उड़ेले जाने की कल्पना नहीं कर पाते, इसलिए वह यह नहीं समझ 'पाता' की पानी की समान मात्रा है। एक बहुत की सरल उदाहरण के माध्यम से Reversibility की प्रक्रिया को समझ सकते हैं।

7 – 5 = 12 इस अवस्था के बच्चे

12 – 5 = ? गणित के इस संप्रत्यय को

12 – 7 = ? नहीं समझ पाते।

- इस अवस्था के बच्चे गणित के इस संप्रत्यय को नहीं समझ पाते। इसी प्रकार वर्गीकरण एवं क्रमांकन आदि प्रत्यय भी इस अवस्था में पूरी तरह विकसित नहीं होते हैं। लगभग 4 से 7 साल के बीच के बच्चे का चिंतन एवं तर्क क्षमता पहले से अधिक परिपक्व हो जाती है, जिसके कारण साधारण मानसिक प्रक्रियाओं के पीछे छिपे नियमों को वह नहीं समझ पाता और वह यह नहीं बता पाता कि ऐसा उसने क्यों किया।

मूर्त सक्रिय अवस्था (Period of Concrete Operation)

- यह अवस्था 7 साल से 12 साल तक चलती है। इस अवस्था में बच्चे का अतार्किक चिन्तन संक्रियात्मक विचारों का स्थान ले लेता है। बच्चे अब जोड़ (Addition) घटाव (Subtraction) गुणा (Multiplication) और भाग (Division) कर सकते हैं। लेकिन अगर उसे शाब्दिक कथन (Verbal statement) के आधार पर मानसिक क्रियाएँ करने को कहा जाए तो वे नहीं कर सकते हैं। इस अवस्था के दौरान बालकों द्वारा तीन मानसिक निपुणता हासिल कर ली जाती है। ये तीन योग्यताएँ विचारों परिवर्त्य (Reversibility of Thought), संरक्षण (Conservation) तथा वर्गीकरण व पूर्ण अंश प्रत्ययों का उपयोग (Classification and Part Whole Conception) है।
- इस अवस्था में विचारों की विलोमता में बालक सक्षम हो जाते हैं। भौतिक वस्तुओं में संरक्षण (Conservation in physical objects) बालकों की मानसिक प्रक्रिया का एक अंग बन जाता है। सबसे महत्वपूर्ण विकास उनकी क्रमबद्धता अर्थात् विभिन्न वस्तुओं को उनके आकार व भार आदि की दृष्टि से अलग करना तथा छोटे से बड़े क्रम में वर्गीकरण करना इस अवस्था में होता है।
- इस अवस्था के दौरान बालक अंश तथा पूर्ण दोनों के संबंध में विचार करना प्रारंभ कर देता है। अर्थात् बालकों में यह क्षमता विकसित हो जाती है कि वह वस्तुओं को कुछ भागों में बाँट सकें और उन भागों की समस्या का समाधान तार्किक ढंग से कर सकें।
- मूर्त सक्रिय अवस्था में बालक का ध्यान अपनी ओर से हटकर दूसरे की ओर जाने लगता है, अर्थात् उसके समाजीकरण (Socialization) की शुरुआत होती है। इस अवस्था में मानसिक विकास की दो सीमाएँ पाई जाती हैं–
  - इस अवस्था में बालक तार्किक चिन्तन (Logical Thinking) तभी कर सकते हैं जब उनके सामने वस्तु ठोस रूप से उपस्थित की गई हो।
  - दूसरा, इस अवस्था में ठोस संक्रियात्मक चिन्तन की दूसरी परिसीमा यह है कि यह बहुत क्रमबद्ध नहीं होती है। किसी समस्या के तार्किक रूप से संभावित सभी समाधान के बारे में बालक नहीं सोच पाता है।

औपचारिक-सक्रिय अवस्था (Period of Formal Operations)

- यह संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था है जो लगभग 11 साल से 15 साल की आयु तक होती है। इस अवस्था के दौरान बालक अमूर्त बातों के संबंध में तार्किक चिन्तन करने की क्षमता विकसित कर लेता है। इस अवस्था को किशोरावस्था (Period of Adolescence) कहा जाता है। बच्चे अब वर्तमान, भूत एवं भविष्य (Present Past-Future) के बीच अन्तर समझने लगते हैं। समस्या का समाधान सुव्यवस्थित ढंग से करने लगते हैं।
- इस अवस्था में बालक परिकल्पनाएँ (Hypothesis) बनाने के योग्य हो जाता है। उसकी व्याख्या करता है तथा व्याख्या के आधार पर निष्कर्ष भी निकालता है। अब बालक बड़ों के उत्तरदायित्व लेने के योग्य हो जाता है। अमूर्त चिंतन (Abstract thinking), तार्किक चिंतन (Logical thinking), सादृश्य व निगमनात्मक चिंतन (Analogical and Deductive thinking) तथा परिकल्पनात्मक चिंतन (Hypothetical thinking) की क्षमता इस अवस्था की प्रमुख विशेषता है।
- पियाजे के अनुसार इस अवस्था में बालकों में बौद्धिक संगठन अधिक क्रमबद्ध हो जाता है। बालक एक साथ अधिक से अधिक बातों को समझने तथा उसका विचार करने में समर्थ हो जाते हैं। वे अपने बारे में विचार करते हैं इसलिए वे अक्सर स्व-आलोचक बन जाते हैं। धीर-धीरे उनमें नैतिकता विकसित होने लगती है जिसके आधार पर वे नैतिक निर्णय (Moral Judgment) भी लेने लगते हैं।
  - इस तरह पियाजे द्वारा बताई गई संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की चार अवस्थाएँ इस बात का द्योतक हैं कि किसी भी बालक का सृजानात्मक विकास चार विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है जिसमें कुछ बालकों का बौद्धिक विकास तीव्र गति से होता है। कुछ का औसत गति से तथा कुछ का धीमी गति से।

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत (1936)
(Piaget's Theory of Cognitive Development 1936)

क्र. सं.	अवस्था	उम्र	अवस्था का विवरण	विकासात्मक घटना
1.	संवेदी गामक (Sensory Motor Stage)	जन्म से 2 वर्ष	संवेदी इन्द्रियों व क्रियाओं द्वारा बाह्य जगत को अनुभव करना (देखना, सुनना, छूना, सूंघना, होठ हिलाना, हाथ–पैर हिलाना आदि)	वस्तु स्थायित्व (Object Permanence) का विकास अजनबी चिंता (Strange anxiety) विलंबित (Delayed) अनुकरण जिज्ञासा की उत्पत्ति

क्र. सं.	अवस्था	उम्र	अवस्था का विवरण	विकासात्मक घटना
2.	पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)	2-7 वर्ष	तार्किक चिंतन की बजाय अन्तर्दृष्टि का प्रयोग करते हुए शब्दों व चित्रों को प्रस्तुत करना प्रतिकात्मक विचारों का विकास (Symbolic Thoughts) अनुत्क्रमणीयता (Irreversibility)	कल्पना करना (Imagination) भाषा कौशल (Language Skills) समस्या समाधान योग्यता का विकास, आत्मकेन्द्रिता (Egocentrism) जीवात्म (Animism) दिखावा करना (Pretend Play) सकर्मक तर्कणा (Transductive Reasoning) केन्द्रण (Centration/Concentration) उल्टी क्रिया में असमर्थता (Inability to Reverse Operation)
3.	मूर्त–संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage)	7 से 11 वर्ष	मूर्त घटनाओं के बारे में तार्किक चिंतन (Concrete Logical Thinking) का विकास मूर्त संक्रियात्मक विचार (Concrete Operational Thought) संज्ञानात्मक नक्शे बनाने की क्षमता	संरक्षण (Conservation) वर्गीकरण (Classification) क्रमबद्धता (Seriation) विकेन्द्रण (Decentration), गणितीय रूपान्तरण प्रतिवर्त्यता/उलटने पलटने की योग्यता/उत्क्रमणीयता (Reversibility)
4.	औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal	11 से 18 वर्ष	महत्वपूर्ण घटनाओं या अमूर्त विचारों के बारे में तार्किक चिंतन (Abstract Logical Thinking) का विकास आदर्शवादी सोच समझ का स्थानान्तरण	अमूर्त तार्किक चिंतन (Abstract Logical Thinking) निगमनात्मक चिंतन (Deductive Thinking)
	Operational Stage)		उच्च स्तरीय सन्तुलन संबंधात्मक व योजनाबद्ध चिंतन	सादृश्यात्मक चिंतन (Analogical Thinking) परिकल्पनात्मक चिंतन (Hypothetical Thinking) चिंतनशील क्षमताएँ (Reflective Abilities)

पियाजे का सिद्धांत तथा भाषा अधिगम (Piaget Theory and Language Learning)

- पियाजे के सिद्धांत के अनुसार बालक भाषा अधिगम के लिए आत्मसात्करण (accommodation) तथा समायोजन (assimilation) इन दोनों का प्रयोग करते हैं।
- बालकों में यह देखा जाता है कि संपर्क स्थापित करने के लिए ही वह भाषा का प्रयोग नहीं करते हैं। अगर ऐसा होता तो वह एकांत अवस्था में, जब कोई उनके आस–पास न हो तब किसी प्रकार की बातचीत में संलिप्त नहीं दिखाई पड़ते।
- पियाजे ने बालकों की इस प्रकार की बातचीत को आत्मकेंद्रित वाक् (egocentric speech) तथा संपर्क स्थापित करने वाली भाषा को सामाजिक वाक् (socialized speech) का नाम दिया है। उन्होंने बालकों की आत्मकेंद्रित वाक् के तीन प्रकारों का भी वर्णन किया है।
    - **आवृत्ति**–इसका संबंध ऐसी वाणी से है, जिसे बालक सिर्फ आनंद एवं सुख के लिए बोलते हैं। जो प्रत्यक्षतया किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निर्देश न करती हो। उदाहरण के रूप में जब सात–आठ महीने का बालक किसी ध्वनि को बार-बार बोलता है। जैसे 'मां' 'मां', 'पा' 'पा', 'चा' 'चा' इत्यादि, किंतु वह प्रत्यक्ष रूप से इन ध्वनियों का संबंध स्थापित नहीं कर पाता।
    - **आत्मभाषण**–इसका संबंध ऐसी वार्तालाप से है, जिसे बच्चे खेलते समय प्रयोग में लाते हैं। उदाहरण–अकेले या एकांत में खेलते समय बालक के द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा।
    - **सामूहिक आत्मभाषण**–इसका संबंध ऐसी वार्तालाप से है, जब बच्चे समूह में होकर खेलते तो हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि उनकी बातें एक-दूसरे से संबंधित हों। उदाहरण–खेल के मैदान में या समूह में बोली जाने वाली वाणी।
    - पियाजे विचारों को मुख्य (primary) तथा भाषा को गौण (secondary) मानते हैं। उनके अनुसार विचार पहले आता है और उसके बाद भाषा का विकास होता है।
    - बालक पहले स्कीमा (schema) के द्वारा इस संसार को समझते हैं फिर इससे संबंधित विचारों का निर्माण करते हैं और उसके बाद अपनी समझ विकसित कर विचारों को व्यक्त करते हैं, जबकि चोमस्की के अनुसार बालकों में भाषा समझ के जन्मजात गुण पाए जाते हैं। जिसे चोमस्की ने भाषा ग्रहण साधन (Language Acquisition Device—LAD) का नाम दिया है।
    - जब बालक छोटा होता है तब वह स्वयं को इस संसार का केंद्र समझता है। जिसके कारण वह अपनी वाणी को व्यक्तिगत नहीं रख पाता है, जबकि प्रौढ़ लोगों में संसार के प्रति समझ बन चुकी

होती है, इसलिए वह आत्मकेंद्रित वाक् (Egocentric Speech) का प्रयोग नहीं करते हैं।

- **आत्म केंद्रित वाक् के स्व-केंद्रित** (self-centred) होने का मुख्य कारण यह है कि बालकों में आस-पास के वातावरण को अन्य व्यक्तियों के दृष्टिकोण से देखने की क्षमता नहीं होती है। बालक प्रायः उन्हीं चीजों या वस्तुओं के बारे में बात करते हैं, जो उनके महत्व की होती हैं। पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास तथा सामाजिक अनुभव होने के बाद आत्मकेंद्रित वाक् स्वतः समाप्त होने लगती है।
- इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि आसपास के लोग बालकों की इन बातों पर अपनी असहमति व्यक्त करने लगते हैं, जिसके कारण बालकों में यह समझ विकसित होने लगती है कि किसी चीज के प्रति और भी बहुत-से दृष्टिकोण हो सकते हैं।
- पियाजे ने भाषा विकास (language development) और भाषा तथा विचारों (language and thoughts) के संबंध में कहा है कि विचार का सृजन भाषा से पहले होता है। क्योंकि भाषा भाव प्रकट करने का एकमात्र तरीका है, जबकि विचारों का बनना शारीरिक अंगों के संचालन पर निर्भर करता है, न कि भाषा पर।
- भाषा की आवश्यकता तब होती है जब बालकों में भाषा सीखने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है, जो केवल विचारों को भाषा के अधीन करने का काम करती है।
- भाषा किसी भी व्यक्ति को उन सभी चीजों के बारे में बात करने का अवसर प्रदान करती है जो उस समय वहाँ उपस्थित न हों।
- पियाजे ने यह भी बताया है की भाषा सभी प्रकार के मानसिक संक्रिया (mental conditions) को समझाने में सक्षम नहीं रहती। उदाहरण के रूप में प्रायः लोगों को यह भी बोलते हुए पाया जाता है कि किसी अनुभव को तलाशने के लिए या व्यक्त करने के लिए उनके पास शब्द नहीं हैं अर्थात् वह कई बार शब्दों के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने में असफल रहते हैं।

35. जीन पियाजे का नैतिकता का सिद्धांत/नैतिक विकास पर पियाजे के विचार (Piaget's Views on Moral Development)

- जीन पियाजे का शोधकार्य 1920 में प्रकाशित हुआ था, परन्तु उनका कार्य 20वीं शताब्दी के मध्य तक पहुँचते-पहुँचते पहचाना जा सका। उनका संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत बहुत चर्चित रहा है। परन्तु उन्होंने बच्चों के लिए नैतिक विकास के सिद्धांत की स्थापना भी की थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि बच्चों का नैतिक विकास उनके संज्ञानात्मक विकास से सीधा जुड़ा होता है। पियाजे का विश्वास था कि बच्चों के नियमों, नैतिक मानदंडों तथा दण्ड के बारे में विचार लगातार बदलते रहते हैं। बच्चों के ज्ञानात्मक विकास के अनेक स्तर होते हैं। इसी तरह उनके नैतिक विकास के भी अनेक स्तर होते हैं। पियाजे (1932) ने सुझाव दिया था कि नैतिक तर्कन या चिंतन के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं—
  - परायत्त नैतिकता (नैतिक वास्तविकता अवस्था)
  - स्वायत्त नैतिकता (नैतिक सापेक्षता अवस्था)
- **परायत्त नैतिकता (4 से 10 वर्ष)**
  - इसे नैतिक वास्तविकता भी कहा जाता है। नैतिकता मुख्यतः बाहर से लादी जाती है। बच्चे नैतिकता से प्रायः यह समझते हैं कि कोई ऐसी बाध्यता जिसका संबंध किसी के आदेश या नियम का पालन करना होता है, और इसे बदला नहीं जा सकता। वे यह मानकर चलते हैं कि जो आयु में बड़े या अधिकार प्राप्त लोग होते हैं, वे छोटों के लिए नियम बनाते हैं। (जैसे माता-पिता/शिक्षक/सामाजिक प्रतिनिधि आदि) उनके आदेशों का पालन करना अनिवार्य होता है। यदि ऐसा न किया जाय तो उसके गंभीर परिणाम होते हैं, जैसे—सजा दिया जाना। इस प्रकार विचारने की प्रक्रिया को पियाजे के सिद्धांत में इमनन्ट न्याय कहा जाता है। इस तरह के दण्ड विधान का उद्देश्य गलती करने वाले को कष्ट पहुँचाना होता है। इसीलिए सजा की गंभीरता गलती की गंभीरता के अनुसार तय की जाती है। इस अवधारणा को पियाजे प्रतिमान के अनुसार प्रायश्चितिक दंड कहा जाता है।
  - इस अवस्था के दौरान बच्चे नियमों के मामले में यह धारणा रखते हैं कि इनका पालन किया जाना अनिवार्य है। वे इन नियमों को अपरिवर्तनीय एवं समय सीमा रहित मानते हैं। यदि किसी व्यवहार के कारण दंड मिलने की स्थिति आ जाती है, तो यह समझा जाता है कि यह व्यवहार ठीक नहीं था।
- **स्वायत्त नैतिकता (10 वर्ष तथा उसके अधिक)—**
  - स्वायत्त नैतिकता की इस अवस्था को पियाजे नैतिक वास्तविकता मानते हैं अर्थात् ऐसी नैतिकता जो अपने नियमों के आधार पर व्यक्ति स्वयं तय करता है। बच्चों में यह समझ विकसित हो जाती है कि निरपेक्ष नैतिकता जैसी कोई चीज नहीं होती। नैतिकता का निश्चयन इरादों से किया जाता है, परिणामों के भय से नहीं।
  - पियाजे के अनुसार जब बच्चे 9-10 वर्ष के हो जाते हैं। वे नैतिकता की समझ विकसित कर लेते हैं। यह कोई अंतिम धारणा नहीं होती, बच्चे यह समझ जाते हैं कि अनिवार्यता अथवा निरपेक्षता जैसी कोई चीज सही और गलत के बारे में नहीं होती और नैतिकता का संबंध व्यक्ति की इच्छाओं अथवा इरादों से होता है परिणामों से नहीं।
  - विकसित होते-होते 9 अथवा 10 वर्ष की आयु में पहुँचने तक बच्चों की अहंकार केंद्रितता कम हो जाती है और दूसरे लोगों की सोच के बारे में भी समझ विकसित हो जाती है। नैतिकता के बारे में जो विचार प्रचलित होते हैं वे लचीले होते हैं तथा नैतिक होने का कोई अंतिम विकल्प नहीं होता।
  - पियाजे यह मानते हैं कि जो बच्चा अपने द्वारा सोचे गये विचार से हट सकता है और दूसरे लोगों की सलाह पर विचार कर सकता है वह नैतिक विवेक के मामले में तथा नैतिक निर्णय लेने के मामले में अधिक स्वतंत्र हो सकता है। उसकी सोच और नैतिक सापेक्षता में आया यह परिवर्तन उसकी पूरी सोचने की प्रक्रिया को बदल देता है और उसके अंदर वयस्कता की समझ पैदा कर देता है।
  - इस आयु में बच्चे यह समझने लगते हैं कि नियम किसी दैवीय सत्ता द्वारा नहीं बनाये जाते, बल्कि हमारी दुनिया के लोग ही इन नियमों को बनाते हैं और वे इन नियमों को बदल भी सकते हैं और उन पर

पुनर्विचार भी कर सकते हैं। जब बच्चे कोई खेल खेल रहे होते हैं या दूसरे बच्चों के साथ व्यवहार कर रहे होते हैं तो वे अपने द्वारा बनाये गये नियमों के आधार पर ही यह समझ जाते हैं कि झगड़े की स्थिति से बचने के लिए तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के आराम से खेलने के लिये कौन-से नियमों की आवश्यकता पड़ेगी।

36. लेव सिमनोविच वायगोत्स्की का सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत (Sociocultural Theory of Lev Semyonovich Vygotsky)

- सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत मनोविज्ञान में एक नवीन सिद्धांत है जो मानव विकास में समाज के योगदान को बताता है। यह सिद्धांत संस्कृति व मानव विकास के उन अंतर्सम्बन्धों पर जोर देता है जिसमें वे रहते हैं। यह सिद्धांत इस बात पर विश्वास करता है कि मानवीय अधिगम एक सामाजिक प्रतिक्रिया है।
- वायगोत्स्की का सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत, **लिव वायगोत्स्की** (1896-1934) **फ्रायड, स्किनर** व **पियाजे** जैसे मनोवैज्ञानिकों के समकालीन ही था, किन्तु अल्पायु में मृत्यु को प्राप्त होने के कारण इनका कार्य आगे नहीं बढ़ पाया। इन्होंने बाल विकास के क्षेत्र में व्यापक कार्य किया। वायगोत्स्की के अनुसार अधिगम दो स्तरों पर होता है—
  - प्रथम स्तर पर दूसरों के साथ अंतः क्रिया द्वारा जब बालक अंत:क्रिया करता है तब सूचनायें स्वतः ही व्यक्तिगत स्तर पर एक-दूसरे से जुड़ती चली जाती हैं।
  - द्वितीय स्तर पर सीखा हुआ ज्ञान बालक की मानसिक संरचना में एकीकृत होता है।
- पियाजे की तरह वायगोत्स्की भी यह मानते थे कि बच्चे ज्ञान का निर्माण करते हैं किन्तु इनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास एकाकी नहीं हो सकता। यह भाषा विकास, सामाजिक विकास तथा शारीरिक विकास के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भ में भी होता है।
- **वायगोत्स्की** के अनुसार, बालक के सांस्कृतिक विकास में प्रत्येक क्रिया दो तरह से होती है—पहले सामाजिक स्तर (Social Level) पर और बाद में व्यक्तिगत स्तर (Individual Level) पर। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो, पहले लोगों के बीच यानी अन्तर्मनोवैज्ञानिक (Interpsychological) और बाद में बालक के अन्दर यानी अन्तः मनोवैज्ञानिक (Intrapsychological)।
- इसी प्रकार सभी उच्चस्तरीय क्रियायें जैसे कि अवधान (Attention), स्मृति (Memory) और प्रत्यय निर्माण (Concept Formation) में भी इसी प्रकार होता है। उन्होंने जैविक कारक से ज्यादा सामाजिक कारक को उच्चतर संज्ञानात्मक प्रतिक्रियाओं; जैसे—भाषा, स्मृति व अमूर्त चिंतन को महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में देखा। अतः हम यह कह सकते हैं कि पियाजे का सिद्धांत जो जैविकता और अधिगम को महत्व देते हैं से विपरीत वायगोत्स्की का सिद्धांत है।
- जो अधिगम और विकास को सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण की मध्यस्थता के साथ जोड़ता है। इस प्रकार सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को उन्होंने बालक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका बताया है।

वायगोत्स्की के सिद्धांत के मूल सिद्धांत (Basic Principles of Vygotsky's Theory)

- उपर्युक्त चर्चा के माध्यम से, हम वायगोत्स्कियन ढाँचे में अंतर्निहित निम्नलिखित चार बुनियादी सिद्धांतों को समझ सकते हैं—
  - बच्चे सामाजिक अंत:क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं।
  - विकास को उसके सामाजिक संदर्भ से अलग नहीं किया जा सकता।
  - भाषा मानसिक और संज्ञानात्मक विकास में केंद्रीय भूमिका निभाती है। भाषा संज्ञानात्मक विकास को सुगम बनाती है।
  - सीखने से विकास संभव है।

वायगोत्स्की द्वारा दी गई सीखने की अवधारणाएँ (Concepts of Learning given by Vygotsky)

- वायगोत्स्की ने पियाजे के विकास के यांत्रिक चरणों की निंदा की और कहा कि बच्चा अपने ज्ञान का निर्माण करता है, सीखने की निम्नलिखित अवधारणाओं के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक दोनों तरह से अपने पर्यावरण के माध्यम से विकास पर ध्यान केंद्रित करता है–
- **अधिक जानकार अन्य**—वायगोत्स्की के अनुसार विचारों (Thoughts), मूल्यों (Values), तकनीकों (Techniques) तथा भाषा के ज्ञान को (Knowledge of Language) बालक किसी बड़े व्यक्ति जैसे—माता-पिता, शिक्षक, सहयोगी या प्रौद्योगिकी (Technology) द्वारा सीखता है। इन पक्षों की उन्होंने अधिक जानकारी अन्य (MKO) की संज्ञा दी है। अधिक जानकार अन्य बालकों को समीपस्थ विकास क्षेत्र को पाने में मदद करता है।
- **ढाँचा निर्माण**—वायगोत्स्की के अनुसार ढाँचा निर्माण एक तकनीक है जो सहायता के स्तर में परिवर्तन करती है। शिक्षण करते समय शिक्षक या अधिक कौशल सहयोगी को अधिगमकर्ता के समसामयिक निष्पादन के अनुसार अपने परामर्श को समायोजित करना पड़ता है। जैसे कि छात्र को नए तरीके की समस्या में अधिक निर्देशन देना पड़ता है परन्तु छात्र; जैसे-जैसे अभ्यास करता है, निर्देशन की संख्या कम होती जाती है। इसी प्रकार जब कोई बड़ा व्यक्ति जैसे कि माता-पिता या शिक्षक बालक को कोई खेल या व्यवहार सिखाता है, उससे अन्त:क्रिया करता है, इस क्रिया को उन्होंने ढाँचा निर्माण की संज्ञा दी। वायगोत्स्की के अनुसार, ढाँचा निर्माण में संवाद एक महत्वपूर्ण साधन है। बालक जब कुशल सहायक के साथ संवाद करता है तो परिणामस्वरूप उसके विचार संगठित, तर्कपूर्ण और औचित्यपूर्ण हो जाते हैं। संकेत एवं इशारे देना, आधा हल किया प्रश्न अनुकरण के लिये कौशलों का प्रदर्शन करना, सहपाठी शिक्षण आदि पाड़ (ढाँचा) प्रदान करने के प्रमुख उदाहरण हैं। छात्र के द्वारा विशेष कौशल सीख लेने के बाद मचान/पाड़ को वापस ले लिया जाता है।
- **वास्तविक विकास का क्षेत्र**—वास्तविक विकास के क्षेत्र में सहायक प्रदर्शन का स्तर उभरते व्यवहार और "विकास के क्षेत्र" की सम्भावना पर प्रकाश डालता है जब कोई शिक्षक कोई कार्य सौंपता है और छात्र

इसे करने में सक्षम होते हैं, तो यह कार्य ZAD के भीतर सम्पन्न होता है।

- **संभावित विकास का क्षेत्र**—वायगोत्स्की के अनुसार बालक क्षमताओं की सीमाओं में बँधा है इसलिए वह कुछ कार्य एकाकी रूप में नहीं कर पाता, परन्तु जब उसे अपने से अधिक कुशल बालक या परिवार का सदस्य जैसे माता–पिता, बड़ा भाई-बहन या शिक्षक उसकी सहायता करता है तो उसकी क्षमता और अधिक हो जाती है अर्थात् बच्चा जो कर रहा है और जो करने की क्षमता रखता है के बीच के क्षेत्र को संभावित विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development) कहा जाता है। दूसरे शब्दों में यह जानने व सम्भावित जानने के बीच का अनतर है। इसे समीपस्थ विकास का क्षेत्र भी कहा जाता है।

  ZPD **के लिए प्राप्ति के दो स्तर निम्न प्रकार हैं–**

  - **स्तर–1–विकास का वर्तमान स्तर**–यह स्तर बताता है कि बच्चा स्वतंत्र रूप से क्या कर सकता है।
  - **स्तर–2–विकास का संभावित स्तर**–यह स्तर बताता है कि शिक्षक की सहायता से बच्चा क्या कर सकता है? ZPD बताता है कि बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के लिए शिक्षक की भूमिका कितनी आवश्यक है?

- **भाषा और खेल**—वायगोत्स्की के अनुसार बालक के विकास में भाषा एवं खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक भाषा का प्रयोग सामाजिक संप्रेषण में ही नहीं अपितु वह स्व-निर्देशित कार्य, निर्देशन देने, अपने व्यवहार में योजना बनाने व मूल्यांकन करने के लिए करता है। उन्होंने भाषा को तीन स्तरों में दर्शाया है समाजिक (Social), व्यक्तिगत/स्वकेंद्रित (Private/Egocentric) और आत्मभाषा (Inner Speech)। जब बालक जोड़ की संक्रिया सीखता है तो वह अपनी उँगलियों पर गिनते हुए खुद को समझाता है, दो और दो चार होते हैं। वह खुद से बातें कर रहा होता है। इसे स्वकेंद्रित या व्यक्तिगत भाषा कहते हैं। इस प्रकार जब बालक अपने मन में सोचते हुए कार्य करता है तो उसे आत्मभाषा कहते हैं। उदाहरणतः मानसिक गणित करते हुए बालक अत्मभाषा का प्रयोग करता है। वायगोत्स्की के अनुसार खेल बालक के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे वह आत्म–अनुशासन (Self-discipline), आत्म-संतुष्टि (Self-gratification), आत्म-बोध (Self-appreciation) व आत्म- नियमीकरण (Self-regulation) सीखता है। उदाहरण के लिये, यदि कोई व्यक्ति क्रिकेटर बनना चाहता है तो वह रोज सुबह उठकर व्यायाम करेगा, कोचिंग लेगा व संतुलित आहार लेगा।

- **पारस्परिक शिक्षण**—यह बच्चों और शिक्षक/प्रशिक्षक के बीच एक खुले संवाद का प्रतिनिधित्व करता है। वायगोत्स्की का मानना था कि संवाद के माध्यम से, शिक्षार्थी नए विचारों और समझ को समायोजित करने के लिए वर्तमान ज्ञान (योजनाओं) को आकार दे सकता है। स्कैफोल्ड्स, अपनी जरूरतों पर आधारित सहायता के माध्यम से, ZPD में सीखने की इस गतिविधि को बढ़ाते हैं।

वायगोत्स्की और भाषा विकास (Vygotsky and Language Development)

- वायगोत्स्की भाषा विकास के लिए सामाजिक अंतः क्रिया को एक जिम्मेदार कारक के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार अर्थपूर्ण संवादात्मक प्रक्रिया के द्वारा जब संपर्क स्थापित किया जाता है तब भाषा विकास में विशेष सहायता प्राप्त होती है। उन्होंने बाह्य जगत से संपर्क स्थापित करने के लिए भाषा को एक महत्वपूर्ण साधन माना है।
- उनके अनुसार बालकों के संज्ञानात्मक विकास में भाषा की दो महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैः पहला यह कि इसके द्वारा व्यक्ति बालकों तक समस्त सूचनाएँ हस्तांतरित (transfer) कर पाता है तथा दूसरा कि भाषा स्वयं में बौद्धिक आत्मसात करने का बहुत ही सशक्त साधन है। वायगोत्स्की ने भाषा विकास के 3 स्वरूपों की चर्चा की है–
  - **सामाजिक वाक्–**बाह्य संपर्क स्थापित करने के लिए अन्य के साथ संवाद स्थापित करने की क्रिया सामाजिक वाक् कही जाती है। यह जन्म से 2 वर्ष तक की अवधि तक होता है और इसे बाह्य संभाषण (external speech) भी कहा जाता है।
  - **आंतरिक संभाषण–**यह अंतरण 3 साल से 7 साल के बीच होता है। इसमें बच्चे आपस में बातचीत करना सीख लेते हैं और इसके बाद आत्म बातचीत (self-talk) का स्वभाव बनता जाता है फिर वह बिना स्पष्ट बोले ही कई कार्य करने की क्षमता विकसित कर लेते हैं। आत्म बातचीत संज्ञानात्मक विकास की नीव मानी गई है। आत्म बातचीत (self-talk) बालकों को स्व- निर्देशन में सहायता प्रदान करती है जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं उनकी यह आत्म बातचीत अंतरीकृत होकर आंतरिक संभाषण (inner speech) में परिवर्तित होती जाती है, जो आगे की अवस्था में चिंतन के रूप में परिलक्षित होती है। पियाजे ने इस बातचीत को अपरिपक्व तथा आत्म-केंद्रित (egocentric speech) स्पीच कहा है। वायगोत्स्की ने यह भी माना है कि जो बालक आत्म बातचीत अधिक करते हैं, वह अन्य की अपेक्षा सामाजिक रूप में अधिक दक्ष होते हैं। बालक इसका प्रयोग उच्च संवेगात्मक स्तर की क्रिया करने में भी करते हैं। वायगोत्स्की ऐसे पहले मनोवैज्ञानिक हैं जिन्होंने बालकों के आत्म बातचीत (self talk) की धनात्मक (positive) भूमिका को स्वीकार किया है। संभवतः इन्हीं कारणों से वायगोत्स्की को पियाजे के सिद्धांत के विस्तारक के रूप में भी जाना जाता है।

वायगोत्स्की के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत का शैक्षिक अनुप्रयोग (Educational Application of Vygotsky's Sociocultural Theory)

- वायगोत्स्की के अनुसार क्षमता न तो निहित है और न ही आनुवंशिक बल्कि बालक सीखने के लिए तत्पर तब होगा जब वह उसके संभावित विकास के क्षेत्र (ZPD) में हो, परन्तु जब सीखना बालक के संभावित विकास के क्षेत्र से बाहर हो जाता है तो वह सीखने की चुनौती को स्वीकार नहीं कर सकता और उसका मनोबल व आत्मविश्वास बिखर जाता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह बालक के संभावित विकास के क्षेत्र को ध्यान में रखकर ही उसे चुनौती दे।
- बालक का सीखने का लक्ष्य उसकी क्षमताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए तथा उसकी सफलता उसके गतिशील व बदलते संभावित विकास के क्षेत्र के सन्दर्भ में मापी जानी चाहिए।
- ढाँचा निर्माण (Scaffolding) द्वारा शिक्षक को बालक को चुनौतियों से अवगत कराना चाहिए। उन्हें बालक को निर्देशन देना चाहिए व धीरे-धीरे स्वयं कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

- शिक्षक को चाहिए कि साथियों को 'अधिक जानकार अन्य' के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करें। इसके लिए उन्हें समरूप समूहों (Homogeneous Grouping) की बजाय बहुजातीय समूहों (Heterogeneous Grouping) में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन दें जिससे वे एक-दूसरे से सीख सकें।

संज्ञानात्मक विकास के उपकरण (Tools of Cognitive Development)

- विकास के दो प्रमुख उपकरण हैं जिन पर वायगोत्स्की ने जोर दिया–
  - **सांस्कृतिक उपकरण–**वे संचार का समर्थन करने वाले किसी भी उपकरण से मिलते-जुलते हैं और वास्तविक या प्रतीकात्मक हो सकते हैं। वयस्क इन उपकरणों को नियमित आधार पर बच्चों को सिखाते हैं, जो बाद में उन्हें आत्मसात कर लेते हैं, जिससे मनोवैज्ञानिक उपकरण व्यक्तिगत चेतना लाने में सक्षम होते हैं। सांस्कृतिक उपकरणों के अलावा, प्रिंटर, रूलर, मोबाइल, कंप्यूटर आदि जैसे नए युग के तकनीकी उपकरण भी बच्चों में संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करते हैं।
  - **मनोवैज्ञानिक उपकरण–**समस्या– समाधान और तर्क जैसी सभी उच्च–क्रम की मानसिक प्रक्रियाएँ, प्रतीकों, संकेतों और भाषा जैसे मनोवैज्ञानिक उपकरणों द्वारा मध्यस्थ होती हैं, जो क्रिया की वस्तुओं और मानसिक कार्यों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करती हैं। संज्ञानात्मक विकास की मूल, सोच और समस्याओं को हल करने के उन्नत स्तरों को प्राप्त करने के लिए भाषा जैसे मनोवैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग में महारत हासिल करने पर निर्भर करता है।बच्चे अपने विकास में सहायता करने के लिए मनोवैज्ञानिक और तकनीकी उपकरणों का सहयोग करने के लिए धीरे-धीरे एक सांस्कृतिक-टूल किट विकसित करते हैं।

37. कोहलबर्ग का सिद्धान्त (Kohlberg's Theory)

लॉरेंस कोहलबर्ग (25 अक्टूबर, 1927 - 19 जनवरी, 1987) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्हें नैतिक विकास के चरणों के अपने सिद्धान्त के लिए जाना जाता है। उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक विभाग में और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया।

नैतिक विकास (Moral Development)

- जीन पियाजे द्वारा प्रस्तावित नैतिक विकास के विचार का विस्तार करते हुए नैतिक विकास एक पूर्ण सिद्धान्त को प्रस्तावित व विकसित करने के लिए कार्य करता है। कहानी कहने की तकनीक का उपयोग करते हुए उन्होंने बच्चों पर कई अध्ययन किए। उनके अध्ययन की कहानियाँ आमतौर पर किसी न किसी प्रकार की नैतिक दुविधा के आस-पास घूमती प्रतीत होती हैं। हर कहानी के अंत में वह अपने प्रतिभागियों से कुछ सवाल पूछते थे, और तर्क को रेखांकित करने के लिए उनके उत्तरों का विश्लेषण करते हैं। अपने अध्ययन आधार पर, उन्होंने यह प्रस्तावित किया कि नैतिक विकास में छः चरण होते हैं। इन छः चरणों को आगे तीन स्तरों में बाँटा जा सकता है। ये तीन स्तर इस प्रकार हैं–

- **स्तर 1–पूर्व पारंपरिक नैतिकता–**इस स्तर के अन्तर्गत नैतिक विकास के दो चरण शामिल हैं।
- यहाँ नैतिकता का मूल्यांकन वयस्कों के मानकों और किसी कार्रवाई के परिणाम के आधार पर किया जाता है।
  - **चरण–I (दण्ड व आज्ञाकारिता अभिविन्सास)–**इस अवस्था में बालक आज्ञा इसलिये मानता है, ताकि उसे दण्ड न मिल जाये।
  - **चरण-II (व्यक्तिवाद और विनिमय)–**यह चरण स्वार्थ से सम्बन्धित (प्रेरित) है। इसमें बच्चा समझता है कि व्यक्तियों के अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं। किसी कार्य को नैतिक रूप से सही माना जाता है। यदि वह व्यक्ति के सर्वोत्तम हित में हो। इस अवस्था में बालक में अहम् का भाव बना रहता है।
- **स्तर 2–परम्परागत नैतिकता–**इस स्तर में तीसरा और चौथा चरण सम्मिलित होता है। इस स्तर के दौरान बच्चे नैतिकता को आँकने के लिए समाज के मूल्यों को आत्मसात करने लगते हैं।
  - **चरण III–अच्छे पारस्परिक सम्बन्ध–**इस अवस्था में बालक के इरादे नैतिक मूल्यों को आकने की अपेक्षा समाज के साथ सहमति अधिक महत्वपूर्ण है। यदि इरादा दूसरों की सहमति या समाज की स्वीकृति प्राप्त करने का है, तो बालक नैतिक रूप से सही आँका जाएगा। इस स्तर पर व्यक्ति आदर्श पारस्परिकता को समझता है, जो कि स्वर्ण नियम के रूप में व्यक्त किया जाता है।
  - **चरण IV–सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना–**नैतिकता का निर्णय किसी व्यक्ति के कर्तव्य, कानून और सामाजिक व्यवस्था पर आधारित होता है।
- **स्तर–3 पारंपरिक नैतिकता के बाद–**पारम्परिक अवस्था में जो अंतिम स्तर है, नैतिक विकास का पाँचवाँ और छठवाँ चरण शामिल है। कोहलबर्ग के अनुसार इस स्तर पर बहुत कम लोग पहुँच पाते हैं, यहाँ व्यक्तिगत सामाजिक नियम और व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य को अधिक महत्व दिया जाता है। मूल मानव अधिकारों न्याय पर आधारित व्यक्तिगत न्यायधीश नैतिकता पर भी बल दिया जाता है।
  - **चरण V (सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार)–**इस चरण में, व्यक्ति या बच्चा यह समझता है कि अलग-अलग लोग समुदाय और कानून पर अलग-अलग विचार रखे जा सकते हैं। यह समय के लिये एवं समाज की आवश्यकता के अनुसार बदलने चाहिए।
  - इस चरण में बच्चा समझता है कि अलग-अलग लोगों और समुदायों के अलग-अलग विचार और कानून कठोर आदेश नहीं होते हैं और समय व जरूरत के अनुसार इन्हें इसे बदलना चाहिये।
  - **चरण VI (सार्वभौमिक सिद्धान्त)–**कुछ सार्वभौमिक सिद्धान्तों के आधार पर बच्चे की व्यक्तिगत न्याय नैतिकता समाज के नियमों से परे है। बच्चा इस चरण में स्थिति के अनुसार अनुकुलित हो जाता है।

38. वायगोत्स्की *बनाम* पियाजे
(Vygotsky *vs.* Piaget)

पियाजे और वायगोत्स्की समकालीन थे, फिर भी वायगोत्स्की के विचार उनकी मृत्यु के बहुत बाद तक प्रसिद्ध नहीं हुए। हालाँकि उनके विचारों में कुछ समानताएँ हैं, लेकिन उनमें महत्वपूर्ण अंतर भी हैं–

वायगोत्स्की का सिद्धांत (Vygotsky's Theory)

- संस्कृति की भूमिका पर ज़ोर देता है, यह सुझाव देते हुए कि सांस्कृतिक अंतर विकास पर नाटकीय प्रभाव डाल सकते हैं।
- अधिक जानकार वयस्कों और साथियों के महत्व पर ज़ोर देता है।
- विकास में भाषा की भूमिका पर जोर देता है।
- वायगोत्स्की के रचनावाद में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पियाजे का सिद्धांत (Piaget's Theory)

- विकास को पूर्वनिर्धारित चरणों की एक शृंखला में विभाजित करता है।
- सुझाव देता है कि विकास काफी हद तक सार्वभौमिक है।
- साथी बातचीत पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
- विकास में भाषा की भूमिका को काफ़ी हद तक अनदेखा करता है।
    - पियाजे की तरह, उन्होंने बच्चों को उनके सीखने में सक्रिय भागीदार के रूप में देखा और दूसरों के साथ बातचीत करने की उनकी क्षमता विकसित होने के साथ-साथ यह और भी बढ़ गया।
    - इसलिए उन्होंने बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के लिए भाषा विकास, सीखने और सिखाने के महत्व पर जोर दिया। वायगोत्स्की का मानना था कि मौखिक सोच के बिना अवधारणाओं में सोचना संभव नहीं है, जबकि विचार और भाषा शुरू में स्वतंत्र रूप से विकसित होते हैं, मौखिक विचार बनाने के लिए भाषा विकसित होने के बाद वे विलीन हो जाते हैं। भाषण और विचार बच्चे के व्यवहार को 'मचान' बनाने के लिए बदलते हैं।

39. लॉरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत
(Lawrence Kohlberg's Theory of Moral Development)

- लॉरेंस कोहलबर्ग ने पियाजे के नैतिकता के सिद्धांत पर काम किया और उसमें संशोधन भी किया तथा यह समझाया कि बच्चों में नैतिक विवेक किस प्रकार विकसित होता है। उनके कार्य ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में नैतिकता के विकास पर बहस छेड़ने के लिए आधार तैयार किया था।
- पियाजे के विचारों का संज्ञान लेते हुए उन्होंने बताया कि बच्चों का नैतिकता बोध उनकी विचार–प्रक्रिया तथा हस्तक्षेप व नैतिक अवधारणा की समझ, जैसे–समानता, निष्पक्षता, न्याय तथा सार्वजनिक हित आदि के द्वारा विकसित होता है।
- पियाजे ने नैतिकता के विकास की दो अवस्थाओं वाला सिद्धांत प्रस्तावित किया था। कोहलबर्ग ने उसका विस्तार किया और तीन अवस्थाओं वाले सिद्धांत को प्रस्तुत किया। इसमें छः अलग-अलग स्तर होते हैं।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नैतिकता एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है तथा पियाजे द्वारा प्रस्तावित नैतिकता से कहीं ज्यादा क्रमिक है।
- कोहलबर्ग ने अपने नैतिकता के सिद्धांत को "संज्ञानात्मक विकासमूलक" बताया है। इस आधार पर उन्होंने अपने नैतिक विकास की प्रासंगिकता की व्याख्या सामाजिक तथा संज्ञानात्मक विकास के अंतर्गत की है। यहाँ नैतिकता से अभिप्रायः नैतिक निर्णय से है तथा सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में क्या सही है क्या गलत है के मामले में आदेशात्मक मूल्यों के बौद्धिक मूल्यांकन से है।
    - कोहलबर्ग ने अपने सिद्धांत की सार्थकता को परखने के लिए नैतिक निर्णय साक्षात्कार का इस्तेमाल किया है। बच्चों को ऐसी कहानियाँ सुनाई गई थीं जो दो नैतिक मूल्यों के बीच टकरावों को लेकर थीं और फिर बच्चों से पूछा गया था कि वे अपना मत बताएँ। मूलरूप से उन्हें मूल्यों का पालन करने अथवा मूल्यों की उपेक्षा करने में से किसी एक को चुनना था तथा दूसरे लोगों पर विचार नहीं करना था।
    - कोहलबर्ग ने नैतिकता का अध्ययन करने के लिए हेंज की दुविधा सिद्धांत का उपयोग किया था। उसने इस परीक्षण में भाग लेने के लिए लोगों को अस्त-व्यस्त (अस्पष्ट) स्थिति में प्रस्तुत किया था जिसमें दृष्टिकोण को समझना उद्देश्य था तथा दृश्य पूरी तरह उत्तेजना उत्पन्न करने वाला था। कहानी नैतिक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए गढ़ी गई थी तथा कहानी के बारे में निकाले गये निष्कर्षों की व्याख्या करने के लिए सुनाई गई थी।
    - कोहलबर्ग ने ऐसे अनेक उच्चरणों का इस्तेमाल किया परन्तु हेंज की दुविधा का सिद्धांत नैतिक विकास की शिक्षा देने के मामलों में बहुत लोकप्रिय हो गया।
    - उपयोगिता कोहलबर्ग की नैतिकता की अवस्थाओं को ठोस उदाहरण के रूप में लागू करने में है। इससे यह भी पता लगता है कि इस क्षेत्र में शोध की रूप रेखा कैसे तैयार की जाय और उसे कैसे लागू किया जाये।

हेंज की दुविधा (Heinz Dilemma)

- हेंज की पत्नी को केंसर था तथा उसके डाक्टरों का विश्वास था कि केवल दवा ऐसी है जो उसका जीवन बचा सकती है। यह दवा एक स्थानीय दवा विक्रेता ने खोजी है। यह रेडियम का एक प्रकार है और दवा विक्रेता को उसे बनाने में 200 डॉलर प्रति खुराक का खर्च आया है और वह अब एक खुराक 2000 डॉलर में बेच रहा है। हेंज ने पूरी कोशिश करके किसी तरह 1000 डॉलर इकट्ठे कर लिए। उसने दवा विक्रेता से मिलकर उसे कम कीमत पर प्राप्त करने की कोशिश की और न मानने पर उसने यह भी कहा कि जो कीमत वह लेना चाहे वह चुकाने को तैयार है परन्तु इस समय वह इस दवा को उधार ही खरीद पायेगा। भविष्य में वह उसका एक-एक डॉलर चुकता कर देगा। लेकिन दवा विक्रेता ने पूरी कीमत लिए बिना दवा देने से साफ इनकार कर दिया जब और कोई उपाय कारगर साबित नहीं हुआ तो हैंज ने फार्मेसी में सेंध लगाई और दवा चुरा ली, क्योंकि वह हर हालत में अपनी पत्नी की जान बचाना चाहता था। अब कोहलबर्ग ने यह प्रश्न पूछा–"क्या हेंज को ऐसा करना चाहिए था?।

नैतिक विकास के स्तर (Levels of Moral Development)

- कोहलबर्ग एक महान सिद्धांतकार एवं शोधकर्ता थे। लेकिन वह अपने कार्यों व विचारों में इतना संलग्न था कि आलोचकों के सामने यह साबित

करने में उसे कोई रुचि नहीं थी कि जो कुछ वह कह रहा है, वह ठीक, इसमें कुछ भी गलत नहीं है। सही या गलत की कसौटी पर कराने के स्थान पर वह अपने विचारों व निष्कर्षों को तर्क की कसौटी पर कसना पसंद करता था।

- कोहलबर्ग अपने नैतिक विकास के सिद्धांत की अवस्थाओं को इसी नैतिक विवेक के आधार पर सही मानता था।
- कोहलबर्ग के सिद्धांत का हर स्तर व्यक्ति के सामाजिक नैतिक परिप्रेक्ष्य में एक बड़े परिवर्तन को रेखांकित करता है।

स्तर I : पूर्व – पारंपरिक नैतिकता (Level I Pre-moral/(Pre-Conventional)

- इस स्तर पर नैतिकता बाहर से नियंत्रित की जाती है। दंडित होने के डर तथा पुरस्कृत होने की अपेक्षा इस स्तर पर आज्ञाओं का पालन करवाने वाले घटकों का काम करते हैं। इस स्तर में व्यवहार की दो अवस्थाएँ स्पष्ट दिखती हैं—आज्ञापालन के प्रतिफल के रूप में व्यवहार तथा पुरस्कार पाने की आशा के रूप में व्यवहार।
  - **अवस्था 1: आज्ञा तथा दंड केंद्रित—**इस अवस्था में व्यक्ति परिणामों को केंद्र में रखकर व्यवहार करता है। बच्चे बड़ों की आज्ञा का पालन इसलिए करते हैं कि वे दंडित होने से बचना चाहते हैं। यह नैतिक व्यवहार की आरंभिक अवस्था है जो प्रायः बच्चों पर लागू होती है। परन्तु कभी-कभी बड़े भी दंड से बचने के भय से संचालित होकर व्यवहार करते हैं। बच्चों को नैतिकता के जो नियम बताए जाते हैं, वे उन्हें पालन करने की अनिवार्यता पर दृढ़ रहते हैं, उनके मन में यह बात गहरी बैठी होती है कि पालन नहीं किया तो सजा मिलेगी। उनके कार्य कहीं न कहीं दंडित होने के डर से संचालित होते हैं, हित या अहित की भावना से अनुप्रेरित नहीं होते हैं। ताकत के आगे झुकना इस अवस्था में व्यवहार की जड़ में मौजूद रहता है। सही या गलत का निश्चय भी इसी से होता है कि क्या दंड या दंड नहीं मिलता है। बच्चे आज्ञा का पालन करते हैं क्योंकि बड़े उन्हें ऐसा करने के लिए कहते हैं।
  - **अवस्था 2: नैमित्तिक व्यक्तिगत अभिविन्यास—**इस अवस्था में नैतिकता पुरस्कार व व्यक्तिगत रुचि पर आधारित होती है। बच्चे तथा व्यक्ति पुरस्कार पाने की भावना से संचालित होकर व्यवहार करते हैं। इस अवस्था में बच्चे इस नतीजे पर पहुंचने के बाद व्यवहार करते हैं कि बदले में उन्हें क्या मिलने वाला है। उनकी कौन-कौन सी आवश्यकताओं की पूर्ति होने वाली है। हेंज की दुविधा की समस्या का सर्वोत्तम समाधान वह है जो हेंज की आवश्यकताओं को पूरा करे। इस अवस्था में व्यवहार नाम-तौल कर किया जाता है नैतिक पारस्परिकता का सिद्धांत यहाँ एक दम मौन रहता है। नैतिकता का विचार पुरस्कार व अपनी रुचि पर आधारित होता है। सही वह है जिसे करने में अच्छा लगे और बदले में कुछ मिलने वाला हो, दूसरों की आवश्यकताओं का संदर्भ केवल इतना ही होता है कि–"तू मेरी कमर खुजा, मैं तेरी कमर खुजा दूंगा" कोई सद्‌भावना नहीं, कोई तज्ञता नहीं, कोई न्यायसंगतता नहीं। सही और गलत का निर्धारण इस बात से होता है कि पुरस्कार क्या है?

स्तर II: पारम्परिक नैतिकता (Level II Conventional Morality)

- इस स्तर पर सामाजिक नियमों के प्रति अनुरूपता या निष्ठा वरीयता पर जाती है। निजी स्वार्थ पीछे चला जाता है तथा सामाजिक संबंधों के प्रति निष्ठा केंद्र में आ जाती है। समाज, माता–पिता, शिक्षक तथा मित्र, उनके दृष्टिकोणों का नैतिकता की भावना का निश्चयन करने लगते हैं। अपने दोस्तों तथा अन्य महत्वपूर्ण लोगों के मत अधिक महत्व रखने लगते हैं। नियम तथा नियमों के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इन नियमों तथा परम्पराओं का समझना समाज की जरूरतों के हिसाब से जरूरी हो जाता है। व्यक्ति स्वयं इन नियमों में अपनी पहचान ढूँढ़ने लगते हैं। सही और गलत के प्रति सामाजिक रुझान को केंद्र में रखते हुए इन नियमों का पालन करते रहते हैं।
  - **अवस्था 3: अंतर्वैयक्तिक संबंध—**यह अवस्था सामाजिक नियमों तथा सामाजिक अपेक्षाओं या फिर अच्छा समझे (अच्छा लड़का और अच्छी लड़की) जाने की मानसिकता से प्रेरित होकर व्यवहार करने पर आधारित होती है। समाज की दृष्टि से खरे उतरने (अच्छा होने वाला) तथा समाज के महत्वपूर्ण लोगों की नज़रों में चढ़ने की भावना प्रबल रहती है। महत्वपूर्ण लोगों से संबंध बनाने और अपनी छवि निखारने की नैतिकता इस अवस्था में व्यक्ति के सभी कार्यों व व्यवहारों को अनुप्रेरित करती है।
  - **अवस्था 4: सामाजिक व्यवस्था बनाये रखना—**इस अवस्था में नैतिक विकास पर समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। लोग समाज को केंद्र में रखकर नैतिकता के स्वरूप का निर्धारण करते हैं। व्यक्तियों के हर व्यवहार के केंद्र में समाज में कानून व व्यवस्था की स्थिति को चाक–चौबंद बनाये रखना होता है। सत्य के प्रति आदर भाव तथा कर्तव्य परायणता इस अवधि में चरम पर रहते हैं।

स्तर III: पूर्व पारम्परिक नैतिकता (Level III Post Conventional Morality)

- कोहलबर्ग के नैतिकता के सिद्धांत का यह अंतिम स्तर माना जाता है। इसी आधार पर नियम व मान्यताएँ जन्म लेती हैं, परन्तु स्थापित नियम या परम्परा को अस्वीकार करने की भावना भी इसी स्तर पर जन्म लेती है। अब नैतिकता अमूर्त धारणाओं तथा सिद्धांतों से तय की जाती है, मौजूदा समाज को नियंत्रित करने वाले तथा सामाजिक व्यवस्था को दुरस्त रखने वाले स्थापित नियमों से नहीं।
- यह अंतिम स्तर नैतिक निष्पक्षता के सिद्धांतों के आधार पर उपजे नैतिक विवेक से अपनी नैतिकता तय करता है। सभी नियमों का मूल्यांकन उनकी गंभीरता तथा निष्पक्षता के आधार पर किया जाता है, समाज–व्यवस्था के तत्कालीन स्थापित मूल्यों के आधार पर नहीं। इस बात की एक गहरी समझ होती है कि नैतिकता के तत्व, जैसे मानव जीवन के प्रति आदर–भाव तथा हित–भावना

सामाजिक व सांस्कृतिक मान्यताओं को पीछे छोड़ देते हैं तथा पारम्परिक व सामाजिक तज्ञता के बावजूद नैतिकता के इन तत्वों को सबसे ऊपर रखा जाता है। मजेदार बात यह है कि समाज में ऐसे बहुत लोग होते हैं जो नैतिकता के इस स्तर को प्राप्त ही नहीं कर पाते।

- **अवस्था 5: सामाजिक अनुबंध तथा मौलिक अधिकार—**इस अवस्था में व्यक्ति दूसरों के विश्वासों, मूल्यों तथा विचारों से अलग जाने के लिए तर्क देने लगता है। कानून के नियम सामाजिक व्यवस्था को चाक–चौबंद बनाये रखने के लिए जरूरी होते हैं। परन्तु यह भी जरूरी है कि समाज के सदस्य इन नियमों पर सामूहिक रूप से सहमत हों। व्यक्ति यह बात जानता है कि मूल्य एवं नियम महत्वपूर्ण जरूर होते हैं, परन्तु किसी व्यक्ति के निजी जीवन में हस्तक्षेप को स्वीकृति नहीं दी जा सकती। व्यक्तिगत रूप से हर आदमी यह सोचता है कि स्वतंत्रता जैसे कुछ मूल्य स्थापित कानून से बढ़कर होने चाहिए। इस स्थिति में कानून को बनाये रखना और उसे सहयोग करना तर्कसम्मत चयन पर आधारित हो जाता है तथा लोकतांत्रिक सहमति के तहत व्यक्ति अपनी नैतिकता तय करता है।
- **अवस्था 6: सार्वभौमिक सिद्धांत—**कोहलबर्ग की नैतिक विवेक की यह अंतिम अवस्था है जो सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों तथा नैतिकता के अमूर्त विवेक पर आधारित होती है। लोग अपनी आंतरिक धारणाओं तथा न्यायिक सिद्धांतों का पालन करते हैं और उन्हीं को अभिव्यक्ति देते हैं चाहे वे स्थापित कानूनों व नियमों के विरुद्ध ही क्यों न हों। व्यक्ति अपने नैतिक निर्णय सार्वभौमिक मानवाधिकारों के आधार पर लेने लगते हैं। जब उनका यह कदम स्थापित कानून के विरुद्ध दिखाई पड़ता है या स्वयं की अंतः चेतना की आवाज के विरुद्ध दिखाई पड़ता है। तब व्यक्ति अपनी अंतः चेतना की आवाज को सुनता है। यहाँ व्यवहार स्वयं निर्धारित नैतिकता के आधार पर तय होता है जिसका झुकाव प्रायः सामान्य व सार्वभौमिकता की ओर होता है तथा उसमें मानवीय मूल्यों, न्याय, समानता तथा जीवन की गरिमा को उच्च प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति अंतर्निहित होती है।

कोहलबर्ग नैतिक विकास सिद्धांत की समस्याएँ (Problems of Kohlberg Moral Development Theory)

- **ये दुविधाएँ कृत्रिम हैं (यानी, उनमें पारिस्थितिक वैधता का अभाव है)** : अधिकांश दुविधाएँ अधिकांश लोगों के लिए अपरिचित हैं। उदाहरण के लिए, हेंज दुविधा में यह सब बहुत अच्छी तरह से होता है जिसमें विषयों से पूछा जाता है कि क्या हेंज को अपनी पत्नी को बचाने के लिए दवा चुरानी चाहिए। हालाँकि, कोहलबर्ग के विषय 10 से 16 वर्ष की आयु के थे। उनकी कभी शादी नहीं हुई और उन्हें कभी भी कहानी में बताई गई जैसी स्थिति में नहीं रखा गया। उन्हें कैसे पता चलेगा कि हेंज को दवा चुरानी चाहिए या नहीं?
- **नमूना पक्षपाती है—**गिलिगन (1977) के अनुसार, क्योंकि कोहलबर्ग का सिद्धांत सभी पुरुषों के नमूने पर आधारित था, इसलिए चरण नैतिकता की पुरुष परिभाषा को दर्शाते हैं (यह पुरुष केंद्रित है)। पुरुषों की नैतिकता कानून और न्याय के अमूर्त सिद्धांतों पर आधारित है, जबकि महिलाओं की नैतिकता करुणा और देखभाल के सिद्धांतों पर आधारित है। इसके अलावा, गिलिगन द्वारा उठाया गया लिंग पूर्वाग्रह का मुद्दा मनोविज्ञान में अभी भी मौजूद महत्वपूर्ण लिंग बहस की याद दिलाता है, जिसे नजरंदाज करने पर मनोवैज्ञानिक शोध के माध्यम से प्राप्त परिणामों पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है। गिलिगन ने प्रस्ताव दिया कि महिलाएँ "देखभाल की नैतिकता" को प्राथमिकता देती हैं क्योंकि उनकी नैतिकता की भावना उनके आत्म-बोध के साथ विकसित होती है जबकि पुरुष "न्याय की नैतिकता" को प्राथमिकता देते हैं।
- **ये दुविधाएँ काल्पनिक हैं (यानी, वे वास्तविक नहीं हैं)—**वास्तविक स्थिति में, कोई व्यक्ति जो कार्रवाई करता है उसके वास्तविक परिणाम होंगे और कभी-कभी खुद के लिए बहुत अप्रिय परिणाम होंगे? क्या विषय उसी तरह से तर्क करेंगे यदि उन्हें वास्तविक स्थिति में रखा जाए? हम सब नहीं जानते। तथ्य यह है कि कोहलबर्ग का सिद्धांत एक कृत्रिम दुविधा के लिए एक व्यक्ति की प्रतिक्रिया पर बहुत अधिक निर्भर करता है, इस शोध के माध्यम से प्राप्त परिणामों की वैधता पर एक सवाल उठाता है। लोग वास्तविक जीवन की स्थितियों के लिए बहुत अलग तरीके से प्रतिक्रिया कर सकते हैं जो वे खुद को एक शोध वातावरण के आराम में प्रस्तुत एक कृत्रिम दुविधा के लिए करते हैं।
- **खराब शोध डिजाइन—**इस सिद्धांत का निर्माण करते समय कोहलबर्ग ने जिस तरह से अपना शोध किया, वह यह जाँचने का सबसे अच्छा तरीका नहीं हो सकता है कि क्या सभी बच्चे चरण प्रगति के समान अनुक्रम का पालन करते हैं। उनका शोध क्रॉस–सेक्शनल था, जिसका अर्थ है कि उन्होंने अलग–अलग उम्र के बच्चों का साक्षात्कार लिया ताकि यह पता लगाया जा सके कि वे किस स्तर के नैतिक विकास पर हैं। यह देखने का एक बेहतर तरीका है कि क्या सभी बच्चे चरणों के माध्यम से एक ही क्रम का पालन करते हैं, उन्हीं बच्चों पर अनुदैर्ध्य शोध करना होगा। हालाँकि, कोहलबर्ग के सिद्धांत पर अनुदैर्ध्य शोध कोल्बी एट अल. (1983) द्वारा किया गया है, जिन्होंने कोहलबर्ग के मूल अध्ययन के 58 पुरुष प्रतिभागियों का परीक्षण किया था। उन्होंने 27 वर्षों की अवधि में छह बार उनका परीक्षण किया और कोहलबर्ग के मूल निष्कर्ष के लिए समर्थन पाया, कि हम सभी एक ही क्रम में नैतिक विकास के चरणों से गुजरते हैं।

आलोचनात्मक अध्ययन (Critical Studies)

- कोहलबर्ग की अवस्थाएँ पार–सांस्कृतिक तथा अनुदैर्ध्य अनुसंधानों द्वारा अनुभवजन्य रूप से सराही गईं परन्तु उनके व्यापक रूप से आलोचना भी हुई।
- कोहलबर्ग के सिद्धांत को अग्रकेंद्रित कर कटु आलोचना की गई तथा नारी दृष्टि को भी स्थान नहीं दिया गया और यह केवल पुरुष केंद्रित नैतिक आयामों का विवरण मात्र बनकर रह गया।
- केरॉल गिलीगन, जिन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में कोहलबर्ग के साथ काम किया था, उन्होंने कोहलबर्ग के सिद्धांत की घोर आलोचना की। उन्होंने कहा कि कोहलबर्ग का आरंभिक दौर का नैतिक विवेक, जो 1958 के दशक के दौरान सामने आया था, उसे अनुभवजन्य समर्थन प्राप्त हुआ

था, क्योंकि कोहलबर्ग का सिद्धांत मुख्यतः युवा अमेरिकन लड़के पर केंद्रित था। फिर कोहलबर्ग ने अपने निष्कर्षों का अंत सांस्कृतिक रूप से सामान्यीकरण कर दिया उन्हें हर युग पर लागू किया।

- गिलीगन ने इस बात पर जोर दिया है कि कोहलबर्ग बौद्धिकता, उदारवाद, व्यक्तिवाद आदि मूल्यों के साथ जकड़े रह गए तथा वयस्क पुरुषों व महिलाओं के नैतिक विकास की अवस्थाओं के बीच अंतराल उत्पन्न किया।
- गिलीगन का दावा है कि न्यायिक मूल्यों को कोहलबर्ग ने इतना अधिक नैतिक महत्व दे दिया कि वे अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांतों के नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर गए, जैसे—देखभाल की नैतिकता तथा दया।
- सेम्स (1974) का मत है कि कोहलबर्ग ने सार्वभौमिकता को भेदभावपूर्ण तथा संभ्रातवादी बताया है जो ठीक नहीं है। उन्होंने तर्क दिया है कि यदि सामाजिक सुदृढ़ीकरण अवस्थाओं के आर-पार जाने के लिए प्रासंगिक है तो कोई भी व्यक्ति जिसे उन अवसरों से वंचित किया जाता है तो वह इस तरह पूर्ण विकास कभी नहीं कर पायेगा जैसा कि कोहलबर्ग ने दावा किया है।
- फ्लेनगन (1982) ने सेम्स के दावे का समर्थन किया है और कोहलबर्ग के सिद्धांत की सार्वभौमिकता और सामान्यता की इस आधार पर आलोचना की है कि वह केवल पुरुषों पर लागू होती है।
- कोहलबर्ग की दूसरी बड़ी आलोचना उनके नैतिक परिपक्वता के मानदंड को लेकर की है जिसका कभी कोई स्तर ही नहीं रहा। 25 वर्ष लम्बा समय अनुसंधान कार्य में लगाने के बावजूद परिपक्वता प्राप्त करने की पद्धति की स्पष्टता कभी उभर कर सामने नहीं आ पाई। मानदंड लगातार अपने आपको दोहराता रहा, परिणामस्वरूपः इसके विभिन्न संस्करणों में हस्तक्षेप करना मुश्किल हो गया।
- इसके अतिरिक्त कोहलबर्ग का सिद्धांत पश्चिम के व्यक्तिवादी विचारों पर आधारित है और उनका सिद्धांत समूह के सामूहिकता केंद्रित संस्कृतियों के मामले में जैसे कि हमारी संस्कृति पर पूरी तरह लागू नहीं हो सकता।
- उनका सिद्धांत विभिन्न अवधियों में इस तरह विभाजित किया गया है जिसमें पश्चिमी संस्कृतियों की पक्षधरता साफ-साफ दिखाई पड़ती है।
- हेंज की दुविधा की बात करें तो बड़े-बड़े परिवारों वाली सामूहिकता मूलक हमारे जैसे समुदाय निश्चित रूप से हेंज की आर्थिक सहायता को तैयार हो जाते। क्योंकि ये मूल्य हमारे समाज तथा हमारे समुदाय के हैं। परन्तु वासुदेव और हमेल (1987) ने नैतिक तर्क के अध्ययन का ऐसा प्रारूप तैयार किया था जिससे कोहलबर्ग द्वारा दिये गये नैतिक मूल्य अवस्था क्रम की सामान्यता का परीक्षण विभिन्न आयु वर्ग तथा लैंगिक स्थितियों को केंद्र में रखते हुए भारतीय संदर्भ में किया था। उन्होंने भारतीय वयस्कों के विचारों तथा तर्कों का भी परीक्षण किया था तथा कोहलबर्ग के सिद्धांत को अनुभव–जन्य सहयोग दिया था।
    - कोहलबर्ग ने बौद्धिक तथा संज्ञानात्मक प्रविधियों को प्रभावी प्रविधियों की तुलना में अधिक महत्व दिया था—कुछ अनुसंधानकर्ताओं ने इसकी भी आलोचना की थी। कभी-कभी हम नैतिक निर्णय करने के लिए अपने अंदर की आवाज के निर्णय को अधिक महत्व देते हैं तथा प्रभावी प्रविधियों को भी अपनाते हैं।
    - कोहलबर्ग का सिद्धांत पहला पद्धतिगत तथा अनुभवजन्य सिद्धांत था जिसने नैतिक विवेक की विकासमूलक अवस्थाओं को समझने का प्रयास किया था जो पियाजे के नैतिक विकास के सिद्धांत पर आधारित था। यद्यपि इस सिद्धांत की व्यापक रूप से आलोचना हुई, परन्तु यह सच है कि इसने अन्य सैद्धांतिक दृष्टिकोणों के विकास के लिए आधार तैयार किया जैसे गिलीगन का नैतिकता का महिलाओं की दृष्टि का सिद्धांत हैडिट् का नैतिकता मूलक सिद्धांत तथा नैतिकता सहयोगी सिद्धांत के रूप में।

गिलीगन का देखभाल आधारित नैतिकता का सिद्धांत (Gilligan's Theory of Care-based Morality)

- बड़े लम्बे समय के बाद, नारीवादी मनोवैज्ञानिकों ने पूर्व के मनोवैज्ञानिकों द्वारा पुरुषवाद मानव व्यवहार पर जोर देने के लिए उनकी खुलकर आलोचना की तथा इस बात के लिए भी उन्हें कठघरे में खड़ा किया कि उन्होंने मानव अनुभवों, मूल्यों तथा व्यवहारों के अध्ययनों के संदरों में महिलाओं के योगदान को नकार दिया।
- इतिहास साक्षी है कि मनोवैज्ञानिक निष्पक्षता के पक्षधर रहे हैं तथा समानता के हिमायती रहे हैं। सुप्रसिद्ध महिला मनोविज्ञानी केरॉल गिलीगन का सटीक उदाहरण हैं।
- केरॉल गिलीगन, स्वार्दमोर कॉलेज में साहित्य का अध्ययन किया था तथा रैडक्लिफ कॉलेज से मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की थी। इसके बाद उन्होंने शोध कार्य के लिए 1964 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया और एरिक एरिक्सान तथा लॉरेंस कोहलबर्ग के साथ काम किया। वे कोहलबर्ग की अनुसंधान सहायक थीं और उन्होंने स्त्रियों के दृष्टिकोण से नैतिकता पर विचार करने को अपनी अनुसंधान दृष्टि का केंद्र बनाया।
- गिलीगन ने कोहलबर्ग की नैतिकता की अवधारणा का खंडन किया था और यह तर्क दिया था कि समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान पुरुषों तथा स्त्रियों के नैतिक व्यवहार तथा विवेक अलग-अलग होते हैं। लड़के तथा पुरुष निष्पक्षता तथा न्याय भावना पर आधारित विस्तारात्मक सिद्धांतों में मुख्य रूप से नैतिकता को देखते हैं, जबकि लड़कियाँ तथा महिलाएँ के नैतिकता के विचार देखभाल और आत्म बलिदान की भावना पर आधारित होते हैं। इसलिए महिलाओं के नैतिक विकास के भूल में करुणा का निवास होता है। नैतिकता के क्षेत्र में महिलाओं की अभूतपूर्व भूमिका मनोविश्लेषणात्मक रूप से असंतुष्टि के साथ विकसित होती है।
- कोहलबर्ग का सिद्धांत यह मानकर चलता है कि नैतिक विवेक के मामले में महिलाएँ पुरुषों से पीछे रहती हैं।
- गिलीगन ने कोहलबर्ग के मत का जोरदार खण्डन करते हुए कहा था कि कोहलबर्ग की सैद्धांतिक अवधारणा स्त्रियों को पीछे रखती है और यह प्रस्तावित किया था कि स्त्रियाँ किसी भी तरह पुरुषों से कमतर नहीं हैं, हाँ नैतिक न्याय तथा विवेक के मामले पुरुष से भिन्न अवश्य हैं।
- अपनी पुस्तक ए डिफरेंट वॉइस' में गिलीगन ने लिखा है—'नैतिकता की अवधारणा देखभाल केंद्रित गतिविधियों से संपन्न होती है और नैतिकता का विकास जिम्मेदारी और संबंधों के इर्द–गिर्द होता है, ठीक उसी तरह जैसे निष्पक्षता केंद्रित नैतिक विकास सही और गलत की समझ प्राप्त करने के लिए होता है।"

- गिलीगन का सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि स्त्रियों में संबंध–केन्द्रितता उच्च कोटि की होती है तथा वे दूसरों का ख्याल रखने वाली होती हैं, इसलिए उनके अंदर देखभाल एवं जिम्मेदारी की नैतिकता अधिक विकसित हो जाती है। जबकि पुरुषों में न्याय आधारित नैतिकता का विकास अधिक होता है। देखभाल की नैतिकता कार्यों की भावनाओं पर तथा दूसरों की जरूरतों पर प्रभाव के मूल्यांकन की प्रवृत्ति रखती है। इसलिए स्त्रियों में संबंधों को निभाने तथा साथी मनुष्यों का अहित होने से रोकने में विशेष रूप से रुचि होती है। दूसरी ओर न्याय आधारित नैतिकता इस बात पर अधिक जोर देती है कि सामाजिक नियम न टूटें और सामाजिक नियमों के साथ कोई समझौता न किया जाए। इसी के आधार पर किसी अपराध के लिए उपयुक्त दंड तय करने की मनोवृत्ति विद्यमान रहती है।
- अपने सिद्धांत को सही सिद्ध करने के लिए गिलीगन ने अध्ययन का एक सिलसिला शुरू किया। गिलीगन ने ऐसी 29 गर्भवती महिलाओं के साक्षात्कार आयोजित किए जो गर्भपात करने का मन बना चुकी थीं। ये वास्तविक जीवन की नैतिक दुविधा का प्रदर्शन करने वाले उदाहरण थे। गिलीगन का विचार था कि इन महिलाओं का साक्षात्कार करने से उनमें देखभाल की नैतिकता का दायित्व जागेगा और उसकी नैतिकता की परिकल्पना को व्यापक रूप से समझाने में मदद मिलेगी।
- अपने इस कार्य के आधार पर गिलीगन ने नैतिक विकास के तीन विभिन्न स्तरों की खोज की—पहले स्तर की नैतिकता निजी स्वार्थ या रुचि से अभिप्रेरित होती है, जिसमें स्थित होकर महिलाएँ यह तय करती हैं कि उनके लिए क्या सबसे अच्छा है। गिलीगन के विचार में देखभाल की नैतिकता "सार्वभौमिक है, क्योंकि यह शोषण और आघात को पूरी तरह नकारती है।

तालिका : गिलीगन की देखभाल की नैतिकता के स्तर
(Gilligan's Levels in the Development of Morality of Care)

स्तर	वह क्षेत्र जिस पर गिलीगन की देखभाल की नैतिकता का सिद्धांत जोर देता है	स्तर का विवरण
पूर्व पारम्परिक	निजी स्वार्थ	जिन महिलाओं ने सुझाव दिया कि वे अपने स्वार्थ के लिए सबसे अच्छा कार्य करेंगी, उन्हें इस स्तर में रखा गया था।
पारम्परिक	आत्म-बलिदान	जिन महिलाओं ने सुझाव दिया था कि वे अन्य मनुष्यों के कल्याण को अपने स्तर से पहले रखने के लिए तैयार थीं, उन्हें इस स्तर में रखा गया था।
पश्चात् पारम्परिक	अहिंसा	दूसरों को चोट न पहुँचाने के महत्व पर जोर देने वाली महिलाओं को इस स्तर में रखा गया था।

- गिलीगन के नैतिकता के प्रतिमान में, ये तीनों स्तर निजी स्वार्थ या रुचि के तीन विभिन्न आयामों या रूपों को दर्शाते हैं। ये केवल संज्ञानात्मक विकास से अभिप्रेरित नहीं है।
- गिलीगन यह मानती हैं कि पुरुष तथा स्त्री दोनों में देखभाल की नैतिकता मौजूद रहती है तथा दोनों में ही न्याय आधारित नैतिकता भी पाई जाती है, परन्तु स्त्रियों का रुझान देखभाल की नैतिकता के प्रति अधिक रहता है। इससे यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि देखभाल की नैतिकता पूरी तरह महिलाओं में ही होती है।
- 1982 में गिलीगन की एक आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिसमें कोहलबर्ग के काम की कटु आलोचना तथा गिलीगन महिलाओं की देखभाल की नैतिकता का विशद वर्णन शामिल था।
- गिलीगन ने मुखर रूप से कोहलबर्ग के अग्रकेंद्रिक वर्गीकरण विज्ञान का खण्डन किया था। गिलीगन के विचारों तथा सिद्धांतों ने गिलीगन को मनोविज्ञान में नारीवादी दृष्टिकोण की प्रमुख प्रवक्ता के रूप में स्थापित कर दिया। इससे गिलीगन के सिद्धांत के समर्थकों की संख्या बहुत बढ़ गई। गिलीगन ने निष्पक्षता, प्रभाव तथा न्याय–भावना के संदर्भ में 'भहिलाओं की नैतिकता का पक्ष कुछ इस तरह रखा कि महिलाओं के प्रति असमानता की धारणा रखने वालों को इसका करारा जवाब मिल गया। इसके बाद केवल उनकी पुस्तकों का बढ़-चढ़कर प्रकाशन हुआ, अपितु गिलीगन को 1996 में 'टाइम' पत्रिका ने वूमन वर्ष की सबसे ज्यादा ख्याति–प्राप्त महिला घोषित किया।

आलोचनात्मक अध्ययन (Critical Studies)

- जिस समय गिलीगन नारीवादी दृष्टि के महत्व पर जोर देते हुए आगे बढ़कर अपनी बात कह रही थीं, तब सभी नारीवादी लेखिकाओं ने गिलीगन के नैतिकता के सिद्धांत का समर्थन नहीं किया था।
- ईगली तथा डाइकमेन (2006) ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा था—सोच तथा व्यवहार में किसी भी तरह का लैंगिक अंतराल, लिंग आधारित श्रम विभाजन माना जायेगा। इसे पारम्परिक या स्थापित लैंगिक विचार नहीं माना जायेगा।
- जाफी और हाइड (2000) ने नैतिक तर्क के आधार पर लिंग भेद का पता लगाने का प्रयास किया। कई शोध अध्ययनों की समीक्षा करने के बाद उन्होंने पाया कि पुरुषों में महिलाओं की तुलना में अधिक न्यायपूर्ण तर्क दिखाने की प्रवृत्ति कम थी तथा महिलाओं में पुरुषों की तुलना में अधिक देखभाल करने वाले तर्क दिखाने की प्रवृत्ति थोड़ी बड़ी (लेकिन अभी भी कम थी)।

- स्कोई (1994) ने अपने शोध में यह स्पष्ट किया कि देखभाल तथा न्याय संगतता, नैतिक विकास के दोनों आयाम पुरुष या महिला छात्र दोनों के लिए पहचान से संबंधित है।
- जैसा कि गिलीगन द्वारा भविष्यवाणी की गई थी स्कोई (1998) ने पाया कि कनाडाई एवं अमेरिकी महिलाओं (17 से 26 वर्ष के बीच) ने पुरुषों की तुलना में अधिक जटिल देखभाल आधारित समझ दिखाई। यह अंतर नॉर्वे में स्पष्ट नहीं था जहाँ समाज के साथ-साथ कार्यस्थल पर भी लैंगिक समानता पर जोर दिया जाता है।
- पूर्वी तथा पश्चिमी सांस्कृतिक अंतरों पर आधारित अनेक अध्ययन हुए हैं तथा देखभाल की नैतिकता पर 'गुआंक्सी' की अवधारणा के अंतर्गत चीन में चर्चा हुई है। गुओक्सी किसी से सुदृढ़ संबंध रखने से संबंधित अवधारणा है जो मुख्य रूप से विश्वास पर आधारित है तथा इसमें अनुकूलताओं के आदान-प्रदान तथा नैतिक दायित्व बोध भी शामिल है। प्रमुख रूप से चीन में इसका पर्याप्त रूप से चलन है, परन्तु पश्चिमी संस्कृतियों में इसे अनैतिक माना जाता है, जबकि चीन में ये व्यापार संबंधी एक मौलिक प्रक्रिया है। यह प्रथा चीन में सांस्कृतिक क्रांति के बाद सामने आई–"सूचना, दुर्लभ वस्तुएँ तथा सेवायें प्राप्त करने की एक आवश्यक विधि के रूप में।" ब्रूनर, चेन, सन तथा झोऊ।

40. ऐरिक्सन का व्यक्तित्व–विकास का मनो–सामाजिक सिद्धान्त (Erikson's Psycho-Social Theory of Personality Development)

- ऐरिक्सन ने व्यक्तित्व के बारे में अपना सिद्धान्त सन् 1963 में प्रस्तुत किया। ऐरिक्सन ने व्यक्तित्व विकास को मनो–सामाजिक (Psycho-social) अवस्थाओं का आधार स्तम्भ बताया है। ऐरिक्सन ने अपने सिद्धान्त को पश्चजनक सिद्धान्त (Epigenetic principle) पर केन्द्रित किया है। इस सिद्धान्त में Erikson ने अहम् (ego) को महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की तथा इदम् (id) एवं पराहम् (sype-ego) को न के बराबर स्थान दिया जाता है।
- इसी कारण ऐरिक्सन को Ego-psychologist (अहम्–मनोवैज्ञानिक) कहा जाता है। ऐरिक्सन, फ्रॉयड के सिद्धान्त को मानने वाले मनोवैज्ञानिक की श्रेणी में आते हैं। ऐरिक्सन का सिद्धान्त फ्रॉयड के सिद्धान्त को निरन्तरता प्रदान करता है।
- इस कारण ऐरिक्सन का सिद्धान्त फ्रॉयड के सिद्धान्त से समान होते हुए भी है गति उसमें अलग है। Erikson ने अपने सिद्धान्त में मानव व्यक्तित्व के तीन गुणों Holism (पूर्णता) Environmentalism (पर्यावरणवादिता) एवं Changebility (परिवर्तनशीलता) को मुख्य स्थान दिया है।
- ऐरिक्सन ने व्यक्तित्व विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं पर अधिक बल दिया है। ऐरिक्सन के अनुसार, भ्रूण (Embryo) के विकास में शरीर के कुछ अंग कुछ विशिष्ट समय पर प्रकट होते हैं, जो अन्त में बालक का रूप लेते हैं। बालक के व्यक्तित्व का विकास भी इसी प्रकार से होता है। ऐरिक्सन के अनुसार व्यक्तित्व का विकास जीवनभर होता रहता है न कि किशोरावस्था तक। इन्होंने व्यक्तित्व विकास की आठ अवस्थाओं का वर्णन किया है।

ऐरिक्सन के सिद्धान्त की विशेषताएँ (Characteristics of Erikson's Theory)

- ऐरिक्सन के सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
  - ऐरिक्सन ने अपने व्यक्तित्व के मनोसामाजिक सिद्धान्त (Psychosocial theory) में व्यक्तित्व विकास की आठ मनोसामाजिक अवस्थाएँ (Psychosocial stages) बतायी हैं। मानव का विकास इन्हीं आठ अवस्थाओं से होकर होता है। ये अवस्थाएँ (Universal) सर्वमान्य होती हैं। इन आठों अवस्थाओं (Stages) में व्यक्तित्व का विकास विशेष नियमों द्वारा नियमित होता है। जिन्हें पश्चजनक–सिद्धान्त (Epigenetic principle) कहते हैं।
  - प्रत्येक मनोसामाजिक (Psychosocial stage) में संकट (Crisis) उत्पन्न होता है। Crisis का अर्थ ऐसे Turning point से है, जो उस अवस्था (Stage) की जैविक परिपवक्ता (Biological mateurity) तथा सामाजिक आवश्यकता (Social demand) के टकराव (Conflict) के फलस्वरूप उत्पन्न होता है।
  - प्रत्येक अवस्था में जैविक परिपक्वता तथा Social demand के बीच Conflict होने से +Ve (सकारात्मक गुण) तथा –Ve (नकारात्मक गुण) तत्व Absorb (अवशोषित) होते हैं। +Ve तत्व व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं तथा –Ve तत्व व्यक्ति के विकास में रुकावट लाते हैं।
  - प्रत्येक Stage में होने वाली Crisis का व्यक्ति को समाधान करना होता है। यदि व्यक्ति उस Stage की Crisis का समाधान कर लेता है तो उसमें Psychosocial strength develop (मनोसामाजिक शक्ति) होती है, जिससे उसे सदाचार के गुण की प्राप्ति होती है परन्तु यदि व्यक्ति उस Psychosocial stage की Crisis को दूर नहीं कर पाता तो उसमें Psychosocial strength develop नहीं होती तथा उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है।
  - ऐरिक्सन ने अपने व्यक्तित्व–विकास के मनोसामाजिक सिद्धान्त में जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं को स्थान दिया है, जो ऐरिक्सन के सिद्धान्त की मुख्य विशेषता है।

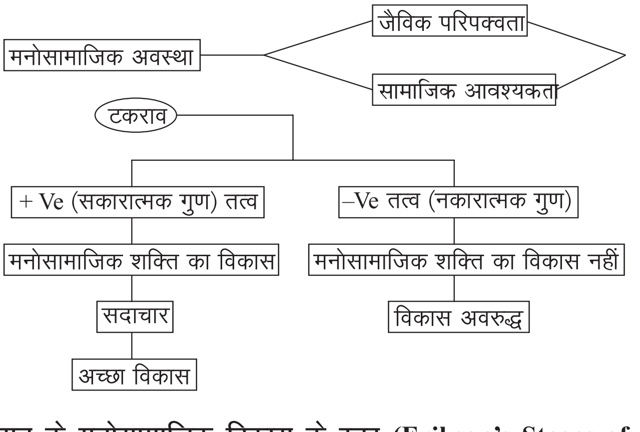

ऐरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के स्तर (Erikson's Stages of Psycho-social Development)

- ऐरिक्सन ने व्यक्तित्व–विकास की निम्नलिखित आठ अवस्थाएँ बतायी हैं–

- **शैशवावस्था : (0–1) वर्ष→विश्वास विपरीत अविश्वास**—ऐरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धान्त की पहली अवस्था शैशवावस्था है। यह अवस्था बालक के जन्म से प्रारम्भ होकर एक वर्ष तक चलती है। इस अवस्था में बालक जो ज्ञान प्राप्त करता है, वह विश्वास का है। यदि बालक को घर, परिवार तथा समाज से विशेषकर अपनी माता से प्रेम, स्नेह तथा सुरक्षा मिलती है, तो उसमें विश्वास की भावना उत्पन्न होती है। यदि शिशु की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और माता–पिता का वास्तविक प्रेम उसे मिलता है तो उसे संसार में विश्वास हो जाता है। इसके विपरीत यदि उसे प्रेम, स्नेह और सुरक्षा नहीं मिलती तथा उसकी परवाह नहीं की जाती तो बालक में संसार के प्रति अविश्वास की भावना पनपने लगती है तथा उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है।

शैशवावस्थ विश्वास विपरीत अविश्वास

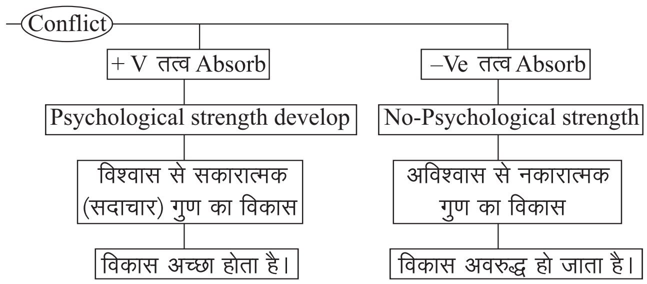

- **प्रारम्भिक बाल्यावस्था : 1–3 वर्ष–स्वाधीनता विपरीत शर्म**—ऐरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धान्त की यह द्वितीय अवस्था है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था की अवधि 1 से 3 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था तक बालक विश्वास करना सीख जाता है तथा स्वतन्त्रता चाहता है। वह अपने माता–पिता का अधिक नियन्त्रण नहीं चाहता, परन्तु माता–पिता की सलाह और निर्देश प्राप्त करने की आकांक्षा रहती है। यदि बालक को पर्याप्त स्वतन्त्रता तथा उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है तो बालक में आत्मनिर्भरता के गुण का विकास होता है, परन्तु यदि बालक को पर्याप्त स्वतन्त्रता तथा उचित मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता तो बालक में वातावरण का सामना करने की योग्यता के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न हो जाती है तथा बालक शर्माने लगता है, जिससे उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है।
- **प्रारम्भिक बाल्यावस्था→स्वाधीनता विपरीत शर्म→**

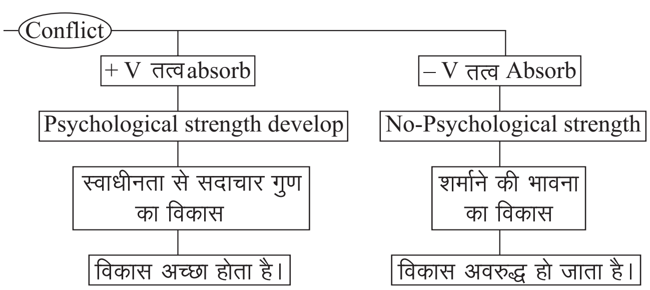

- **खेल अवस्था : 3–6 वर्ष–पहल विपरीत अपराध**—इस अवस्था की अवधि 3 से 6 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बालक का प्रमुख कार्य खेल है। वह खेल द्वारा ही ज्ञान प्राप्त करता है। कुछ बालक इस अवस्था में विद्यालय में भी पहुँच जाते हैं। इस अवस्था में बालकों में लैंगिक सक्रियता आ जाती है। यदि बालक को प्रयोग करने और खोज करने की पर्याप्त स्वतन्त्रता तथा उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है तो उसमें पहल की भावना विकसित होती है। वह हर कार्य करने में पहल करना चाहता है, परन्तु यदि बालक को पर्याप्त स्वतन्त्रता तथा उचित मार्ग दर्शन प्राप्त नहीं हो तथा उस पर प्रतिबन्ध लगायें तो उसमें अपराध की भावनाएँ पनपती हैं।
- **खेल अवस्था→पहल विपरीत अपराध→**

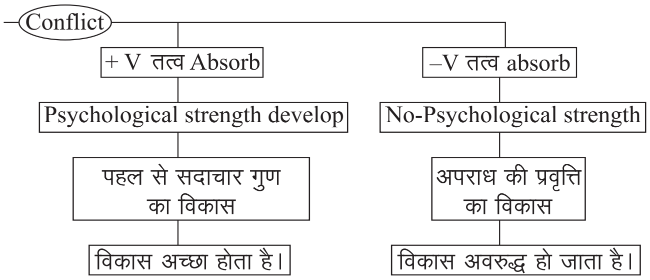

- **विद्यालय अवस्था : 6–12 वर्ष–परिश्रम विपरीत हीनता**—विद्यालय अवस्था 6 से 12 वर्ष के बीच रहती है। इस अवस्था में बालक विद्यालय में प्रवेश लेता है, जहाँ बालक का सम्पर्क अन्य सहपाठियों से होता है। इस अवस्था में बालक पर उसके साथियों का अधिक प्रभाव पड़ता है तथा उसके माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों का कम। इस अवस्था में बालक के आदर्श उसके सीनियर साथी होते हैं। इस अवस्था में बालक नहीं चाहता है कि माता–पिता उस पर अधिक नियन्त्रण रखें तथा उसके प्रति अधिक प्रेम जाहिर करें। यदि बालक को प्रेरणा मिलती है, तो वह परिश्रमी हो जाता है तथा अपना कार्य पूरे परिश्रम से करता है, उसमें परिश्रम के गुण का विकास हो जाता है। इसके विपरीत, यदि उसके प्रयास विफल होते हैं अथवा उसे हतोत्साहित किया जाता है तो उसमें हीनता की भावना उभरती है तथा उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है।
- **विद्यालय अवस्था→परिश्रम विपरीत हीनता→**

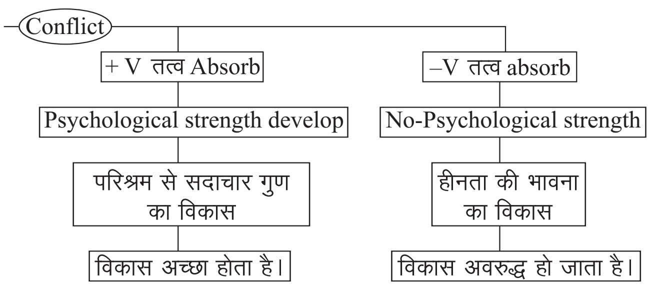

- **किशोरावस्था–अभिज्ञान विपरीत भूमिका द्विविधा : 12–20 वर्ष**—ऐरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धान्त की पाँचवीं अवस्था किशोरावस्था है। इसकी अवधि 12 से 20 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बालक खुद से अत्यधिक प्रेम करने लगता है। वह स्वयं को समाज का बहुत महत्वपूर्ण घटक मानने लगता है। वह समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहता है। बालक में अहम् (ego) का विकास होता है। यदि बालक को उचित वातावरण तथा पर्याप्त स्वतन्त्रता मिलती है तो उसमें अभिज्ञान के सदाचार गुण का विकास होता है, परन्तु यदि बालक के अपने जीवन के विभिन्न पक्षों में ठहराव की भावना नहीं बना पाते तो उनमें अपनी भूमिका सम्बन्धी दुविधा उत्पन्न हो जाती है तथा उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है।

❖ **किशोरावस्था→अभिज्ञान विपरीत भूमिका द्विविधा→**

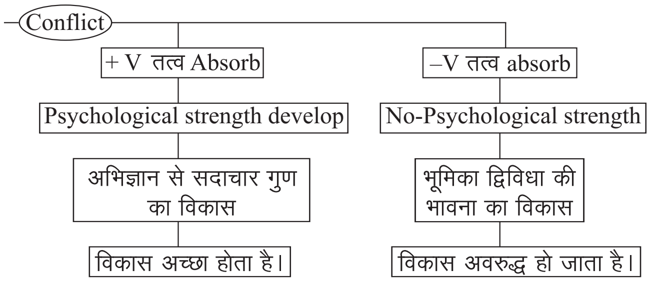

❖ **तरुण वयस्कता–घनिष्ठता विपरीत अकेलापन : 20–30 वर्ष**–यह अवस्था 20 से 30 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में व्यक्ति अपनी शिक्षा पूरी करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है तथा किसी कार्य को पसन्द करके व्यवसाय के जीवन में प्रवेश करता है, जहाँ उसका सम्पर्क अन्य व्यक्तियों से होता है। यदि उसे उचित वातावरण तथा अन्य व्यक्तियों का सहयोग मिलता है तो उसमें अपनेपन की भावना का विकास होता है, परन्तु यदि उसे उचित वातावरण तथा अन्य व्यक्तियों का सहयोग नहीं मिलता तो वह अकेलेपन का शिकार हो जाता है और उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है।

❖ **तरुण वयस्कता→घनिष्ठता विपरीत अकेलापन→**

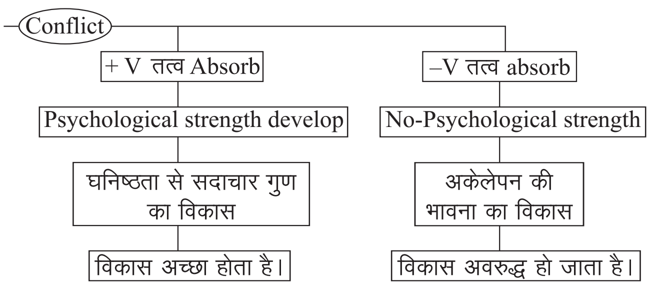

❖ **मध्य वयस्कता–उत्पादकता विपरीत ठहराव : 30–60 वर्ष**–मध्य वयस्कता की अवधि 30 से 60 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में व्यक्ति माता–पिता बन जाता है तथा अपनी सन्तान की देखभाल करता है। वह अपने आदर्शों एवं मूल्यों को नयी पीढ़ी को देता है तथा उनका मार्गदर्शन करता है। यदि अगली पीढ़ी उसके निर्देशों को स्वीकार कर लेती है तथा वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह ढंग से कर पाता है तो उसमें उत्पादकता के सदाचार गुण का विकास होता है परन्तु यदि अगली पीढ़ी उसके निर्देशों को स्वीकार नहीं करती तथा वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह ढंग से नहीं कर पाता तो उसके विकास में ठहराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

❖ **मध्य वयस्कता→उत्पादकता विपरीत ठहराव→**

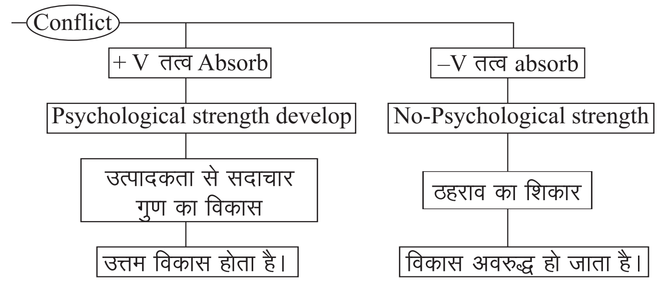

❖ **परिपक्वता–सन्निष्ठा विपरीत आशाहीनताः 60 + वर्ष**–इस अवस्था की अवधि 65 वर्ष से प्रारम्भ होकर जीवन के अन्त तक रहती है। इस अवस्था में व्यक्ति को अपनी मृत्यु का भय सताने लगता है। वह अपने द्वारा सम्पूर्ण जीवन में किये गये कार्यों का परिणाम देखता है। यदि परिणाम उसके अनुकूल होते हैं, तो उसे अपना जीवन सार्थक लगता है तथा उसमें सनिष्ठा की भावना विकसित होती है, परन्तु यदि व्यक्ति को अपने जीवन में किये गये कार्यों के परिणाम प्रतिकूल लगते हैं, उसे तो अपना सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ लगता है तथा उसमें आशाहीनता की भावना घर की जाती है।

❖ **परिपक्वता→सनिष्ठा विपरीत आशाहीनता→**

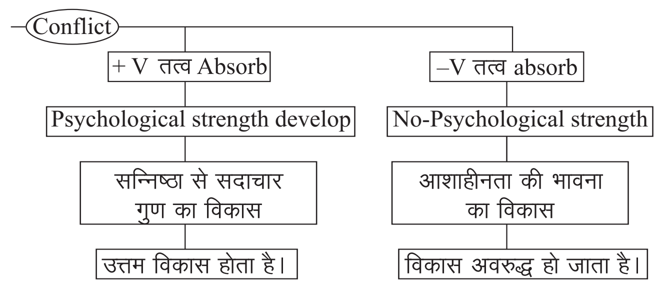

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. बाल मनोविज्ञान में 'विकास' की क्या भूमिका है ?
- (A) यह लक्ष्य निर्धारण में सहायक है
- (B) इससे अधिगम के लिए के लिए तत्परता निर्धारित होती है
- (C) इससे व्यवहार निर्धारित होता है
- (D) इससे स्मृति का संवर्द्धन होता है

2. छोटे बालकों में संवृद्धि और विकास पर निम्नांकित में से किसका प्रभाव पड़ता है ?
- (A) समकक्षीय संवृद्धि
- (B) घर का वातावरण
- (C) समाजिक प्रस्थिति
- (D) खेल और माहौल

3. संवृद्धि और विकास में आप कैसे विभेद करेंगे ?
- (A) वृद्धि गोचर होती है, विकास अगोचर होता है
- (B) दोनों ही गोचर हैं
- (C) वृद्धि मात्रात्मक होती है जबकि विकास गुणात्मक होता है
- (D) वृद्धि गुणात्मक होती है और विकास मात्रात्मक होता है

4. बालक के विकास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था क्या है ?
- (A) शारीरिक आयाम
- (B) मानसिक आयाम
- (C) सामाजिक संवेगात्मक आयाम
- (D) नैतिक आयाम

5. 'वृद्धि' की परिभाषा दी जाती है–
- (A) शरीर में व्युत्क्रमणीय गुणात्मक परिवर्तन के रूप में
- (B) शरीर में अव्युत्क्रमणीय मात्रात्मक परिवर्तन के रूप में
- (C) शरीर में व्युत्क्रमणीय मात्रात्मक परिवर्तन के रूप में
- (D) शरीर में अव्युत्क्रमणीय गुणात्मक परिवर्तन के रूप में

6. आनुवंशिकता और पर्यावरण से प्रभावित होता है–
- (A) वृद्धि और विकास
- (B) सामाजिक व्यवहार

(C) संवेग

(D) गृह का माहौल

7. बालक के विकास के लिए निम्नांकित में से क्या अनिवार्य कारक है ?

(A) नैतिक आयाम

(B) मानसिक विकास

(C) सामाजिक-सांवेगिक आयाम

(D) शारीरिक विकास

8. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सही है ?

(A) वृद्धि में गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों परिवर्तन सम्मिलित हैं

(B) परिपक्वता की आयु के बाद वृद्धि रुक जाती है

(C) विकास एक सतत प्रक्रिया नहीं है

(D) विकास और संवृद्धि दोनों सदैव साथ-साथ चलती हैं

9. प्रोक्सीमोडिस्टल अनुक्रम में मानव का विकास होता है—

(A) बाहर से भीतर की ओर

(B) सिर से पांव की ओर

(C) केन्द्र से बाह्य दिशा में

(D) पैर के अंगूठे से सिर की ओर

10. बालक ने बिना किसी सहयोग या प्रशिक्षण के ही रेंगना सीखा है। यह परिवर्तन कहा जा सकता है—

(A) वृद्धि (B) परिपक्वता

(C) विकास (D) अधिगम

11. पियाजे के अनुसार 'मूर्त संक्रियात्मक प्रावस्था' किस आयु में घटित होती है ?

(A) जन्म से 2 वर्ष की आयु तक

(B) 2 से 7 वर्ष की आयु तक

(C) 7 से 11 वर्ष की आयु तक

(D) 11 वर्ष और उसके बाद की आयु में

12. निम्नांकित में से किस आयु समूह के बालकों में परिवार (कुटुंब) के प्रति प्रेम; सामान्य भावनाएँ विकसित होती हैं ?

(A) 5 से 8 वर्ष की आयु

(B) 9 से 11 वर्ष की आयु

(C) 12 से 14 वर्ष की आयु

(D) 14 वर्ष के बाद

13. चरित्र विकास के स्तरों के संबंध में 'आत्म केन्द्रित चरण' का संबंध किस वय वर्ग से है ?

(A) 2 से 6 वर्ष (B) 4 से 10 वर्ष

(C) 10 से 13 वर्ष (D) 13 वर्ष के पश्चात्

14. संवेगात्मक विकास के संदर्भ में निम्नांकित में से कौन-सा कथन अधिक उपयुक्त है ?

(A) नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण गृह और समाज की ही जिम्मेदारी होनी चाहिए

(B) नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण व्यक्तियों के विकल्प पर छोड़ा जाना चाहिए

(C) नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण विद्यालय के कार्यक्रम का भाग होना चाहिए

(D) नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण का दायित्व संबंधित धर्मों पर छोड़ दिया जाना चाहिए

15. सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्तियों में, निम्नांकित में से कौन-सी विशेषता नहीं हो सकती है ?

(A) समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों की आलोचना करना

(B) संकट की घड़ी में अनिर्णय लेने की स्थिति

(C) अनुकूलक-व्यवहार और समायोजन करने की क्षमता

(D) विपरीत-लिंग के व्यक्तियों के प्रति सम्मान की भावना

16. 'मानव विकास' निम्नांकित में से किससे संबंधित है ?

(A) समाजशास्त्र (B) मनोविज्ञान

(C) मानवशास्त्र (D) जीव विज्ञान

17. प्रशस्ति की भावना और अभिवृत्ति का विकास निम्नांकित में से किस क्षेत्र के अधीन आता है ?

(A) संज्ञानात्मक विकास

(B) मनोप्रेरक विकास

(C) भावनात्मक विकास

(D) सामाजिक विकास

18. कविता नामक कोई विद्यार्थी हस्तगत समस्याओं के बारे में तार्किक दृष्टि से चिंतन कर सकती है और चीजों को श्रेणियों और शृंखला में व्यवस्थित करती है। साथ ही उसे भूतकाल, वतर्मान और भविष्य की भी समझ है, तो वह पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न चरणों में से किस चरण में है ?

(A) संवेदी प्रेरक

(B) पूर्व-संक्रियात्मक

(C) मूर्त संक्रियात्मक

(D) औपचारिक संक्रियात्मक

19. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सही है ?

(A) विकास का तात्पर्य मात्रात्मक परिवर्तन से है

(B) वृद्धि जीवन पर्यन्त प्रक्रम है

(C) विकास एक अनवरत प्रक्रिया है

(D) वृद्धि और विकास दोनों साथ साथ होता है

20. सिफैलो काडल विकास क्रम में मानव का विकास होता है—

(A) पैर के अंगूठे से सिर तक

(B) सिर से पैर के अंगूठे तक

(C) केन्द्र से बाह्य तक

(D) बाह्य क्षेत्र से केन्द्र तक

21. निम्नांकित में से क्या वृद्धि और विकास का सिद्धांत नहीं है ?

(A) व्यष्टिपरक अंतर का सिद्धांत

(B) विकासात्मक निर्देश का सिद्धांत

(C) अननुमेयता का सिद्धांत

(D) एकीकरण का सिद्धांत

22. निम्नांकित में से कौन-सा कथन गलत है ?

(A) संकल्पना निर्माण संवेदनशीलता और प्रत्यक्षण की परिणति है

(B) भाषा अर्जन से संकल्पना निर्माण में सहायता मिलती है

(C) संकल्पना निर्माण पर्यावरणीय उद्दीपन से निराश्रित होता है

(D) प्रत्यक्ष अनुभव और उदाहरणों से संकल्पना निर्माण में सहायता मिलती है

23. निम्नांकित में से किस वय वर्ग में बालकों में आत्म निर्भरता, स्वतंत्रता और स्व-शासन का भाव विकसित होता है ?

(A) 5 वर्ष से 8 वर्ष तक की आयु में

(B) 9 वर्ष से 11 वर्ष तक की आयु में

(C) 12 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु में

(D) 14 वर्ष की आयु के पश्चात्

24. नैतिक मूल्यों के विकास के बारे में कोहलबर्ग के वर्गीकरण के अनुसार परंपरागत नैतिकता स्तर निम्नांकित में से किस वय-वर्ग से संबंधित है ?

(A) 4 वर्ष से 10 वर्ष

(B) 10 वर्ष से 13 वर्ष

(C) 13 वर्ष से परवर्ती प्रौढ़ावस्था तक

(D) सम्यक प्रौढ़ावस्था

25. निम्नांकित में से क्या संवेगों को प्रशिक्षित करने की विधि नहीं है ?

(A) दमन

(B) उद्यमिता

(C) गोपनीयता

(D) पुनःनिर्देशन और उदात्तीकरण

26. हरि नामक किसी बालक ने वस्तुओं को निरूपित करने के लिए संकेतों का प्रयोग करना शुरू किया है किन्तु उसे भूतकाल और भविष्य को समझने में कठिनाई हो रही है और वह तार्किक दृष्टि से एक दिशा में सोच सकता है, तो पियाजे के मत में वह बालक संज्ञानात्मक विकास के किस चरण में है?

(A) संवेदी प्रेरक

(B) पूर्व संक्रियात्मक

(C) मूर्त संक्रियात्मक

(D) औपचारिक संक्रियात्मक

27. बालक द्वारा सच बोलना किस डोमेन में आता है ?

(A) सामाजिक (B) शारीरिक

(C) ज्ञानात्मक (D) नैतिक

28. बालक के विकास में वृद्धि का अर्थ है—

(A) अप्रतिवर्ती शारीरिक परिवर्तन

(B) अप्रतिवर्ती संवेगात्मक परिवर्तन

(C) प्रतिवर्ती शारीरिक पविर्तन

(D) प्रतिवर्ती संवेगात्मक परिवर्तन

29. बालक के अधिगम में ____________ की महत्वपूर्ण भूमिका है।

(A) संवेग (B) वृद्धि

(C) परिपक्वन (D) विकास

30. बालक को कद एवं वजन में वृद्धि किस बात का संकेत है?

(A) संवेगात्मक वृद्धि (B) ज्ञानात्मक वृद्धि

(C) सामाजिक वृद्धि (D) शारीरिक वृद्धि

31. स्वर विज्ञान क्या है ?

(A) स्पर्श संवेदकों की क्षमता तैयार करना

(B) आरंभिक बाल्यकाल में वाक् ध्वनियाँ तैयार करना

(C) बालक में विकसित श्रवण संवेदन

(D) बाल्यकाल में घ्राण अभिग्राही

32. निम्नांकित में से कौन-सा कथन गलत है ?

(A) वृद्धि विकास की अपेक्षा अधिक व्यापक पद है।

(B) विकास वृद्धि की तुलना में अधिक व्यापक पद है।

(C) वृद्धि का तात्पर्य मात्रात्मक परिवर्तन से है।

(D) विकास का तात्पर्य गुणात्मक परिवर्तनों से भी है।

33. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सही है ?

जन्म के समय शिशु का सिर उसकी कुल लंबाई का _____ होता है।

(A) 1/3 (B) 1/4

(C) 1/6 (D) 1/8

34. निम्नांकित को पढ़िए—

(a) बालक सरल बुनियादी भाषा कौशल अर्जित कर रहा है।

(b) बालक 'अहं' का भाव त्याग कर 'हम' की भावना विकसित कर रहा है।

(c) बालक संवेगों की प्रकट अभिव्यक्ति को नियंत्रित कर सकता है।

उपर्युक्त के आधार पर बताएँ कि बालक विकास के किस चरण में है ?

(A) शैशवावस्था

(B) आरंभिक बाल्य काल

(C) परवर्ती बाल्य काल

(D) किशोरावस्था

35. निम्नांकित में से क्या 'औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था' से संबंधित नहीं है ?

(A) आगमनात्मक चिंतन

(B) परिकल्पनात्मक – निगमनात्मक चिंतन

(C) अंतः तर्कवाक्यात्मक तर्क

(D) अंतः क्रियात्मक चिंतन

36. किस वय वर्ग में बालकों में अन्य बालकों की आवश्यकताओं और अभिलाषाओं की पहचान का भाव विकसित होता है ?

(A) 5 से 8 वर्ष (B) 9 से 11 वर्ष

(C) 12 से 14 वर्ष (D) 14 वर्ष के बाद

37. चारित्रिक विकास के किस चरण में अभ्यांतरिक आत्म आलोचना का भाव विकसित होता है ?

(A) अनैतिक चरण में

(B) आत्म केन्द्रित अवस्था में

(C) अनुकूल परंपरागत अवस्था में

(D) अविवेकी आन्तरात्मा की अवस्था में

38. निम्नांकित वाक्य को पूरा कीजिए—

'संवेगों को ग्रहण किया जाता है उनका अध्यापन नहीं होता है', अतएव आध्यापकों को—

(A) इस मामले में किसी प्रकार का मार्गदर्शन करने से परहेज करना चाहिए।

(B) परिष्कृत संवेगात्मक अभिव्यक्ति और व्यवहार के लिए उन्हें बालकों के समक्ष स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

(C) बालकों में सम्यक संवेगात्मक व्यवहार प्रोद्भूत करने के लिए बालकों को प्रशिक्षित करने के लिए माता–पिता को शामिल करना चाहिए।

(D) कठोर अनुशासन लागू करना चाहिए।

39. व्यवस्थित परिवर्तन निम्नांकित में से किसके भीतर उद्भूत होते हैं ?

(A) परिपक्वता (B) वृद्धि

(C) विकास (D) उद्विकास

40. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सही है ?

(A) सृजनात्मक क्षमता परीक्षण में नवीनता और मौलिकता को अधिक महत्व दिया जाता है।

(B) बुद्धि परीक्षणों में वक्तृत्व और लचीलेपन पर जोर दिया जाता है।

(C) सृजनशीलता परीक्षण परिशुद्धता का मापन है।

(D) बुद्धि परीक्षणों में सृजनात्मक योग्यताओं का भी परीक्षण किया जाता है।

41. व्यष्टिपरक व्यवहार व्यक्ति के किस चीज का परिणाम होता है ?

(A) अर्जित लक्षण

(B) जीववैज्ञानिक अभिदाय

(C) सामाजिक और भौतिक वातावरण

(D) संकट–प्रबंधन का प्रयास

42. मीना नामक विद्यार्थी परिकल्पनात्मक चिंतन कर सकती है और निगमनात्मक चिंतन करती है तथा अमूर्त समस्याओं को हल करने में समर्थ है एवं वैयक्तिक अस्मिता के बारे में चिंतित रहती है।

उपर्युक्त के आधार पर बताएँ कि वह बालिका पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के किस चरण में है ?

(A) संवेदी प्रेरक

(B) पूर्व संक्रियात्मक

(C) मूर्त संक्रियात्मक

(D) औपचारिक संक्रियात्मक

43. बालक के विकास में परिपक्वता का तात्पर्य निम्नांकित में से किससे है ?

(A) केवल संवृद्धि

(B) केवल विकास

(C) केवल संवृद्धि और विकास

(D) परिपक्व चिंतन

44. सामाजिक और भावनात्मक विकास निम्नांकित में से किसके लिए महत्वपूर्ण कारक है?

(A) टीन–एज (तरुणावस्था) में बालक का विकास

(B) प्रारंभिक चरण में बालक का स्वस्थ विकास

(C) किशोरावस्था में बालक का विकास

(D) प्रौढ़ का स्वस्थ विकास

45. कौशल विकास निम्नांकित में से किससे साहचर्यित है ?

(A) भावात्मक क्षेत्र (B) मनोगतिज क्षेत्र

(C) संज्ञानात्मक क्षेत्र (D) भावनात्मक क्षेत्र

46. 'भावना' निम्नांकित में से किससे सहबद्ध है?

(A) भावनात्मक क्षेत्र (B) भावात्मक क्षेत्र

(C) संज्ञानात्मक क्षेत्र (D) मनोगतिज क्षेत्र

47. 'वृद्धि' पद से आपका क्या तात्पर्य है ?

(A) यह सामाजिक परिवर्तन है।

(B) यह भावनात्मक परिवर्तन है।

(C) यह गुणात्मक परिवर्तन है।
(D) यह मात्रात्मक परिवर्तन है।

48. 'वृद्धि' में निम्नांकित में से क्या महत्वपूर्ण है ?
(A) आयाम (B) विकास
(C) सामाजिक व्यवहार(D) परिपक्वता

49. मानव किसके साथ पैदा नहीं होता है ?
(A) प्रतिवर्त (B) मूल्य
(C) अनुक्रिया (D) मूल-प्रवृत्ति

50. गतिक विकास होता है—
(A) नियत क्रम में किंतु एक समयबद्ध व्यवस्था में
(B) नियत क्रम में और एक निश्चित समय के भीतर
(C) यादृच्छिक तरीके से और एक समयबद्ध व्यवस्था में नहीं
(D) यादृच्छिक तरीके से किंतु एक निश्चित समय के भीतर

51. कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है ?
(A) नैतिकता पूर्व-परम्परागत स्तर पर पुरस्कारों और स्व-रुचि पर आधारित होती है
(B) पूर्व-परम्परागत स्तर पर नैतिकता बाह्य रूप से नियंत्रित होती है
(C) पश्च-परम्परागत स्तर पर सामाजिक मूल्यों का पालन करने की प्राथमिकता होती है
(D) धारणाओं पर आधारित तर्क और नैतिकता के सिद्धान्त पश्च-परम्परागत स्तर की विशेषता होती है

52. मानव विकास के संदर्भ में एक अनुसंधानकर्ता यह खोज करना चाहता है कि छात्रों की आयु बढ़ने के साथ–साथ विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर छात्रों में वितान कौशलों का विकसन किस प्रकार होता है ? अनुसंधानकर्ता किस अभिकल्प को अपनाकर इसकी खोज कर सकता है ?
(A) अनुप्रस्थ परिच्छेद अभिकल्प
(B) अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प
(C) अनुदैर्ध्य अभिकल्प
(D) प्रायोगिक अभिकल्प

53. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है ?
(A) परिपक्वन शब्द वृद्धि का समानार्थक है
(B) विकास का अर्थ शारीरिक परिपक्वन से है
(C) वृद्धि से शरीर में मात्रात्मक परिवर्तन होते हैं
(D) विकास और परिपक्वता वृद्धि की प्रक्रिया और उत्पाद हैं।

54. विकास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही नहीं है ?
विकासात्मक परिवर्तन होते हैं—
(A) व्यवस्थित (B) चक्रीय
(C) उत्तरोत्तर (D) सुसंगत

55. एक बालक के संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन मूलभूत संकल्पना गठन का एक उदाहरण है ? बालक सोचता है कि—
(A) सभी पुरुष 'डैडी' हैं।
(B) गाय एक बड़ा पशु है जिसके चार पैर तथा एक लंबी पूँछ होती है।
(C) बिल्ली एवं गुड़िया एक दूसरे से अलग होते हैं।
(D) वर्षा एक प्राकृतिक घटना है।

56. विकास के संदर्भ में निम्नलिखित को पढ़िए—
(a) असमता (b) स्थिरता
(c) एकरूपता (d) उतार–चढ़ाव
व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में विकास की दर के संदर्भ में विकास नहीं दर्शाता—
(A) (a) एवं (c) (B) (b) एवं (d)
(C) (a) एवं (d) (D) (b) एवं (c)

57. कोहलबर्ग के अनुसार, नैतिक विकास बालकों में निर्भर नहीं करता उनके—
(A) पालन–पोषण पर
(B) भविष्य की योजनाओं पर
(C) बौद्धिक विकास के स्तर पर
(D) सीखने के अनुभव पर

58. कोहलबर्ग के अनुसार, अधिकांश किशोर नैतिकता के _______ स्तर पर होते हैं। सही विकल्प द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
(A) पूर्व–पारंपरिक
(B) पारंपरिक
(C) पश्च–पारंपरिक
(D) प्रारंभिक

59. नैतिक विकास के कोलबर्ग सिद्धान्त में बालक पर अभिभावकों के प्रभाव को किस अवस्था में माना जाता है?
(A) परम्परागत अवस्था में
(B) पश्च-परम्परागत अवस्था में
(C) पूर्व-परम्परागत अवस्था में
(D) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में

60. मानव विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से क्या गर्भावधि से शुरू होकर समस्त बाल्यकाल तक जारी रहता है?
(A) गतिक विकास
(B) प्रतिवर्ती क्रिया
(C) संज्ञानात्मक विकास
(D) संवेदी विकास

61. मानवों में सांवेगिक विकास की प्रक्रिया होती है—
(A) रेखीय (B) चक्रीय
(C) सरल रेखीय (D) परवलयिक

62. मानवों में निम्नलिखित में कौन-सा कभी न समाप्त होने वाली प्रकृति का है ?
(A) परिपक्वन (B) वय:सन्धि (पुबर्टी)
(C) वृद्धि (D) विकास

63. संकल्पना की दृष्टि से वृद्धि और विकास शब्द –
(A) एकसमान हैं (B) भिन्न हैं
(C) विपरीत हैं (D) पर्याय हैं

64. 'आनुक्रमिकता' का अर्थ है कि विकास होता है—
(A) रेखीय (B) उत्तरोत्तर
(C) व्यवस्थित (D) सुसंगत

65. कक्षा–VII के छात्रों में लेखन कौशल विकसित करने के लिए, निम्नलिखित में से सर्वाधिक उपयुक्त क्रिया कौन-सी है ?
(A) विद्यार्थियों को 'राष्ट्रपति की शक्तियों' का वर्णन करने के लिए कहना
(B) विद्यार्थियों को 'कक्षा–VII के मेरे अनुभव' का वर्णन करने के लिए कहना
(C) विद्यार्थियों को 'स्वतंत्रता दिवस' पर एक निबन्ध लिखने के लिए कहना
(D) विद्यार्थियों को 'चन्द्रमा पर मेरा एक दिन' शीर्षक का वर्णन करने के लिए कहना

66. मानव में किस क्रिया के लिए स्थूल गतिक कौशल की आवश्यकता नहीं होती है ?
(A) अकेला खड़े रहने में
(B) खिलौने को मजबूती से पकड़ने में
(C) सहायता और समर्थन से सीढ़ियाँ चलने में
(D) एक स्थान पर कूदने में

67. कोलबर्ग ने नैतिक विकास को किसमें वर्णित किया है ?
(A) भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में
(B) सामाजिक और भावनात्मक विकास में
(C) शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास में
(D) सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास में

68. मानव विकास प्रतिमान है—
(A) सर्पिल (B) रेखीय
(C) परवलयिक (D) चक्रीय

69. मानव विकास के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है ?
(A) विकास विभिन्न दरों पर आगे बढ़ता है।
(B) विकास प्रतिमान भविष्यवाणी योग्य होते हैं।

(C) विकास परिपक्वन का पर्याय हैं।

(D) पूर्व विकास की अपेक्षा परवर्ती विकास अधिक विशिष्ट होता है।

70. 'सिफेलोकॉडल' और 'प्राक्सीमोडिस्टल' शब्द किससे संबंधित हैं ?

(A) वृद्धि (B) जरण

(C) परिपक्वन (D) विकास

71. मानव का संज्ञानात्मक विकास एक प्रकार का है–

(A) मात्रात्मक और असतत परिवर्तन

(B) गुणात्मक और सतत परिवर्तन

(C) मात्रात्मक और सतत परिवर्तन

(D) गुणात्मक और असतत परिवर्तन

72. मानव में निम्नलिखित में से किस क्रिया के लिए अच्छे गतिक कौशल की जरूरत नहीं होती है ?

(A) किसी खिलौने को कसकर पकड़ना

(B) जूते के फीते बाँधना

(C) किसी स्थान पर कूदना

(D) कमीज के बटन लगाना

73. शिशुओं के चेहरे के हाव भाव किसके विश्वसनीय संकेतक हैं ?

(A) संज्ञानात्मक अनुभव के

(B) सामाजिक अनुभव के

(C) नैतिक अनुभव के

(D) संवेगात्मक अनुभव के

74. मानव विकास के संदर्भ में, अनुसंधानकर्ता एक समय पर छात्रों के वितान कौशल की जाँच करना चाहता है। अनुसंधानकर्ता किस अभिकल्प को अपना सकता है ?

(A) अनुप्रस्थ–परिच्छेद अभिकल्प

(B) अनुदैर्ध्य अभिकल्प

(C) सोलोमन चतुर्समूह अभिकल्प

(D) प्रति–आनुक्रमिक अभिकल्प

75. आनुवंशिकता और वातावरण के संदर्भ में निम्नलिखित को पढ़िए—

(a) आनुवंशिकता यह निर्धारित करती है कि बालक क्या कर सकता है

(b) वातावरण यह निर्धारित करता है कि बालक क्या कर सकता है

(c) आनुवंशिकता यह निर्धारित करती है कि बालक क्या करता है

(d) वातावरण यह निर्धारित करता है कि बालक क्या करता है

निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?

(A) केवल (c) सही है

(B) (a) और (b) सही हैं

(C) (a) और सही हैं

(D) केवल (b) सही है

76. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है ?

(A) विकास और परिपक्वन, वृद्धि के साथ-साथ होते हैं

(B) वृद्धि और परिपक्वन विकास के साथ-साथ होते हैं

(C) वृद्धि और विकास परिपक्वन के साथ-साथ होते हैं

(D) विकास वृद्धि से पहले होता है किंतु परिपक्वन के साथ-साथ होता है

77. बच्चों की भाषा संबंधी योग्यता के विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है ?

(A) त्रि-भाषायी सूत्र लागू करने से जाटिलता उत्पन्न हो सकती है और इसलिए इससे बचा जाना चाहिए

(B) बालक अत्यधिक सीमित भाषा योग्यता के साथ स्कूल आते हैं क्योंकि भाषा एक जटिल नियम आधारित प्रणाली है

(C) बहु-भाषा, भारत की भाषायी विविधता की एक विशिष्ट विशेषता है और उसे एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए

(D) बालकों की गृह भाषा उनके औपचारिक अधिगम में गंभीरता से दखल देती है और उसे पढ़ाई का माध्यम बनाए जाने से बचा जाना चाहिए

78. कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के संदर्भ में एक बालक स्व–स्वीकृत नैतिक सिद्धांतों के स्तर पर है। बालक ने–

(A) पारंपरिक नैतिक तर्क विकसित कर लिया है

(B) पूर्व पारंपरिक नैतिक तर्क विकसित कर लिया है

(C) उत्तर पारंपरिक नैतिक तर्क विकसित कर लिया है

(D) नैतिक तर्क की मूर्त प्रचालन अवस्था विकसित कर ली है

79. प्रोक्सीमोडिस्टल का सिद्धांत कहता है कि विकास–

(A) सिर से पैर तक होता है

(B) पैर से सिर तक होता है

(C) बाहर से शरीर के केन्द्रीय अंगों की ओर होता है

(D) शरीर के केन्द्रीय अंगों से बाहर की ओर होता है

80. विद्यालयों द्वारा शिक्षा के किस उद्देश्य को श्रेष्ठतम रूप से प्राप्त किया जाता है ?

(A) बच्चों का संज्ञानात्मक विकास

(B) बच्चों का सांवेगिक विकास

(C) बच्चों का मनो शारीरिक विकास

(D) बच्चों का भाषिक विकास

81. 'सिफेलो कॉरडल' सिद्धांत यह बताता है कि शरीर का विकास .... होता है।

(A) पैर से सिर की ओर

(B) सिर से पैर की ओर

(C) शरीर के मध्य से बाहर की ओर

(D) बाहर से शरीर के मध्य की ओर

82. एक अध्यापक यह देखता है कि उसके छात्र पहले की अपेक्षा लंबे और वजनदार हैं। छात्रों की ओर से यह उनका/उनके______को दर्शाता है।

(A) वृद्धि (B) परिपक्वम

(C) विकास (D) संरचना-विकास

83. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है ?

(A) अधिगम और परिपक्वन दो प्रक्रियाएं हैं जिनके माध्यम से वृद्धि होती है

(B) प्रगति और परिपक्वन दो प्रक्रियाएं हैं जिनके माध्यम से वृद्धि होती है

(C) परिवक्वन और अधिगम दो प्रक्रियाएं हैं जिनके माध्यम से विकास होता है

(D) विकास और अधिगम दो प्रक्रियाएं हैं जिनके माध्यम से परिपक्वन होता है

84. निम्नलिखित में से किसने बालक की नैतिक दुविधाओं में प्रतिक्रिया का अध्ययन किया ?

(A) पियाजे (B) एरिक्सन

(C) कोहलबर्ग (D) स्किनर

85. निम्नलिखित को पढ़िए—

(a) लड़कों और लड़कियों में शरीर के भिन्न–भिन्न अंग एक ही दर पर विकसित होते हैं।

(b) लड़कों और लड़कियों में, शरीर के समान अंग भिन्न–भिन्न दर पर विकसित होते हैं।

(c) लड़कों और लड़कियों में, शरीर के भिन्न–भिन्न अंग भिन्न–भिन्न दर पर विकसित होते हैं।

(d) लड़कों और लड़कियों में, शरीर के समान अंग समान दर पर विकसित होते हैं।

निम्नलिखित में से कौन से विकल्प सही है।

(A) (a) और (d) सही हैं

(B) (b) और (c) सही हैं

(C) (c) और (d) सही हैं

(D) (a) और (b) सही हैं

86. विद्यालय–पूर्व बालक वातावरण को खोजने के लिए अपने माता–पिता पर एक सुरक्षित आधार के

रूप में विश्वास करते हैं। यह उनका ________ दर्शाता है।

(A) संज्ञानात्मक विकास
(B) सामाजिक विकास
(C) भावनात्मक विकास
(D) नैतिक विकास

87. बालक की संवृद्धि में 'विकास' से आपका क्या तात्पर्य है ?

(A) बालक की वृद्धि के क्रम में गैर-व्युत्क्रमणीय गुणात्मक परिवर्तन
(B) व्युत्क्रमणीय गुणात्मक परिवर्तन
(C) बालक की वृद्धि के क्रम में होने वाला गुणात्मक परिवर्तन
(D) गैर-व्युत्क्रमणीय गुणात्मक परिवर्तन

88. निम्नांकित में से किस उदाहरण से बालक के 'नैतिक क्षेत्र' की सर्वोत्तम व्याख्या हो सकती है ?

(A) सामाजिक संघर्ष के बारे में मित्र से विवाद
(B) उत्तम और बुरे के मध्य विभेद करना
(C) पालतू श्वान के निधन पर रोना
(D) जन्मदिन के अवसर पर मिठाइयाँ बाँटना

89. निम्नांकित में से किसे बालक के विकास में 'भावनात्मक क्षेत्र' माना जा सकता है ?

(A) अनुभूति (B) रुदन
(C) तैराकी (D) चिंतन

90. बालक के विकास में निम्नांकित में से किसके लिए 'परिपक्वता' प्रमुख तत्व है ?

(A) नृत्य (B) अधिगम
(C) खेलना (D) गायन

91. 'संज्ञानात्मक परिपक्वता' क्या है ?

(A) अनुभव करने की योग्यता
(B) सोचने की योग्यता
(C) कार्य करने की योग्यता
(D) मुस्कराने की योग्यता

92. बालकों में 'आत्म-नियंत्रण' विकसित करने का लक्ष्य निम्नांकित में से किसके माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है ?

(A) समाजीकरण का प्रक्रम
(B) सामाजिक–सांवेगिक अधिगम प्रक्रम
(C) प्रतिभागी अधिगम
(D) समकक्षीय अधिगम

93. बालक की संवृद्धि में 'विकास' क्या है ?

(A) गुणात्मक परिवर्तन
(B) मात्रात्मक परिवर्तन
(C) वास्तविक (ठोस) परिवर्तन
(D) सामाजिक परिवर्तन

94. बालक की संवृद्धि में 'विकास' से आपका क्या तात्पर्य है ?

(A) यह बालक की संवृद्धि क्रम में होने वाला गुणात्मक परिवर्तन है
(B) यह बालक की संवृद्धि क्रम में होने वाला परिमाणात्मक परिवर्तन है
(C) यह अव्युत्क्रमणीय परिमाणात्मक परिवर्तन है
(D) यह व्युत्क्रमणीय परिमाणात्मक परिवर्तन है

95. निम्नांकित में से क्या बालकों का सामाजिक कौशल नहीं है ?

(A) मित्र के प्रति स्नेह प्रदर्शन
(B) समकक्षीय बालकों के साथ भोजन साझा करना
(C) बालकों के साथ खेलना
(D) जन्म दिन पर मिष्ठान वितरण

96. बालकों में 'सही और गलत' का बोध निम्नांकित में से किस क्षेत्र के अन्तर्गत आता है ?

(A) नैतिक क्षेत्र (B) सामाजिक क्षेत्र
(C) भौतिक क्षेत्र (D) संवेगात्मक क्षेत्र

97. 'घ्राण' जैसे संवेदी विकास निम्नांकित में से किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है ?

(A) संप्रेषण क्षेत्र
(B) अनुकूलन क्षेत्र
(C) भौतिक क्षेत्र
(D) सामाजिक क्षेत्र

98. अध्यापक के रूप में आप माता–पिता को अपने बालकों के अधिगम वृद्धि के संबंध में क्या सुझाव देंगे ?

(A) और अधिक प्रासंगिक पुस्तकें खरीदकर वे उन्हें पढ़ने के लिए कहें
(B) उन्हें विशेषज्ञों से परामर्श लेने के लिए कहना
(C) माता–पिता दोनों को बच्चों के साथ गुणात्मक समय व्यतीत करने के लिए कहना
(D) अध्ययन के बदले प्रोत्साहन के रूप में उन्हें पॉकेट मनी देने के लिए कहना

99. बालक की संवृद्धि में विकासात्मक कार्य क्या है ?

(A) बालक द्वारा निष्पादित कार्यकलाप
(B) बाल्यावस्था में प्रदर्शन कौशल
(C) उपयुक्त समय में और बाल्यावस्था के सही चरण में जीवन कौशल का अधिगम
(D) आरंभिक बाल्याकाल में पूरा किए जाने वाले कार्य

100. निम्नांकित में से किसे बालक के मनोगतिक क्षेत्र की संज्ञा दी जा सकती है ?

(A) भावना (B) चिंतन
(C) साइकिल चलाना (D) रोना

101. टेंटुआ है–

(A) एक एंडोक्राइन ग्रंथि जो हार्मोन का स्राव करती है।
(B) प्रसवपूर्व स्थिति के दौरान भ्रूण की बाहरी वृद्धि।
(C) किशोरों के गले का बाहर निकला हुआ भाग।
(D) किशोरियों के गले का बाहर निकला हुआ भाग।

102. 8 माह के बालक को रेंगना कोई नहीं सिखाता है। किंतु एक दिन बालक रेंगना शुरू कर देता है। बालक की ओर से यह उसकी/उसके ____________ को दर्शाता है।

(A) वृद्धि (B) विकास
(C) परिपक्वन (D) संरचना-विकास

103. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है ?

(A) विकास और वृद्धि परिपक्वता की प्रक्रिया और उत्पाद हैं।
(B) विकास और परिपक्वता वृद्धि की प्रक्रिया और उत्पाद हैं।
(C) वृद्धि और परिपक्वता विकास की प्रक्रिया और उत्पाद हैं।
(D) प्रगति और परिपक्वता विकास की प्रक्रिया और उत्पाद हैं।

104. किसी व्यक्ति की ओर से उन मूल्यों को अर्जित करना, जिसकी समाज ग्रहण करने तथा सीखने की आशा करता है, उसकी ______ माना जाता है।

(A) सामाजिक विकास
(B) नैतिक विकास
(C) भावनात्मक विकास
(D) आध्यात्मिक विकास

105. कक्षा-आठ के गणित में, पहले 'साधारण ब्याज' पढ़ाया जाता है और फिर 'चक्रवृद्धि ब्याज'। यह ______ के अनुसार है।

(A) विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास
(B) विद्यार्थियों के शारीरिक विकास
(C) विद्यार्थियों के सामाजिक विकास
(D) विद्यार्थियों के नैतिक विकास

106. मानव शिशुओं में, शरीर की कुल लंबाई की तुलना में सिर का भाग होता है–

(A) 1/2 (B) 1/3
(C) 1/4 (D) 1/8

107. बच्चा प्रबल उद्दीपन के प्रति सामान्य उत्तेजना दिखाता है। यह उसके _________ की निशानी है।

(A) सह-संज्ञानात्मक (मेटा कॉगनीशन) कौशल

(B) संज्ञानात्मक वृद्धि

(C) भावनात्मक व्यवहार

(D) समाजीकरण

108. बाल मनोविज्ञान में विकास की क्या भूमिका है ?

(A) इससे लक्ष्य निर्धारण में सहायता मिलती है।

(B) इससे अधिगम के लिए तत्परता अवधारित होती है।

(C) इससे व्यवहार निर्धारित होता है।

(D) इसमें स्मृति पर बल दिया जाता है।

109. सामाजिक–सांवेगिक अधिगम निम्नांकित में से किसका प्रक्रम है ?

(A) आत्म–अनुशासन

(B) भाषायी योग्यता विकास

(C) आत्म–विकास

(D) आत्म–नियंत्रण विकसित करना

110. निम्नांकित में से क्या विकास संबंधी आजीवन संदर्भ की विशेषता नहीं है?

(A) मानव विकास के विभिन्न प्रक्रम परस्पर अन्त:बद्ध होते हैं।

(B) विकास अत्यधिक रूपंकर होता है।

(C) विकास एकदिशीय होता है।

(D) विकास आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

111. उद्‌विकास का तात्पर्य किससे है?

(A) प्रजाति–विशिष्ट परिवर्तन

(B) ऐसे परिवर्तन जिनमें किसी व्यवस्थित अनुक्रम का पालन किया जाता है और ये आनुवंशिक ब्लू–प्रिंट से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं।

(C) ऐसी प्रक्रिया जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने पूरे जीवन चक्र में बढ़ता है और स्वयं में परिवर्तन लाता है।

(D) संदर्भ विशिष्ट परिवर्तन।

112. मानव विकास के संदर्भ में, एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी आयामों में जीवन भर परिवर्तन होते रहते हैं। प्राकृतिक रूप से, यह परिवर्तन–

(A) बड़े एवं क्रमिक होते हैं।

(B) छोटे एवं क्रमिक होते हैं।

(C) छोटे एवं ढलान वाले होते हैं।

(D) पर्याप्त एवं संतुलित होते हैं।

113. मानव विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है ?

(A) वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तनों के विवरण तक सीमित है।

(B) वृद्धि के परिणाम बहुत विशिष्ट होते हैं।

(C) वृद्धि जीवन पर्यंत जारी रहती है।

(D) वृद्धि, विकास की एक उप–प्रणाली है।

114. एक छात्र कक्षा VII में पढ़ रहा है। कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के संदर्भ में उससे नैतिक विकास की किस अवस्था की अपेक्षा नहीं की जा सकती है ?

(A) एहसानों का आदान–प्रदान

(B) सामाजिक अनुबंध

(C) विधि और व्यवस्था

(D) दंड से बचाव और आज्ञाकारिता

115. कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के संदर्भ में, निम्नलिखित में कौन-सा कथन गलत है ?

(A) नैतिक तर्क का "विधि और व्यवस्था" का चरण, नैतिक तर्क के 'एहसानों के आदान–प्रदान' से पहले का चरण है।

(B) नैतिक तर्क का "सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत" चरण, नैतिक तर्क के "विधि और व्यवस्था" चरण से पहले का चरण है।

(C) नैतिक तर्क के "सामाजिक अनुबंध" चरण के बाद, नैतिक तर्क का "सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत" चरण आता है।

(D) नैतिक तर्क के "दंड से बचाव एवं आज्ञाकारिता" चरण, नैतिक तर्क के "एहसानों का आदान-प्रदान" चरण के बाद आता है।

116. वायगोत्स्की के अनुसार, __________ एक बालक अकेले क्या कर सकता है और वह बालक मदद द्वारा क्या कर सकता है, इसके बीच का अंतर है।
सही विकल्प द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(A) अभ्यस्तता

(B) मेटामेमोरी

(C) जोन ऑफ प्रोक्सिमल डेवलपमेंट

(D) स्कैफोल्डिंग

117. नवजात (नियोनेट) से तात्पर्य है–

(A) गर्भ में 36 सप्ताह से पहले पैदा बालक

(B) एक असामान्य बालक

(C) एक ताजा पैदा बालक

(D) आनुवंशिक रूप से विकृत बालक

118. बच्चे के विकास में 'विकासात्मक कार्य' से आपका क्या अभिप्राय है?

(A) बचपन के दौरान किए जाने वाले कार्य

(B) बचपन के उपयुक्त चरण में कौशल (मील का पत्थर) अर्जित करना

(C) विकास के दौरान बच्चे द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ

(D) 12 वर्ष की आयु में कौशल अर्जित करना

119. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न चरणों के अंतर्गत निम्नांकित विशेषताएँ किस चरण से संबंधित हैं ?
वर्ग और संबंध का तर्क, संरक्षण की योग्यता, संख्या ज्ञान, विचार में व्युत्क्रमणीयता का विकास।

(A) संवेदी प्रेरक/इंद्रियजनित गामक

(B) पूर्व संक्रियात्मक

(C) मूर्त संक्रियाएँ

(D) रूपात्मक संक्रियाएँ

120. अधिगम सिद्धांत के अनुसार विकास क्या है ?

(A) मात्रात्मक परिवर्तन

(B) गुणात्मक परिवर्तन

(C) भयंकर परिवर्तन

(D) बालक का विकास

121. मानव विकास के संदर्भ में, आयु से संबंधित परिवर्तनों का पता लगाने के लिए, एक समय में कई अलग–अलग आयु समूहों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन किया जा सकता है–

(A) क्रास–सेक्शनल डिज़ाइन द्वारा

(B) अर्द्ध-प्रायोगिक डिज़ाइन द्वारा

(C) अनुदैर्ध्य डिज़ाइन द्वारा

(D) क्रास-अनुक्रमिक डिज़ाइन द्वारा

122. कुछ प्रारंभिक तरीकों में से एक, जिसके द्वारा मानव शिशु दर्शाते हैं कि उनके पास अलग व्यक्तित्व है, वह है–

(A) उनके अधिगम कौशल

(B) उनकी भाषा

(C) उनका मानसिक स्वास्थ्य

(D) उनका स्वभाव

123. मनुष्य के बच्चे के विकास के संदर्भ में, विकास–

(A) धीमा एवं ज्यामितीय प्रगति में होता है।

(B) लयबद्ध एवं नियमित होता है।

(C) तीव्र एवं घातांकीय होता है।

(D) स्थिर एवं एकदिशीय होता है।

124. मानव विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन–सा कथन गलत है ?

(A) विकास, एक शब्द के रूप में, वृद्धि शब्द से तुलनात्मक रूप से अधिक व्यापक अर्थ रखता है।

(B) विकास स्थिरता एवं एकरूपता प्रदर्शित नहीं करता है।

(C) विकास के परिणामों का आकलन और मापन कठिन है।

(D) विकास केवल गुणात्मक सुधार से जुड़ा है।

125. कक्षा V के विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि सर्वाधिक उपयुक्त होगी ?

(A) विद्यार्थियों को शीर्षक ''चाँद पर मेरा एक दिन'' का वर्णन करने एवं लिखने को कहना।

(B) विद्यार्थियों को किसी भारतीय त्यौहार पर निबन्ध लिखने को कहना।

(C) विद्यार्थियों को, जिस विद्यालय में वे दाखिल हैं, वहाँ के अनुभव लिखित में साझा करने को कहना।

(D) विद्यार्थियों को उनके ''भारतीय लोकतंत्र'' पर विचारों को लिखित में वर्णन करने को कहना।

126. कक्षा VII के विद्यार्थियों हेतु विकासात्मक कार्य आयोजित करने के लिए, निम्नलिखित में से कौन उनके व्यक्तित्व विकास में उपयुक्त रूप से प्रभावशाली नहीं होगा?

(A) असफलता को जीवन के एक भाग के रूप में स्वीकार करने पर विद्यार्थियों को व्याख्यान देना।

(B) विद्यार्थियों को उनके पिछले नकारात्मक अनुभवों और उन्होंने उसका कैसे सामना किया, को साझा करने को कहना।

(C) विद्यार्थियों को उनकी समाज की दूरदर्शिता की चर्चा करने को प्रेरित करना।

(D) संकल्पना पढ़ाने के बाद, विद्यार्थियों को उस संकल्पना से प्रश्न बनाने को कहना।

127. मानव विकास का पैटर्न ________ उन्नति है।

सही विकल्प द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(A) सर्पिल (B) सरल रैखिक

(C) संकेंद्रिक (D) रैखिक

128. निम्नलिखित में से कौन-सा एक बालक के जीवन में होने वाले सभी वृद्धि और विकास का वास्तविक प्रारंभिक बिंदु एवं आधार है ?

(A) जैविक कारक

(B) बौद्धिक कारक

(C) पर्यावरणीय कारक

(D) आनुवंशिक कारक

129. अनिल अपने पिता के साथ कार में बैठता है और उसके पिता कार चलाते हैं। अनिल तेज गति के लिए अपने पिता की आलोचना करता है, क्योंकि तेज गति बताए गए कानूनों के विरुद्ध है। अनिल–

(A) नैतिकता के प्रारंभिक स्तर पर है।

(B) नैतिकता के पारंपरिक स्तर पर है।

(C) नैतिकता के पूर्व–पारंपरिक स्तर पर है।

(D) नैतिकता के पश्च–पारंपरिक स्तर पर है।

130. बालक के सर्वांगीण विकास हेतु निम्न में से कौन-सा एक न्यूनतम महत्वपूर्ण है ?

(A) सहपाठियों से संबंध

(B) परिवार–स्कूल संबंध

(C) लचीला मध्याह्न भोजन का समय

(D) अध्यापक छात्र अनुपात

131. निम्नलिखित उदाहरण में किस क्षेत्र को निम्नीकृत किया गया है ? कब्रिस्तान में उसकी दबी हुई हँसी को कुछ लोगों ने देखा।

(A) भौतिक क्षेत्र

(B) संज्ञानात्मक क्षेत्र

(C) सामाजिक–भावनात्मक क्षेत्र

(D) नैतिक क्षेत्र

132. निम्नलिखित में से कौन विकास के संप्रत्यय से संदर्भित है ?

(A) मानवों के प्रारंभिक वर्षों में वजन तेजी से बढ़ता है

(B) जैसे–जैसे मस्तिष्क का विकास होता है, जटिल कार्यों को करने की योग्यता/क्षमता बढ़ती है

(C) नर की ऊँचाई, प्रायः 16 वर्ष की आयु तक बढ़ती है

(D) अनुभवजन्य अधिगम अमूर्त संप्रत्ययीकरण की ओर ले जाता है

133. जब बच्चे वस्तुओं एवं उनके उपयोगों को समझाना आरंभ करते हैं, तब उनकी आयु के विषय में सामान्य धारणा है कि वे–

(A) 6 से 7 वर्ष के हैं

(B) 8 से 9 वर्ष के हैं

(C) 10 से 11 वर्ष के हैं

(D) 11 से 12 वर्ष के हैं

134. एक अभिभावक के रूप में, आपके बच्चे के उत्तम विकास के लिए, निम्नलिखित में से कौन आपको सर्वाधिक आकर्षित करेगा ?

(A) बच्चे के प्रगति पत्र पर निर्भर होना

(B) बच्चे को उसके संपूर्ण विकास के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना

(C) अभिभावक–शिक्षक बैठकों के लिये सरकारीध्व्यावसायिक कार्य की अवहेलना ना करना

(D) अभिभावक–शिक्षक बैठकों में नियमित रूप से जाना और चर्चा से उत्पन्न निष्कर्ष पर क्रियान्वित होना

135. किसी बच्चे के नैतिक क्षेत्र का विकास किया जा सकता है, निम्नलिखित को प्रस्तावित कर–

(A) साहित्य से प्रासंगिक प्रकरणों से

(B) सामाजिक विज्ञान से प्रासंगिक प्रकरणों से

(C) सभी विषयों से प्रासंगिक प्रकरणों से

(D) एक शिक्षक की तरह स्वयं को आदर्श रूप में प्रस्तुत कर

136. संज्ञानात्मक विकास एक उदाहरण है–

(A) सतत् एवं मात्रात्मक परिवर्तन का

(B) सतत् एवं गुणात्मक परिवर्तन का

(C) असतत् एवं मात्रात्मक परिवर्तन का

(D) असतत् एवं गुणात्मक परिवर्तन का

137. कक्षा VI के विद्यार्थियों के लेखन कौशलों के विकास के लिए, निम्नलिखित में से कौन-से क्रियाकलाप सर्वाधिक उपयुक्त हैं ?

(A) विद्यार्थियों को 'दीवाली' पर एक निबन्ध लिखने के लिए कहना

(B) विद्यार्थियों को 'सभ्यता' पर उनके दृष्टिकोण को समझाने के लिए कहना

(C) विद्यार्थियों को शीर्षक 'मेरा एक दिन अंतरिक्ष में' की व्याख्या करने के लिए कहना

(D) विद्यार्थियों को 'विद्यालय का मेरा अनुभव' की व्याख्या करने के लिए कहना

138. मानव संवृद्धि के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है ?

(A) सवृद्धि विकास का एक उप–निकाय है

(B) मानव जीवन में निरन्तर संवृद्धि होती है

(C) संवृद्धि परिमाणात्मक परिवर्तनों के वर्णन तक सीमित है

(D) संवृद्धि के परिणाम अति विशिष्ट हैं

139. पद 'विलम्बन' संदर्भित है–

(A) व्यावहारिकता (B) संज्ञान

(C) नैतिकता (D) भाषा

140. बच्चे प्रारंभ से ही अपनी मातृभाषा में शब्दों के क्रम का मूल समझने में प्रवीण हो जाते हैं, जिसे कहा जाता है :

(A) अधिभाषा विज्ञान बोध

(B) अंकित करना

(C) व्यावहारिक

(D) वाक्य विन्यास

141. कब एक शिक्षक को किसी प्रसंग को पढ़ाने के लिए किलपैट्रिक द्वारा विकसित किए गए प्रक्रम को वरीयता देनी चाहिए ?

(A) विवादास्पद प्रसंगों के शिक्षण के लिए

(B) जब विद्यार्थी कर के सीख रहे है

(C) अमूर्त प्रसंगों के शिक्षण के लिए

(D) कठिन प्रसंगों के शिक्षण के लिए

142. बालकों के सामाजिक विकास हेतु शिक्षक द्वारा अपनाई गई निम्न में से कौन-सी एक नीति सहायक नहीं होगी?

(A) सामूहिक खेल आयोजित करना

(B) सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना

(C) वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित करना
(D) निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित करना

143. मानव वृद्धि की संकल्पना में शामिल हैं –
(A) केवल भौतिक वृद्धि
(B) भौतिक एवं सामाजिक वृद्धि
(C) मानवों में किसी भी प्रकार की मात्रात्मक बढ़त
(D) केवल आनुवंशिक रूप से निर्धारित वृद्धि

144. निम्न में से कौन-सा एक, बाल विकास का सिद्धान्त नहीं है ?
(A) बाल विकास उसकी आनुवंशिक बनावट पर निर्भर है
(B) विकास आनुक्रमिक रूप से होता है
(C) बाल विकास सापेक्षिक रूप से सुव्यवस्थित होता है
(D) बच्चे अपनी-अपनी गति से विकसित होते हैं

145. निम्न में से कौन-सा एक कथन सही है ?
(A) वृद्धि बाल विकास का एक भाग नहीं है
(B) बाल विकास में मात्र भौतिक और सामाजिक विकास शामिल हैं
(C) बाल विकास में भौतिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, भावात्मक एवं ज्ञानात्मक विकास शामिल हैं
(D) अंततोगत्वा बाल विकास वातावरण पर निर्भर करता है

146. बालकों में 'शारीरिक वृद्धि' से हमारा तात्पर्य है–
(A) उनके शरीर की रचना एवं कार्य में समयानुसार परिवर्तन
(B) उनके IQ स्तर में वृद्धि
(C) उनके शारीरिक भार एवं ऊँचाई में वृद्धि
(D) उनके शारीरिक भार में वृद्धि

147. प्राथमिक स्कूल के छात्र हेतु निम्न में से कौन–सा एक विकासात्मक कार्य नहीं है ?
(A) चलना सीखना
(B) लिंग–भेद को सीखना
(C) ठोस भोज्य पदार्थों को खाना
(D) भावनात्मक रूप से स्थिर होना सीखना

148. निम्न में से कौन-सा एक, एक बालक में ज्ञानात्मक विकास का कार्य नहीं है ?
(A) सूचना याद करना
(B) नई सूचना सीखना
(C) योजना बनाना एवं निर्णय लेना
(D) वाद्य-यंत्र को तीव्र गति से बजाना

149. पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियात्मक चिन्तन की अवस्था ______ के बीच दिखाई देती है।
(A) 4 से 7 वर्ष (B) 7 से 11 वर्ष
(C) 11 से 15 वर्ष (D) 15 से 18 वर्ष

150. निम्न में कौन-से वर्ष के पड़ाव से पहले बच्चे के मस्तिष्क का 85% परिमाणिक विकास हो जाता है ?
(A) 5 वर्ष (B) 6 वर्ष
(C) 7 वर्ष (D) 4 वर्ष

151. दोनों लिंगों के बराबर की आयु के साथियों के साथ नए और अधिक परिपक्व संबंध बनाने संबंधी विकासात्मक कार्य कौन–सी अवस्था से जुड़ा है ?
(A) प्रारंभिक बाल्यावस्था
(B) किशोरावस्था
(C) वयस्क अवस्था
(D) उत्तर बाल्यावस्था

152. व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु सबसे अनिवार्य पक्ष, निम्नलिखित में से क्या है ?
(A) आयु उपयुक्त वृद्धि एवं विकास
(B) स्वयं की श्रेष्ठताओं और कमियों की समझ
(C) विशेष प्रतिभा की पहचान और पोषण
(D) वांछित परिस्थितियों में प्रतिभा के उपयुक्त उपयोग की क्षमता

153. मोटरकार चलाने का कार्य निम्नांकित में से किसके अंतर्गत आता है ?
(A) भावनात्मक क्षेत्र (B) मनोयांत्रिक क्षेत्र
(C) संवेदनात्मक क्षेत्र (D) संज्ञानात्मक क्षेत्र

154. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सही है ?
(A) सृजनशील होने के लिए पर्याप्त बुद्धिमत्ता स्तर का होना आवश्यक शर्त नहीं है
(B) सृजनात्मक योग्यता के बिना व्यक्ति में उच्च बुद्धिमत्ता नहीं हो सकती है
(C) सृजनशीलता परीक्षण में, गति और परिशुद्धता का भी मापन किया जाता है
(D) अभिसारी चिंतन बुद्धि का आधार होता है

155. बालक के विकास के संदर्भ में 'परिपक्वता' का तात्पर्य किससे है ?
(A) अनुभूति
(B) बालक के विकास क्रम में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और अनुकूलन संबंधी परिवर्तन
(C) रुचि
(D) आवेग

156. बालक के भाषा विकास में 'स्वरम विज्ञान' क्या है ?
(A) व्याकरण का प्रयोग
(B) संप्रेषण
(C) नियमों की समझ
(D) वाक् ध्वनि उत्पन्न करना

157. स्कूली बालक/बालिकाओं में सामान्यतया कौन–सा मानसिक विकार उत्पन्न होता है ?
(A) ज्ञानेन्द्रिय विकार
(B) सामाजिक विकार
(C) दुश्चिंता विकार
(D) व्यवहारात्मक विकार

158. निम्नांकित में क्या नैतिक जगत की श्रेणी में आता है ?
(A) अनुभूति
(B) दायित्व
(C) सही और गलत में विभेदन
(D) पहचान करना

159. बाल्यावस्था में विकास कार्य को बढ़ावा देने वाला अनिवार्य कारक है–
(A) अनुकूलता
(B) पर्यावरण
(C) न्यूनतम बुद्धि
(D) शारीरिक विकास

160. बालक के विकास में परिपक्वता क्या है ?
(A) रुचि
(B) अनुभूति
(C) संवेग
(D) बालक के विकास में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और अनुकूलन परिवर्तन

161. बालक के भाषाई विकास में 'स्वर विज्ञान' निम्नांकित में से किससे संबंधित है ?
(A) वाक् ध्वनि का सृजन
(B) व्याकरण का प्रयोग
(C) संप्रेषण
(D) नियमों की समझ

162. निम्नांकित में से क्या कौशल विकास से साहचर्यित है ?
(A) भावनात्मक क्षेत्र (B) संज्ञानात्मक क्षेत्र
(C) मनोगतिज क्षेत्र (D) भावात्मक क्षेत्र

163. बालक के विकास में 'वृद्धि' पद से आप क्या समझते हैं ?
(A) यह एक व्युत्क्रमणीय शारीरिक परिवर्तन है
(B) यह अव्युत्क्रमणीय शारीरिक परिवर्तन है
(C) यह अव्युत्क्रमणीय संवेगात्मक परिवर्तन है
(D) यह व्युत्क्रमणीय सामाजिक परिवर्तन है

164. निम्नांकित में से कौन–सी विशेषता बालक के विकास के 'सामाजिक क्षेत्र' की श्रेणी में आती है ?

(A) मित्र के साथ साइकिल चलाना
(B) पड़ोसी बालक के साथ खिलौने को साझा करना
(C) समकक्षीय बालकों के साथ रोना
(D) मित्रों पर चिल्लाना

165. बालक द्वारा 'सत्य वचन' बोलना निम्नांकित में से किसकी श्रेणी में आता है ?
(A) शारीरिक क्षेत्र (B) संज्ञानात्मक क्षेत्र
(C) नैतिक क्षेत्र (D) सामाजिक क्षेत्र

166. बालक के विकास में वस्तुतः 'परिपक्वता' का तात्पर्य निम्नांकित में से किससे है ?
(A) यह बालक की वृद्धि और उसका विकास है जो दोनों साथ-साथ होते हैं।
(B) इसका तात्पर्य केवल संवृद्धि से है।
(C) इसका तात्पर्य केवल विकास से है।
(D) यह केवल संवेगात्मक विकास से संबंधित है।

167. बालक द्वारा 'उत्तम और बुरा' दोनों में विभेद किया जाना निम्नांकित में से किस क्षेत्र से संबंधित है ?
(A) नैतिक क्षेत्र (B) संवेगात्मक क्षेत्र
(C) संज्ञानात्मक क्षेत्र (D) सामाजिक क्षेत्र

168. सामान्यतः बालक में संज्ञानात्मक विकास, निम्नांकित में से किस वय–वर्ग में होता है ?
(A) 0 से 6 वर्ष (B) 12 से 18 वर्ष
(C) 6 से 12 वर्ष (D) 15 से 20 वर्ष

169. बालक के विकास का 'चिंतन' पक्ष, निम्नांकित में से किसके अंतर्गत आता है ?
(A) शारीरिक क्षेत्र (B) संज्ञानात्मक क्षेत्र
(C) संवेगात्मक क्षेत्र (D) सामाजिक क्षेत्र

170. चेहरे के हाव–भाव पर शरीर की अनुक्रिया, निम्नांकित में से किसके अंतर्गत् सम्मिलित होगा ?
(A) संज्ञानात्मक क्षेत्र
(B) शारीरिक क्षेत्र
(C) संप्रेषण क्षेत्र
(D) सामाजिक-संवेगात्मक क्षेत्र

171. निम्नांकित में से क्या विकासात्मक कार्य की अभिलाक्षणिक विशेषता है ?
(A) उपयुक्त आयु में मनोप्रेरक कौशल का अर्जन
(B) बालक के बढ़ने पर उनमें मूल्यों का विकास
(C) विद्यालय में अधिगम के स्तर में वृद्धि
(D) सामाजीकरण का स्तर बढ़ता है।

172. बालक की लंबाई और उसके वजन में वृद्धि निम्नांकित में से किसके अधीन आती है ?
(A) शारीरिक वृद्धि (B) संवेगात्मक वृद्धि
(C) संज्ञानात्मक वृद्धि (D) सामाजिक वृद्धि

173. अधिगम में 'परिपक्वता' की क्या भूमिका है?
(A) इससे अधिगम के लक्ष्य का निर्धारण होगा।
(B) इससे व्यवहार का अवधारण होता है।
(C) इससे स्मरण में आसानी होती है।
(D) इससे तत्परता अवधारित होती है।

174. निम्नांकित में से क्या संज्ञानात्मक प्रक्रम है?
(A) रुचि (B) ध्यान
(C) मूल्य (D) पेशी नियंत्रण

175. बालक द्वारा 'आत्म–नियंत्रण' का विकास निम्नांकित में से किसके अंतर्गत आता है?
(A) सामाजिक क्षेत्र
(B) शारीरिक क्षेत्र
(C) संज्ञानात्मक क्षेत्र
(D) सामाजिक-संवेगात्मक क्षेत्र

176. 'स्वर विज्ञान' का तात्पर्य निम्नांकित में से किससे है?
(A) आरंभिक बाल्यकाल में वाक् ध्वनि का सृजन
(B) 'स्पर्श' ज्ञानेन्द्रियों को क्षमता का सृजन
(C) बाल्यावस्था में 'घ्राण' संग्राहिता
(D) 'बालक में विकसित श्रवण' संबंधी संवेदना

177. बालक में संज्ञानात्मक विकास का आदि–संकेतक क्या है ?
(A) पेशीय नियंत्रण प्राप्त करने की क्षमता
(B) संवेगों को महसूस करने की क्षमता
(C) अधिकांश 'क्यों' वाले प्रश्नों के उत्तर देना
(D) वह परिवार में अहंकार का प्रदर्शन करता है

178. निम्नांकित में से कौन–सा कथन सही है?
(A) विकास का संबंध केवल मात्रात्मक परिवर्तन से है।
(B) वृद्धि और विकास दोनों साथ-साथ चलते हैं।
(C) वृद्धि का तात्पर्य गुणात्मक परिवर्तन से है।
(D) विकास एक जीवन पर्यन्त प्रक्रिया है।

179. शैशवावस्था की अनुमानित आयु क्या है?
(A) गर्भाधान से तीन वर्ष
(B) जन्म से 2 वर्ष तक
(C) 1 वर्ष से 4 वर्ष तक
(D) 2 वर्ष से 5 वर्ष तक

180. निम्नांकित को पढ़िए–
a. बालक दैहिक स्थायित्व सीख रहा है।
b. बालक चीजों व्यक्तियों और घटनाओं की ओर ध्यान देना सीख रहा है।
c. बालक अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं की नकल कर सकता है। तो उपर्युक्त के आधार पर बालक विकास के किस चरण में है?
(A) शैशवावस्था
(B) आरंभिक बाल्यकाल
(C) परवर्ती बाल्यकाल
(D) किशोरावस्था

181. विकास की किस अवस्था में व्यक्तियों में नागरिक अभिक्षमता के लिए अपेक्षित व आवश्यक बुद्धि–कौशल और अवधारणाएँ विकसित होती हैं?
(A) बाल्यावस्था (B) प्रौढ़ावस्था
(C) मध्यबाल्यकाल (D) किशोरावस्था

182. सही कथन पहचानिए–
(A) समंजन का तात्पर्य सुगम अवशोषण से है।
(B) आत्मसातीकरण का तात्पर्य चिंतन प्रक्रिया के पल्लवन से है।
(C) समंजन और आत्मसातीकरण दोनों एक समान हैं।
(D) साम्यता का तात्पर्य संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया से है।

183. निम्नांकित में से किस आयु समूह के बालकों में सही या गलत का भाव प्रबल होता है?
(A) 5 वर्ष से 8 वर्ष
(B) 9 से 11 वर्ष
(C) 12 से 14 वर्ष
(D) 14 वर्ष के बाद की आयु

184. बालकों में आत्म सम्मान और आत्म–भावना का प्रबल भाव विकसित करने के लिए आध्यापक को क्या नहीं करना चाहिए
(A) बालकों को अनिवार्यतः स्वतंत्र रूप से अपना कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
(B) बालकों में पर्याप्त सुरक्षा का भाव विकसित करते हुए उन्हें प्रेस और स्नेह दिया जाना चाहिए।
(C) दैनिक कार्य में बालकों की स्वतंत्रता अनिवार्यतः प्रतिबंधित की जानी चाहिए।
(D) बालक में व्यक्तिपरकता के भाव के प्रति सम्यक सम्मान दर्शाया जाना चाहिए।

185. निम्नांकित में से क्या किसी विशेष प्रकार के संवेग की विशेषता नहीं है?

(A) इसका साहचर्य कतिपय मूलभूत मूलप्रवृत्ति से होता है।
(B) इसमें भावनाओं की प्रबलता प्रदर्शित होती है।
(C) यह विशिष्ट दैहिक क्रियात्मक परिवर्तनों से स्वतंत्र होता है।
(D) यह प्रत्यक्षण के फलस्वरूप उत्पन्न होती है।

186. निम्नांकित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
a. जैविक दृष्टि से जीवन जन्म के समय आरम्भ होता है।
b. विधितः जीवन का शुभारंभ गर्भाधान के समय होता है।
c. जैविक दृष्टि से जीवन गर्भाधान के समय आरंभ होता है।
d. विधितः जीवन का शुभारंभ जन्म के समय से होता है।
(A) a और b (B) केवल a
(C) c और d (D) केवल b

187. सृजनशीलता के बारे में निम्नांकित में से क्या गलत है?
(A) सृजनात्मक चिंतन संवृत्त चिंतन नहीं हो सकता है।
(B) सृजन क्षमता सार्वभौमिक नहीं होती है।
(C) सृजनात्मक अभिव्यक्ति हर्ष और संतोष का स्रोत है।
(D) सृजनात्मक योग्यताएं पोषित और पल्लवित की जा सकती हैं।

188. गरिमा नामक छात्रा अन्य व्यक्तियों की नकल करने लगती है और प्रतिवर्त क्रियाओं से लेकर जानबूझकर किए जाने वाले कृत्य तक क्रियाएँ और संचलन को स्मरण रखती है, तो बताएँ कि पियाजे के विकास–चरण के अनुसार वह संज्ञानात्मक विकास के किस चरण में हैं?
(A) संवेदी प्रेरक
(B) पूर्व संक्रियात्मक
(C) मूर्त संक्रियात्मक
(D) औपचारिक संक्रियात्मक

उत्तरमाला

1. (B+C) **2.** (B+D) **3.** (C) **4.** (A+B+C+D)
5. (B) **6.** (A) **7.** (C) **8.** (B) **9.** (C)
10. (B) **11.** (C) **12.** (C) **13.** (C) **14.** (C)
15. (B) **16.** (B) **17.** (C) **18.** (C) **19.** (C)
20. (B) **21.** (C) **22.** (C) **23.** (B) **24.** (B)
25. (C) **26.** (B) **27.** (D) **28.** (A) **29.** (C)
30. (D) **31.** (B) **32.** (A) **33.** (B) **34.** (B)
35. (D) **36.** (A) **37.** (D) **38.** (B) **39.** (A)
40. (A) **41.** (C) **42.** (D) **43.** (C) **44.** (B)
45. (B) **46.** (B) **47.** (D) **48.** (A) **49.** (B)
50. (A) **51.** (C) **52.** (C) **53.** (A) **54.** (B)
55. (A) **56.** (D) **57.** (B) **58.** (B) **59.** (C)
60. (A) **61.** (B) **62.** (D) **63.** (B) **64.** (C)
65. (B) **66.** (B) **67.** (D) **68.** (A) **69.** (C)
70. (D) **71.** (A) **72.** (C) **73.** (D) **74.** (A)
75. (C) **76.** (C) **77.** (C) **78.** (C) **79.** (D)
80. (A) **81.** (B) **82.** (A) **83.** (C) **84.** (C)
85. (B) **86.** (C) **87.** (B) **88.** (B) **89.** (A)
90. (B) **91.** (B) **92.** (B) **93.** (A) **94.** (A)
95. (D) **96.** (A) **97.** (C) **98.** (C) **99.** (C)
100. (C) **101.** (C) **102.** (C) **103.** (C) **104.** (B)
105. (A) **106.** (C) **107.** (C) **108.** (B) **109.** (C)
110. (C) **111.** (A) **112.** (B) **113.** (B) **114.** (B)
115. (B) **116.** (C) **117.** (C) **118.** (B) **119.** (C)
120. (B) **121.** (A) **122.** (D) **123.** (B) **124.** (D)
125. (C) **126.** (A) **127.** (A) **128.** (D) **129.** (B)
130. (C) **131.** (D) **132.** (B) **133.** (B) **134.** (D)
135. (D) **136.** (B) **137.** (D) **138.** (B) **139.** (C)
140. (D) **141.** (B) **142.** (D) **143.** (B) **144.** (A)
145. (C) **146.** (A) **147.** (C) **148.** (D) **149.** (B)
150. (B) **151.** (B) **152.** (D) **153.** (B) **154.** (A)
155. (B) **156.** (D) **157.** (C) **158.** (C) **159.** (B)
160. (D) **161.** (A) **162.** (C) **163.** (B) **164.** (B)
165. (C) **166.** (A) **167.** (A) **168.** (C) **169.** (B)
170. (D) **171.** (B) **172.** (A) **173.** (D) **174.** (B)
175. (D) **176.** (A) **177.** (C) **178.** (B) **179.** (B)
180. (B) **181.** (D) **182.** (D) **183.** (B) **184.** (C)
185. (C) **186.** (C) **187.** (B) **188.** (A)

❑❑